राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 आंबेडकर पर अमित शाह के बयान के खिलाफ देश भर में आंदोलन......

प्रियंका गांधी ने छिपाई अपनी संपी, हाई कोर्ट पहुंचा वायनाड उप.... 12

वर्ष : 15 | अंक : 246 | नई दिल्ली, रविवार, 22 दिसंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

नौसेना को मिले अत्याधुनिक हथियारों से लैस सूरत और नीलगिरी जहाज

● पारंपरिक और अपारंपरिक खतरों का ब्लू वाटर में मुकाबला करने में सक्षम हैं दोनों जहाज

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्लीदेश के आत्मनिर्भर होने की यात्रा में एक और ऐतिहासिक दिन जुड़ गया, जब भारतीय नौसेना को एक साथ दो युद्धपोत सौंपे गए। इनमें एक विध्वंसक सूरत और दूसरा फ्रिगेट नीलगिरी हैं। इन जहाजों को भारतीय नौसेना के युद्धपोत डिजाइन ब्यूरो ने स्वदेशी रूप से डिजाइन और मझगांव डॉक लिमिटेड ने निर्मित किया है। दो अत्याधुनिक युद्धपोतों के एक साथ समुद्री बेड़े में शामिल होने से भारतीय नौसेना की परिचालन और युद्ध क्षमता बढ़ेगी। नौसेना को मिला जहाज सूरत प्रोजेक्ट 15बी स्टील्थ गाइडेड मिसाइल विध्वंसक का चौथा और अंतिम है। इससे पहले पिछले तीन वर्षों में इसी प्रोजेक्ट के तीन जहाजों विशाखापत्तनम, मोरमुगाओ और इम्फाल को नौसेना के बेड़े में शामिल किया जा चुका है। सूरत की डिलीवरी भारतीय नौसेना की स्वदेशी

विध्वंसक निर्माण परियोजना का समापन है। इस परियोजना की शुरूआत 2021 में हुई थी। कुल 7,400 टन वजन और 164 मीटर की लंबाई वाला निर्देशित मिसाइल विध्वंसक होने के नाते आईएनएस सूरत शक्तिशाली और बहुमुखी प्लेटफॉर्म है, जो सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों, जहाज रोधी मिसाइलों और टॉरपीडो सहित अत्याधुनिक हथियारों और सेंसर से लैस है। इसने अपने समुद्री परीक्षणों के दौरान 30 नॉट्स (56 किमी/घंटा) से अधिक की गति प्राप्त की है। यह स्वदेशी रूप से विकसित भारतीय नौसेना का पहला एआई सक्षम युद्धपोत है, जो इसकी परिचालन दक्षता को कई गुना बढ़ाएगा। नौसेना को सौंपा गया फ्रिगेट नीलगिरि प्रोजेक्ट 17ए स्टील्थ का पहला जहाज है। इस योजना के सात जहाज एमडीएल, मुंबई और जीआरएसई, कोलकाता में बनाए जा रहे हैं। ये बहु-मिशन फ्रिगेट भारत के समुद्री हितों के क्षेत्र में पारंपरिक और अपारंपरिक दोनों तरह के खतरों से ब्लू वाटर में मुकाबला करने में सक्षम हैं।

75 फीसदी स्वदेशी सामग्री लगाई गई : नौसेना को 2047 तक आत्मनिर्भर बनाने को ध्यान में रखते हुए इन जहाजों में 75 फीसदी स्वदेशी सामग्री लगाई गई है। इन परियोजनाओं ने देश में आत्मनिर्भरता, आर्थिक विकास, रोजगार को बढ़ावा दिया है। इन युद्धपोतों में लगे प्रमुख हथियार और सेंसर स्वदेशी कंपनियों बीएपीएल, एलएंडटी, एमटीपीएफ, बीईएल, बीएचईएल, महिंद्रा आदि से हासिल किए गए हैं। इस वर्ग के शेष छह जहाज एमडीएल, मुंबई और जीआरएसई, कोलकाता में निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं। इन जहाजों के 2025 और 2026 में भारतीय नौसेना को सौंपे जाने की उम्मीद है।

मौसम

अधिकतम तापमान 32.0°C

न्यूनतम तापमान 23.0°C

बाजार

सोना 80,405

चांदी 1,1000

सेंसेक्स 80,220

निफ्टी 24,472

संक्षिप्त खबरें

हरियाणा: चौटाला का पार्थिव शरीर तेजा खेड़ा फार्महाउस में रखा गया, तीन बजे होगा अंतिम संस्कार

चंडीगढ़। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला का पार्थिव शरीर सिरसा में तेजा खेड़ा स्थित उनके परिवार के फार्महाउस में शनिवार को लोगों के अंतिम दर्शन के लिए रखा गया। इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) के एक नेता ने यह जानकारी दी। इनेलो नेता ने बताया कि तेजा खेड़ा गांव में अपराह्न तीन बजे राजकीय सम्मान के साथ चौटाला का अंतिम संस्कार किया जाएगा। चौटाला का शुक्रवार को गुरुग्राम में निधन हो गया था। वह 89 वर्ष के थे। इनेलो के एक प्रवक्ता ने शुक्रवार को बताया था कि चौटाला की तबीयत बिगड़ने पर उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां बाद में उनका निधन हो गया। चौटाला के अंतिम संस्कार में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ समेत कई गणमान्य लोग शामिल होंगे। ओम प्रकाश चौटाला के छोटे बेटे अभय सिंह चौटाला (इनेलो नेता) एवं बड़े बेटे अजय सिंह चौटाला (जननायक जनता पार्टी प्रमुख) और पूर्व उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला सहित परिवार के अन्य सदस्य तेजा खेड़ा पहुंचे। कांग्रेस नेता कुमारी शैलजा एवं रणदीप सिंह सुरजेवाला भी पांच बार मुख्यमंत्री रहे चौटाला को श्रद्धांजलि देने उनके फार्महाउस पहुंचे। गांव में भी बड़ी संख्या में लोग एकत्र हुए हैं। हरियाणा सरकार ने शुक्रवार को तीन दिन का राजकीय शोक घोषित किया। इसके अलावा शनिवार को सभी कार्यालयों में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी कुवैत की दो दिवसीय यात्रा पर रवाना भविष्य की साझेदारी का खाका तैयार होने की उम्मीद

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कुवैत की दो दिवसीय यात्रा पर रवाना होने से पहले शनिवार को कहा कि पश्चिम एशिया की शांति, सुरक्षा और स्थिरता में भारत और खाड़ी देश का साझा हित है। यह पिछले 43 साल में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की कुवैत की पहली यात्रा है। मोदी ऐसे समय में कुवैत की यात्रा कर रहे हैं जब दो सप्ताह पहले सीरिया में राष्ट्रपति बशर अल-असद के शासन का पतन हो गया और गाजा में इजराइल एवं हमास के बीच संभावित युद्ध विराम समझौते के संकेत नजर आ रहे हैं। इससे पहले, भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 1981 में इस खाड़ी देश की यात्रा की थी। मोदी ने यात्रा पर रवाना होने से पहले दिए गए एक बयान में कहा कि कुवैत के शीर्ष नेतृत्व के साथ उनकी बातचीत भारत और कुवैत के बीच भविष्य की साझेदारी का खाका तैयार करने का अवसर देगी। उन्होंने कहा, हम कुवैत के साथ ऐतिहासिक संबंधों को बहुत महत्व देते हैं, जो पीढ़ियों से कायम हैं। हम न केवल व्यापार और ऊर्जा के क्षेत्रों में मजबूत साझेदार हैं, बल्कि पश्चिम एशिया में शांति, सुरक्षा और स्थिरता में भी हमारा साझा हित है। मोदी कुवैत के अमीर शेख मेशाल अल-अहमद अल-जबर अल-सबा के निमंत्रण पर कुवैत जा रहे हैं। मोदी ने कहा, मुझे विश्वास है कि यह यात्रा भारत और कुवैत के लोगों के विशेष आपसी संबंधों और मित्रता के बंधन को और मजबूत

करेगी। मोदी ने कहा कि वह कुवैत के अमीर, युवराज (क्राउन प्रिंस) और प्रधानमंत्री के साथ अपनी बैठकों के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने कहा, यह हमारे लोगों और क्षेत्र के लाभ के लिए भविष्य की साझेदारी का खाका तैयार करने का एक अवसर होगा। उन्होंने कहा, मैं कुवैत में भारतीय प्रवासियों से मिलने के लिए उत्सुक हूं, जिन्होंने दोनों देशों के बीच मित्रता के बंधन को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मोदी कुवैत के शीर्ष नेतृत्व के साथ वार्ता करेंगे, भारतीय श्रमिक शिविर का दौरा करेंगे, भारतीय समुदाय को संबोधित करेंगे और गल्फ कप फुटबॉल टूनामेंट के उद्घाटन समारोह में शामिल होंगे। प्रधानमंत्री ने कहा, मैं खाड़ी क्षेत्र के प्रमुख खेल आयोजन अरेबियन गल्फ कप के उद्घाटन समारोह में मुझे आमंत्रित कर विशेष सम्मान देने के लिए कुवैत के नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। उन्होंने कहा, मैं एथलेटिक उत्कृष्टता और क्षेत्रीय एकता के इस उत्सव का हिस्सा बनने के लिए उत्सुक हूं। विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को कहा था कि प्रधानमंत्री मोदी की कुवैत की यात्रा के दौरान भारत और खाड़ी देश के बीच रक्षा और व्यापार समेत कई प्रमुख क्षेत्रों में संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किए जाने की उम्मीद है। अधिकारियों ने कहा कि कुवैत के साथ द्विपक्षीय निवेश संधि और रक्षा सहयोग समझौते पर चर्चा जारी है। विदेश मंत्रालय में सचिव (प्रवासी भारतीय मामले) अरुण कुमार चटर्जी ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान कुछ द्विपक्षीय दस्तावेजों पर हस्ताक्षर होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री की ऐतिहासिक यात्रा से भारत-कुवैत द्विपक्षीय संबंधों में एक नया अध्याय शुरू होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा, यह न केवल मौजूदा क्षेत्रों में साझेदारी को मजबूत करेगा, बल्कि भविष्य में सहयोग के नए रास्ते भी खोलेगा, हमारे साझा मूल्यों को सुदृढ़ करेगा और भविष्य के लिए अधिक मजबूत साझेदारी का निर्माण करेगा। भारत, कुवैत के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में से एक है और भारतीय समुदाय कुवैत में सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है। कुवैत भी भारत के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में से एक है और दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार वित्त वर्ष 2023-24 में 10.47 अरब अमेरिकी डॉलर रहा। कुवैत, भारत का छठा सबसे बड़ा कच्चा तेल आपूर्तिकर्ता है, जो देश की ऊर्जा आवश्यकताओं को तीन प्रतिशत तक पूरा करता है।

मोदी ने जीता दिल, कुवैत में पूर्व आईएफएस अधिकारी से करेंगे मुलाकात, नातिन ने किया था अनुरोध

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को सोशल मीडिया पर लोगों का दिल जीत लिया। उन्होंने कुवैत में रिटायर्ड भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) अधिकारी से मिलने का वादा किया। पूर्व आईएफएस अधिकारी की नातिन श्रेया जुनेजा ने पीएम मोदी से अनुरोध किया था कि वह कुवैत यात्रा के दौरान उनके 101 वर्षीय दादा से मुलाकात करें। हालांकि श्रेया को सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलने की पूरी उम्मीद नहीं थी, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी, [जो विदेश यात्राओं के दौरान भारतीय प्रवासियों के मुलाकात करना पसंद करते हैं], से मिले जवाब ने उन्हें बेहद खुश कर दिया। जुनेजा ने एक्स पर कहा, ह्लआपसे प्रतिक्रिया पाना हमारे लिए सम्मान की बात है, सर! आपने एक बार फिर हमारा दिल जीत लिया है। नानाजी मंगल सैन हांडा बहुत खुश हैं और उनकी मुस्कान हमारे लिए बहुत मायने रखती है। हम इस दयालु व्यवहार के लिए बहुत आभारी हैं। पीएम के इस कदम ने न केवल जुनेजा बल्कि कई अन्य सोशल मीडिया यूजर्स को भी प्रभावित किया। इससे पहले, हांडा से मिलने के उनके अनुरोध को स्वीकार करते हुए, पीएम मोदी ने एक्स पर संदेश दिया, बिल्कुल! मैं आज कुवैत में मंगल सैन हांडा जी से मिलने के लिए उत्सुक हूं। शनिवार से शुरू होने वाली प्रधानमंत्री मोदी की दो दिवसीय कुवैत यात्रा 43 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की खाड़ी देश की पहली यात्रा है। कुवैत के अमीर शेख मेशल अल-अहमद अल-जबर अल-सबाह के निमंत्रण पर की हो रही यह यात्रा दोनों देशों के बीच गहरे और बढ़ते संबंधों को रेखांकित करती है। विदेश मंत्रालय ने प्रधानमंत्री मोदी की ऐतिहासिक यात्रा से पहले कहा, भारतीय समुदाय कुवैत में सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है। यह यात्रा भारत और कुवैत के बीच बहुआयामी संबंधों को और मजबूत करने का अवसर प्रदान करेगी।

वाराणसी में सपा का जोरदार प्रदर्शन, गृह मंत्री अमित शाह के बयान पर मचा बवाल

वाराणसी, एजेंसी

वाराणसी। समाजवादी पार्टी (सपा) के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने शनिवार को शास्त्री घाट पर गृह मंत्री अमित शाह के बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर पर दिए गए बयान के खिलाफ जमकर विरोध प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने अमित शाह के बयान को संविधान और बाबा साहब का अपमान बताते हुए कड़ी निंदा की। सैकड़ों की संख्या में जुटे सपा कार्यकर्ताओं ने शास्त्री घाट पर अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए जुलूस निकाला, जो अंबेडकर पार्क पर जाकर समाप्त हुआ। प्रदर्शनकारियों ने बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए विरोध प्रदर्शन को अपना समर्थन दिया। प्रदर्शन के दौरान सपा कार्यकर्ताओं ने अमित शाह के पोस्टर पर स्याही पोतकर अपना आक्रोश जाहिर किया। साथ ही, नारेबाजी करते हुए गृह मंत्री के इस्तीफे की मांग की। कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि अमित शाह के बयान से देश के संविधान और बाबा साहब के योगदान का अपमान हुआ है। सपा के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में गृह मंत्री अमित शाह के बयान को संविधान विरोधी बताते हुए तत्काल उनके इस्तीफे की मांग की गई। अंबेडकर पार्क पर आयोजित सभा में सपा नेताओं ने बाबा साहब के योगदान को याद करते हुए गृह मंत्री पर तीखा हमला किया। उन्होंने कहा कि इस तरह के बयान समाज में विभाजन पैदा करने वाले हैं और इसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सपा कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी कि अगर गृह मंत्री अमित शाह अपने बयान पर माफी नहीं मांगते, तो यह आंदोलन और तेज होगा। उन्होंने कहा कि पार्टी संविधान की रक्षा और बाबा साहब के सम्मान के लिए हर स्तर पर संघर्ष करने को तैयार है। इस प्रदर्शन ने वाराणसी में बड़ी संख्या में लोगों का ध्यान खींचा। सपा के इस आंदोलन ने राजनीतिक माहौल को गरमा दिया है और आने वाले दिनों में इस मुद्दे पर और अधिक विवाद होने की संभावना है।

किसानों के साथ संवाद की जरूरत: धनखड़

● अन्नदाता आर्थिक समृद्धि का आधार है। सामाजिक समरसता का सूत्रधार है।अन्नदाता का कल्याण ही देश प्रगति का शाश्वत रास्ता है और यही देश हित में भी

नई दिल्ली, एजेंसी

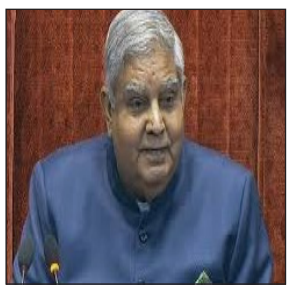

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को कहा कि किसानों के साथ संवाद करने और संवेदना जताने की आवश्यकता है। श्री धनखड़ हरियाणा के सिरसा में राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला के अंतिम संस्कार कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने कहा, आज आवश्यकता है संकल्पित होने

की–अन्नदाता से संबंधित प्रकरण संवाद और संवेदना से निर्णीत हों। अन्नदाता आर्थिक समृद्धि का आधार है। सामाजिक समरसता का सूत्रधार है।अन्नदाता का कल्याण ही देश प्रगति का शाश्वत रास्ता है और यही देश हित में भी। उन्होंने कहा कि चौधरी ओम प्रकाश चौटाला हरियाणा प्रदेश के पाँच बार मुख्यमंत्री और सात बार विधायक रहे। लेकिन उनका व्यक्तित्व इनसे परिभाषित नहीं होता। जीवन पर्यंत उन्होंने अपने को किसान कल्याण और ग्रामीण विकास के लिए समर्पित किया। उपराष्ट्रपति ने कहा कि ओम प्रकाश चौटाला वर्ष 1989 के बड़े राजनीतिक बदलाव के प्रमुख सूत्रधारों में से थे। किसान कर्ज.मुक्ति उनका ध्येय था। जनता दल सरकार का किसान कर्ज.माफी कदम उनकी पहल था। निस्संदेह देश विकास और विकसित भारत का लक्ष्य ग्रामीण और किसान हित साधने से ही संभव है। उपराष्ट्रपति एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती डॉ सुदेश धनखड़ दिवंगत नेता के निवास तेजा खेड़ा पहुंचे। चौटाला परिवार से श्री धनखड़ के दशकों पुराने आत्मीय संबंध रहे हैं। उन्होंने शोकाकुल परिवारजनों के प्रति अपनी संवेदना भी व्यक्त की। इससे पहले श्री ओम प्रकाश चौटाला के निधन पर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए श्री धनखड़ ने कहा कि एक दूरदर्शी राजनेता के रूप में उन्होंने सदैव ग्रामीण विकास एवं कृषि समृद्धि को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। हरियाणा के समग्र विकास तथा भारतीय लोकतंत्र को सशक्त बनाने में उनका अविस्मरणीय योगदान सदैव प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

संसद फैशन और बॉडी दिखाने की जगह नहीं : शाहनवाज हुसैन

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। भाजपा नेता शाहनवाज हुसैन ने लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी पर कटाक्ष करते हुए कहा है कि विपक्ष के नेता के तौर पर राहुल गांधी सभी मयार्दाओं का उल्लंघन कर रहे हैं। जिम जाना और अच्छी बॉडी बनाना अच्छी बात है। लेकिन, संसद में मसल पावर दिखाने की जरूरत नहीं है। हर दिन नई टी-शर्ट पहनकर संसद में फैशन परेड करने की जरूरत नहीं है। अगर आपके पास मजबूत तर्क है तो संसद में चर्चा करें और बहस करें। इसके बजाय, कांग्रेस के सांसद हर दिन संसद को बाधित करते हैं। कांग्रेस सांसद नया-नया बैग लेकर आ जाते हैं। कोई नीली टी-शर्ट पहनकर आता है। क्या यह संसद है या फैशन शो। कांग्रेस के सांसदों का व्यवहार अस्वीकार्य है। वे संसद को चलने नहीं देते। कांग्रेस ने बाबा साहब भीमराव आंबेडकर का इतना अपमान किया है कि अगर वे सात जन्म भी माफी मांग लें, तो भी उनके पाप क्षमा नहीं किए जा सकेंगे। बाबा साहेब का अपमान करने वाली कांग्रेस आज भाजपा पर आरोप लगा रही है। देश कभी भी कांग्रेस को माफ नहीं करेगा। यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के प्रदर्शन करने के ऐलान पर भाजपा नेता ने कहा है कि कांग्रेस को माफी मांगनी चाहिए, क्योंकि कांग्रेस पार्टी ने ही बाबा साहब आंबेडकर का अपमान किया था। चाहे नेहरू हों, इंदिरा गांधी हों या राजीव गांधी, कांग्रेस के किसी भी प्रधानमंत्री ने बाबा साहेब को सम्मान नहीं दिया। अगर किसी ने बाबा साहेब को सम्मान देने और ह्लपंच तीर्थह्व की स्थापना करने का काम किया है, तो वह नरेंद्र मोदी हैं। इसलिए, बाबा साहेब का सच्चा सम्मान करने वाली सभी पार्टियों को एकजुट होकर कांग्रेस पार्टी से माफी की मांग करनी चाहिए। एक सवाल के जवाब में भाजपा नेता ने कहा है कि अरविंद केजरीवाल को अहसास हो गया है कि वह चुनाव हारने वाले हैं, इसलिए वह अभी से हार के बहाने तलाश रहे हैं। वह पूर्वांचलियों को रोहिंग्या बता रहे हैं। हालांकि, पूर्वांचली पूरी तरह से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ हैं। पूर्वांचल के नाम से जाना जाने वाला क्षेत्र- चाहे वह उत्तर प्रदेश हो या बिहार, पहले से ही यहां एनडीए की सरकार है।

व्यव्हार राहुल गांधी के ऊपर जितने भी आरोप हैं, उन्हें कानून के हिसाब से जवाब देना होगा..............

राहुल गांधी का व्यवहार अशोभनीय, गुंडागर्दी का माहौल बनाने की कोशिश की : गिरिराज

पटना, एजेंसी

पटना। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह ने शनिवार को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की कड़ी निंदा की। उन्होंने संसद में हुई धक्का मुक्की को लेकर कहा कि राहुल गांधी का व्यवहार अशोभनीय है। उन्हें इस तरह का व्यवहार अपने बुजुर्ग सांसद के साथ नहीं करना चाहिए था। गिरिराज सिंह ने कहा, अब पुलिस भी इन मामलों की गहनता से जांच करेगी। संसद में हम कभी यह नहीं देखते कि एक दूसरे से धक्का-मुक्की हो। धरने पर बैठने

का अधिकार हर किसी को है। लेकिन, जिस तरह से राहुल गांधी ने बुजुर्ग सांसदों को इस कदर धक्का दिया कि उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा, वो निंदनीय है। उन्होंने कहा, राहुल गांधी का आचरण न केवल अशोभनीय था, बल्कि पूरी तरह से अराजकता से भरा हुआ था। उन्होंने एक गुंडागर्दी का माहौल बनाने की कोशिश की। जब कोई कानून को अपने हाथ में लेता है, तो चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, याद रखें कानून से बड़ा कोई नहीं होता। यही कारण है कि राहुल गांधी के ऊपर जितने भी आरोप हैं, उन्हें कानून के हिसाब से जवाब देना होगा। उन्होंने आगे गृह मंत्री का जिक्र करते हुए कहा कि राहुल गांधी ने अमित शाह के वीडियो के 12 सेकंड काटकर उस पूरे वीडियो का भावार्थ बदलने की कोशिश की। यह राजनीति की कुटिल चाल है, जैसा कि हम कहते हैं, ह्लकाठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती।ह्व नेहरू खानदान और कांग्रेस पार्टी ने पहले भी बाबासाहेब अंबेडकर का अपमान किया था। उनका अपमान सिर्फ भारत रत्न देने तक सीमित नहीं था। यही नहीं, नेहरू जी ने बाबा साहेब अंबेडकर को एक पत्र भी लिखा था, जिसमें उन्होंने उन्हें देश विरोधी बताया था। उन्होंने कहा, कांग्रेस ने बाबा साहेब को चुनाव में हराने की पूरी कोशिश की थी। अब, वोट बैंक की राजनीति के लिए, कांग्रेस पार्टी बाबा साहब का नाम लेकर जनता को गुमराह करना चाहती है। मैं यह कहना चाहता हूं कि मैं गांव-गांव जाकर इन सब करतूतों को दिखाऊंगा, बताऊंगा, और जो भी पाप कांग्रेस ने बाबा साहेब के साथ किया है, उसमें जलाकर कांग्रेस पार्टी को खाक कर दूंगा। उन्होंने कहा, हमारे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार हमारे नेता हैं, और उन्होंने कोई गलत काम नहीं किया। यह स्वाभाविक है कि हम 2025 में बिहार में एनडीए की सरकार बनाएंगे। हम किसी भी समीकरण की राजनीति नहीं करेंगे, जैसे कि लालू यादव करते हैं। जो लोग मुस्लिम वोट के लिए तुष्टिकरण करते हैं, भारतीय जनता पार्टी ऐसी राजनीति नहीं करती। हम संतुष्टिकरण की राजनीति करते हैं, और बिहार, यूपी, उत्तराखंड और झारखंड के जो पूर्वांचली हैं, उनके लिए हम काम करेंगे। हम हिंदू समाज के साथ खड़े हैं।

राम मंदिर देखने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ी, ताजमहल को पीछे छोड़ा

अयोध्या, एजेंसी

अयोध्या। अयोध्या में 22 जनवरी 2024 को रामलला मंदिर में विराजमान हुए थे। राम मंदिर निर्माण के बाद अयोध्या में पर्यटन बड़ा है। आंकड़ों के मुताबिक हर दिन एक लाख से ज्यादा भक्त दर्शन करने आते हैं। शायद यही वजह है कि 9 महीने में देश के कई महत्वपूर्ण स्थलों जिसमें आगरा यानी ताज महल भी शामिल है। पर्यटन विभाग के आंकड़ों की के मुताबिक जनवरी से सितंबर 2024 के बीच यूपी में 47.61 करोड़ पर्यटक आए हैं। इनमें 47.47 करोड़ घरेलू और 14.11 लाख विदेशी पर्यटकों हैं। पर्यटन विभाग के आंकड़ों के मुताबिक सर्वाधिक 1.84.026 विदेशी पर्यटक ने वाराणसी का भ्रमण किया है जबकि 13,55,87,370 घरेलू पर्यटक जिसमें श्रद्धालु भी शामिल हैं अयोध्या आए। वहीं आगरा में 9 महीने के अंदर 12.51 करोड़ लोग आए जिसमें 11.59 करोड़ भारतीय और 9.5 लाख विदेशी पर्यटक थे। पर्यटन विभाग के डिप्टी डायरेक्टर ने बताया कि अयोध्या पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से विकास कर रहा है। यहां पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है। अयोध्या में प्रतिदिन एक लाख पर्यटक आ रहे हैं, लेकिन खास पर्व और त्योहार पर यह संख्या लाखों में पहुंच जाती है।

संक्षिप्त समाचार

बिलोंदी पुल से फिडोगी-धनोल्टी तक पांच किमी सड़क मंजूर

थत्यूड़ (टिहरी), एजेंसी। धनोल्टी विधायक प्रीतम सिंह पंवार ने बताया कि सरकार ने बिलोंदी पुल से फिडोगी-धनोल्टी तक पांच किमी सड़क निर्माण के लिए हरी झंडी दे दी है। 369.94 लाख से सड़क का निर्माण किया जाएगा। सड़क निर्माण के लिए वित्तीय स्वीकृति मिलने पर क्षेत्र के लोग उत्साहित हैं। सड़क के निर्माण से दसज्यूला और पालीगाड पट्टी के लोगों को आवागमन की सुविधा मिलेगी। उन्होंने बताया कि लोनिवि के अपर सचिव धीराज सिंह गर्ब्याल की ओर से बीते 16 दिसंबर को इस संबंध में शासनादेश जारी कर दिया गया है। बिलोंदी पुल से फिडोगी-धनोल्टी तक सड़क निर्माण और डामरीकरण कार्य पूरा होने से दसज्यूला और पालीगाड पट्टी के गांवों के लोगों को आवागमन की सुविधा मिलेगी। क्षेत्र के लोग लंबे समय से सड़क निर्माण की मांग कर रहे थे। सड़क निर्माण के बाद क्षेत्र के लोगों को धनोल्टी तहसील, ब्लॉक मुख्यालय थत्यूड़ के साथ जिला मुख्यालय नई टिहरी पहुंचने के लिए कम दूरी तय करनी पड़ेगी। जिससे उनका समय और धन दोनों की बचत होगी। विधायक ने लोक निर्माण विभाग थत्यूड़ के अधिकारियों से शीघ्र सड़क निर्माण के लिए टेंडर की प्रक्रिया कर कार्य शुरू करने को कहा है। पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य सुरेश चौहान, सोबत रावत, वीरेंद्र चौहान, जयप्रकाश नौटियाल, व्यापार मंडल अध्यक्ष अकबीर पंवार, कृपाल रावत, सुनील भट्ट ने सड़क निर्माण की स्वीकृति मिलने पर खुशी जताते हुए प्रदेश सरकार और विधायक पंवार का आभार जताया है।

नोडल अधिकारी निर्वाचन आयोग की गाइडलाइन का करें अध्ययन : डीएम

नई टिहरी, एजेंसी। डीएम मयूर दीक्षित ने निकाय चुनाव की तैयारियों को लेकर नोडल अधिकारियों की बैठक ली। चुनाव के सफल संचालन के लिए निर्वाचन आयोग की गाइडलाइन का अच्छे से अध्ययन करने को कहा। नगर पालिकाओं और नगर पंचायतों के ईओ को अपने-अपने सभी बूथों को चेक कर संबंधित एसडीएम को रिपोर्ट सौंपने के निर्देश दिए। दिव्यांग, बुजुर्ग, गर्भवती महिला मतदाताओं को केंद्रों तक पहुंचाने के लिए व्हील चेयर और स्वयंसेवकों की व्यवस्था करने को कहा। उन्होंने जिलास्तर पर एक पिंक बूथ बनाने, सहायक व्यय प्रेक्षक नियुक्त करने, संवेदनशील, अति संवदेनशील मतदान केंद्रों की सूची का अंतिम निरीक्षण करने, जोनल और सेक्टर मजिस्ट्रेट की तैनाती, निर्वाचन सामग्री की दरें, सूची के निर्देश दिए। इस मौके पर सीडीओ डॉ. अभिषेक त्रिपाठी, एएसपी जेआर जोशी, सीएमओ डॉ. श्याम विजय, डीडीओ मो असलम, पीडी डीआरडीए पीएस चौहान, एसई लोनिवि मनोज बिष्ट, एडीईओ निर्वाचन विजय तिवारी, एडीईओ पंचस्थानीय कंवरजीत कौर आदि मौजूद थे।

दावेदारों के मन को टटोलने में जुटी भाजपा-कांग्रेस

श्रीनगर, एजेंसी। नगर निगम चुनाव को लेकर सरगर्मियां तेज हो चुकी हैं। भाजपा, कांग्रेस की ओर से नगर क्षेत्र में मेयर व पार्षद पद के दावेदारों से राय ली जा रही है। इस दौरान दोनों पार्टियां निकाय चुनाव को लेकर सक्रिय रहने व चुनाव प्रचार तेज करने को लेकर कार्यकर्ताओं को निर्देशित कर रही है। बृहस्पतिवार को भारतीय जनता पार्टी के मेयर प्रत्याशी हेतु नगर क्षेत्र में बैठक आयोजित कर चर्चा की गई। इस दौरान भाजपा के प्रदेश महामंत्री आदित्य कोठारी, थराली विधायक भोपाल राम टम्टा व नेहा जोशी मुख्य रूप से मौजूद रहे। उन्होंने मेयर पद के लिए अपनी दावेदारी पेश करने वाले दावेदारों से रायशुमारी ली।

जल संस्थान संविदा श्रमिक संघ ने दी धरने की चेतावनी

श्रीनगर, एजेंसी। मांगों पर सकारात्मक कार्रवाई न होने पर उत्तराखंड जल संस्थान संविदा श्रमिक संघ ने आक्रोश व्यक्त किया है। कहा कि अगर 31 दिसंबर तक मांगों पर कार्रवाई नहीं होती है तो एक जनवरी को महाप्रबंधक कार्यालय में धरना प्रदर्शन किया जाएगा। बृहस्पतिवार को उत्तराखंड जल संस्थान संविदा श्रमिक संघ शाखा देवप्रयाग की बैठक बागवान पंप हाऊस में आयोजित हुई। बैठक में श्रमिक संघ के प्रांतीय महामंत्री मंगलेश लखेड़ा ने कहा कि मुख्य महाप्रबंधक जल संस्थान कार्यालय देहरादून ने मांगों पर सकारात्मक कार्रवाई का आश्वासन दिया था।

यात्रा शुरू हुई तो वाहन से कैलाश मान सरोवर जा सकेंगे श्रद्धालु, ऐसे जगी उम्मीद

पिथौरागढ़, एजेंसी। चीन में भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच हुई सकारात्मक बातचीत से कैलाश मानसरोवर यात्रा शुरू होने की उम्मीद जग गई है।

चीन में भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच हुई सकारात्मक बातचीत से कैलाश मानसरोवर यात्रा शुरू होने की उम्मीद जग गई है। यदि यात्रा शुरू होती है तो यह पहली बार होगा जब कैलाश मानसरोवर की यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालु वाहन से ही पूरी यात्रा कर सकेंगे। यात्रियों को कठिन रास्तों से होते हुए पैदल नहीं चलना पड़ेगा।

तिब्बत स्थित कैलाश मानसरोवर की यात्रा हिंदुओं की प्रमुख धार्मिक यात्रा है। वर्ष 1962 से पहले भारत से श्रद्धालु बिना रोकटोक सदियों से चली आ रही इस धार्मिक यात्रा पर जाते थे। भारत-चीन युद्ध के बाद यह यात्रा 19 साल तक बंद रही। दोनों देशों के बीच संबंधों में सुधार के बाद वर्ष 1981 में यात्रा दोबारा शुरू हुई।

कुमाऊं मंडल विकास निगम इस

यात्रा का संचालन करता है। साल 2019 तक लगातार यात्रा का संचालन हुआ। चीन के साथ सीमा विवाद और कोरोना काल के चलते कैलाश मानसरोवर यात्रा वर्ष 2019 से बंद है। विश्व प्रसिद्ध इस यात्रा के संचालन को लेकर प्रयास चल रहे हैं।

इस साल अक्तूबर में रूस के कजान में भारतीय पीएम नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच हुई मुलाकात से ही यात्रा के संचालन की उम्मीद की जा रही थी। अब चीन में भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच हुई सकारात्मक बातचीत से तय है कि आने वाले साल में यह प्रसिद्ध धार्मिक यात्रा शुरू हो जाएगी। दिल्ली से शुरू होने वाली इस धार्मिक यात्रा पर जाने के लिए यात्रियों को धारचूला के तवाघाट या घट्टाबगड़ से लिपुलेख तक करीब 95 किमी पैदल चलना होता था। बूंदी, गुंजी, नाभि सहित विभिन्न पड़ावों पर ठहरने के बाद लिपुलेख दर्रे से यात्रियों का दल चीन में प्रवेश करता था। इस तरह कैलाश मानसरोवर यात्रा में 18 दिन का समय लगता था। अब भारत लिपुलेख तक सड़क बना चुका है। चीन ने पहले ही अपनी सीमा पर पक्की सड़क बना ली थी। लिपुलेख तक सड़क बनने के बाद कैलाश मानसरोवर जाने के लिए यात्रियों को पैदल नहीं चलना पड़ेगा और यात्रा कम समय में पूरी हो जाएगी। वर्ष 1981 से कुमाऊं मंडल विकास निगम ने 2019 तक कैलाश मानसरोवर यात्रा का सफल संचालन किया है। पिथौरागढ़ जिले से ही कैलाश का पौराणिक मार्ग है। यात्रा पौराणिक मार्ग से ही संचालित की जानी चाहिए। यदि भविष्य में यात्रा शुरू होती है तो सीमांत जिले में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

छह माह में पुलिस नहीं बनवा पाई दीवार, न ही मिला इंसाफ

रूड़की, एजेंसी। कोतवाली के चक्कर काटने को मजबूर है पीड़ित बुजुर्ग पुलिस की कथनी और करनी में अंतर से आम आदमी का विश्वास उठता जा रहा है। इसकी एक बानगीभर हैं बुजुर्ग सुंदर। कुछ दबंगों ने उनकी घर की दीवार गिरा दी। विरोध किया तो बुजुर्ग और परिवार से मारपीट कर दी। पुलिस ने दोनों पक्षों में लिखित में सुलह करा दी और भरोसा दिया कि दीवार बनेगी लेकिन छह माह बाद भी दीवार नहीं बन पाई है। पीड़ित कोतवाली के चक्कर काटने को मजबूर हैं। सिविल लाइंस कोतवाली क्षेत्र स्थित गांव जौरासी निवासी सुंदर ने बताया कि 18 जुलाई को वह और उनका बेटा घर से बाहर गए थे। इस बीच कुछ दबंगों ने उनकी घर की दीवार तोड़ डाली। उन्होंने इसका विरोध किया तो दबंगों ने उनके और बेटे के साथ मारपीट कर दी। मामले में पुलिस को तहरीर दी गई थी। पुलिस ने चार लोगों पर केस दर्ज कर लिया था। बुजुर्ग ने आरोप लगाया कि पुलिस ने उनपर दबाव बनाकर दूसरे पक्ष से लिखित में समझौता कराया था और भरोसा दिलवाया था कि दीवार जैसी पहली थी वैसी ही बनाई जाएगी। उस बात को छह माह बीत चुके हैं लेकिन दीवार नहीं बन पाई है। वह दीवार बनाने का प्रयास करते हैं तो दबंग विरोध कर धमकी दे रहे हैं। दीवार बनाने के लिए वह छह माह से कोतवाली के चक्कर काट रहे हैं लेकिन सुनवाई नहीं हो रही है।

छात्रों ने किया समाजशास्त्र व समाज कार्य विभाग का भ्रमण

श्रीनगर, एजेंसी। जवाहर नवोदय विद्यालय जाखधार के छात्रों ने गढ़वाल विवि के समाजशास्त्र व समाज कार्य विभाग का शैक्षणिक भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान विभाग के शोध छात्रों ने अपने शोध विषयों के अनुभवों को छात्रों के साथ साझा किया। पीपीटी के माध्यम से छात्रों को विभिन्न विषयों की जानकारी दी गई। शिक्षक मनोज कुमार के नेतृत्व में जवाहर नवोदय विद्यालय जाखधार के छात्र गढ़वाल विवि के समाज कार्य विभाग पहुंचे। विभागाध्यक्ष प्रो. किरन डंगवाल ने कहा कि इस प्रकार के शैक्षिक भ्रमण से बच्चों को नए अनुभव सीखने के अवसर मिलते हैं, विद्यालय की ये पहल सराहनीय है। कार्यक्रम में प्रो. जेपी, डॉ. नरेंद्र चौहान ,शोध छात्र अंकित उछोली, राजेंद्र बिष्ट, अतुल सती, लूसी कुमारी, सोनम ठाकुर समेत नवोदय विद्यालय जाखधार के छात्र मौजूद रहे।

कड़ाके की ठंड के चलते सूखाताल में अब तक पूरी तरह नहीं पिघली बर्फ

नैनीताल, एजेंसी। नैनीताल में इन दिनों कड़ाके की ठंड पड़ने लगी है। इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि सूखाताल में नौ दिसंबर को गिरी बर्फ अभी तक पूरी तरह से नहीं पिघल पाई है। हालांकि दोपहर में धूप खिलने से राहत है।

नैनीताल में इन दिनों कड़ाके की ठंड के चलते लोग अलाव, हीटर और ब्लोअर का सहारा ले रहे हैं। सुबह-शाम ठंड इतनी तेज है कि सूखाताल क्षेत्र में नौ दिसंबर को गिरी बर्फ अभी तक नहीं पिघल पाई है। पालिका ईओ दीपक गोस्वामी ने बताया कि इन दिनों आठ स्थानों पर अलाव जलाए जा रहे हैं। क्रिसमस के बाद थर्टीफर्स्ट तक 25 स्थानों पर अलाव जलाने की व्यवस्था की जाएगी। इधर जीआईसी स्थित

मौसम विज्ञान केंद्र के प्रभारी नवीन धूसिया ने बताया कि बृहस्पतिवार को नैनीताल का अधिकतम तापमान 21 और न्यूनतम तापमान सात डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है।

साइबर क्राइम : महिला को डिजिटल अरेस्ट कर ठगे 32 लाख

हरिद्वार, एजेंसी। रुड़की में बैंक से रिटायर्ड महिला शोम्पा मौलिक सेसाइबर ठगों ने राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा मामला बताकर पहले डिजिटल अरेस्ट बतायाऔर फिर उससे करीब 32 लाख रुपये ठग लिये।

महिला ने रुड़की पुलिस को बताया कि 14 दिसंबर 2024 को उसके मोबाइल पर अज्ञात व्यक्ति ने कॉल किया था। कॉल करने वाले व्यक्ति ने बताया कि उनके क्रेडिट कार्ड से मुंबई के एक माल से एक लाख 68 हजार रुपये की खरीदारी हुई है।

पीड़िता के आधार कार्ड से कैनरा बैंक मुंबई में एक खाता खोला गया है, जिसमें दो करोड़ रुपये का लेनदेन हुआ है। उसके बाद पीड़िता को कहा गया कि उनकी बात वीडियो काल से मुंबई क्राइम ब्रांच से कराई जा रही है। इसके बाद महिला सेदूसरे व्यक्ति ने बात की।

दूसरे व्यक्ति ने कहा कि नरेश गोयल के मनी लांड्रिंग केस में 247 ए.टी.एम. कार्ड और क्रेडिट कार्ड जब्त हुए हैं, जिसमें एक कार्ड आपका भी है। साइबर ठगों ने डराया कि आपके खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट है। उसके बाद साइबर ठगों ने गिरफ्तारी का वारंट और कुछ दस्तावेज वाट्सएप पर भेजे। साइबर ठगों ने 14 से 18 दिसंबर तक पांच दिन तक कई लोगों से बात कराई, जो खुद को मुंबई क्राइम ब्रांच, सी.बी.आइ., सी.बी.आइ. फाइनेंस और ई.डी. के अधिकारी बता रहे थे।

सभी ने पीड़िता को यहीकहा कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा मामला है, जिससे पीड़िता डर गई थी। इस दौरान साइबर ठगों ने खातों की जांच के बहाने महिला के खाते से18 दिसंबर को अपने खातों में 32 लाख 31 हजार रुपये ट्रांसफर कर लिए। साइबर क्राइम सी.ओ. अंकुश मिश्रा ने बताया कि पीड़िता की शिकायत के आधार अज्ञात आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करमामले की जांच की जा रही है।

सिलुड़ी प्राथमिक विद्यालय को मिलेगा नया भवन

नई टिहरी, एजेंसी। नए शिक्षा सत्र से राजकीय प्राथमिक विद्यालय सिलुड़ी के छात्र-छात्राओं को सुरक्षित और सुविधाजनक शैक्षणिक माहौल मिलने की उम्मीद जगी है। विद्यालय का पुराना भवन जर्जर होने से पिछले छह सालों से स्कूल का संचालन नागराजा मंदिर परिसर में किया जा रहा था। विद्यालय के नए भवन निर्माण की स्वीकृति छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को बड़ी राहत लेकर आई है। भिलंगना ब्लॉक के सिलुड़ी में वर्ष 2000 में प्राथमिक विद्यालय का निर्माण किया गया था। मरम्मत के अभाव में स्कूल भवन वर्ष 2018 में जर्जर हो चुका था। कक्ष के छतों का सीमेंट झड़ रहा था। जगह-जगह से प्लास्टर उखड़ गया था, जिससे छात्रों की सुरक्षा को लेकर लगातार खतरा बना हुआ था। जर्जर भवन में पढ़ाई करना छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए चुनौतीपूर्ण हो गया था। अभिभावक लंबे समय से विद्यालय भवन निर्माण की मांग कर रहे थे। लंबे समय से प्रतीक्षित नए भवन के निर्माण की मंजूरी मिलने के बाद छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों में उत्साह का माहौल है। प्रदेश सरकार ने सिलुड़ी प्राथमिक विद्यालय निर्माण के लिए 32 लाख रुपये की वित्तीय स्वीकृति दे दी है। ग्रामीण निर्माण विभाग को विद्यालय भवन निर्माण की जिम्मेदारी सौंपी गई है। प्रधानाध्यापक तेज सिंह ने बताया कि विद्यालय में 22 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। नए भवन निर्माण की स्वीकृति हमारे लिए बड़ी उपलब्धि है। छात्रों को सुरक्षित वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिलेगा।

आस्था पथ निर्माण को मिली वित्तीय स्वीकृति

देवप्रयाग, एजेंसी। नगर की जनता की वर्षों पुरानी मांग और वर्ष 2021 में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की घोषणा के बाद देवप्रयाग में आस्था पथ के निर्माण के लिए करीब छह करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकृत की गई है। ऋषिकेश की तर्ज पर अब देवप्रयाग में गंगा नदी के दाएं किनारे पर पौड़ी मोटर पुल से भागीरथी झूला पुल तक आस्था पथ का निर्माण होना है। सिंचाई विभाग की ओर से इस परियोजना के लिए केंद्र सरकार को करीब 627.89 लाख रुपये का प्रस्ताव भेजा गया था। इस पर केंद्र सरकार ने पांच करोड़ रुपये की प्रशासनिक व वित्तीय स्वीकृत प्रदान की है। केंद्र सरकार ने उत्तराखंड शासन सचिव आर राजेश कुमार को इस संदर्भ में पत्र जारी किया। सामाजिक कार्यकर्ता डॉ.बीएस रावत, रजनीश मोतीवाल, शशी ध्यानी, अतुल जागीरदार, रेखा भट्ट, नीता ध्यानी, सुभा तिवाड़ी ने कहा कि आस्थापथ के निर्माण से देवप्रयाग में तीर्थयात्रियों और स्थानीय निवासियों को काफी लाभ मिलेगा। यह पथ न केवल तीर्थयात्रियों के लिए एक सुविधाजनक मार्ग प्रदान करेगा बल्कि देवप्रयाग की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को भी बढ़ाने के में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

नयार नदी पर सिंचाई व रोजगार का नया आयाम स्थापित होगा : पुष्कर सिंह धामी

सतपुली, एजेंसी। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सतपुली में झील समेत 172 करोड़ की विकास योजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि जनवरी 2025 से प्रदेश में समान नागरिक संहिता कानून लागू किया जाएगा। नयान नदी पर सिंचाई और रोजगार के नए आयाम स्थापित होंगे।

सतपुली रामलीला मैदान में आयोजित समारोह में सीएम पुष्कर सिंह धामी ने जनसभा को संबोधित किया। कहा कि प्रदेश में नकल माफिया पर शिकंजा कसकर सभी को बराबर मौके मुहैया करवाए जा रहे हैं। धर्मांतरण और लैंड जेहाद पर प्रदेश में कड़े कानून बनाए गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी गत 9 नवंबर के संबोधन में उत्तराखंड के फैसलों को देश के लिए नजीर बताया। कहा कि सतपुली में नयार नदी पर झील निर्माण से पेयजल, सिंचाई और रोजगार के नए आयाम स्थापित करेगी। सतपुली झील क्षेत्र के पर्यटन विकास में मील का पत्थर साबित होगी। क्षेत्र की बहुप्रतीक्षित मांग सिंगटाली पुल की डीपीआर भी तैयार की जा रही है।

कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज ने कहा कि पूर्व में नयार में आई भयावह बाढ़ के कारण सतपुली पर लोकगीत बना था। अब सतपुली को झील और पर्यटन के लिए जाना जाएगा। क्षेत्र को पर्यटन मानचित्र पर लाने के लिए कई योजनाएं गतिमान है। जिनके पूरा होने पर क्षेत्र को पर्यटन मानचित्र पर स्थापित किया जा सकेगा। इस मौके पर लैंसडौन के विधायक दिलीप रावत, विधायक पौड़ी राजकुमार पोरी, डीएम डॉ आशीष चौहान, एसएसपी लोकेश्वर सिंह, सीडीओ गिरीशचंद्र गुणवंत, गोसेवा आयोग के अध्यक्ष पंडित राजेन्द्र अणथ्वाल, भाजपा कोटद्वार जिलाध्यक्ष वीरेंद्र रावत, पौड़ी जिलाध्यक्ष सुषमा रावत, निवर्तमान नगर पंचायत अध्यक्ष अंजना वर्मा, क्षेत्र पंचायत जयहरीखाल के प्रशासक दीपक भंडारी, द्वारीखाल ब्लॉक के प्रशासक महेंद्र राणा, कल्जीखाल प्रशासक बीना राणा समेत भाजपा के विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी एवं विभिन्न विभागों के अधिकारी कर्मचारी मौजूद थे। सभा का संचालन शैलेन्द्र दर्शन सिंह ने किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने विधानसभा क्षेत्र चौबट्टाखाल की विकास पुस्तिका का विमोचन किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली में धुंध के कारण वह कार से मेरठ और वहां से हेलिकॉप्टर से यहां पहुंचे हैं। हम सौभाग्यशाली हैं, जो उत्तराखंड में रहते हैं। दिल्ली में कल का प्रदूषण स्तर 480 था। सीएम ने 123 करोड़ 53 लाख की 4 योजनाओं का शिलान्यास व 49 करोड़ 12 लाख की 20 योजनाओं का लोकार्पण किया। जिसमे 56 करोड़ की लागत से बनने जा रही सतपुली झील का शिलान्यास मुख्यतः शामिल है। विकासखंड बीरोंखाल के अंतर्गत राजकीय इंटर कॉलेज भरोलीखाल व बीरोंखाल में नवीन भवन निर्माण, विकासखंड एकेश्वर व कल्जीखाल के मध्य पश्चिमी नयार नदी पर पाटीसैण व असवालस्यूं के मध्य मोटर पुल, विकासखंड एकेश्वर मुख्यालय में मिनी स्टेडियम, रवांसा नदी के ऊपर निर्मित पीपलडोंगा पुल से 500 मीटर ऊपर की ओर बैराज का निर्माण, ताड़केश्वर महादेव में पुलिस चौकी की स्थापना।

किच्छा नगर पालिका अध्यक्ष पद के आरक्षण का नोटिस प्रकाशित करने के निर्देश

नैनीताल, एजेंसी। हाईकोर्ट ने सरकार द्वारा अन्य पालिकाध्यक्ष पदों के प्रस्तावित आरक्षण के साथ किच्छा नगर पालिका अध्यक्ष पद के आरक्षण का प्रकाशन न करने के मामले में दायर याचिका पर सुनवाई के बाद राज्य सरकार को एक सप्ताह के भीतर किच्छा नगर पालिका अध्यक्ष पद के आरक्षण का नोटिस प्रकाशित करने व प्रदेश की सभी 44 नगर पालिका अध्यक्षों के प्रस्तावित आरक्षण पर एक साथ आपत्ति सुनने के निर्देश दिए हैं।कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनोज कुमार तिवारी एवं न्यायमूर्ति पंकज पुरोहित की खंडपीठ के समक्ष मामले की सुनवाई हुई। मामले के अनुसार किच्छा निवासी नईमूल हुसैन व संतोष रघुवंशी ने हाईकोर्ट

में याचिका दायर कर कहा था कि सरकार ने 14 दिसंबर को प्रदेश के 43 नगर पालिका अध्यक्ष पदों के लिए प्रस्तावित आरक्षण की अधिसूचना जारी कर उसमें आम जनता से आपत्तियां मांगी। लेकिन इस अधिसूचना में किंच्छा नगर पालिका अध्यक्ष के आरक्षण का उल्लेख नहीं था। जिससे यह आशंका है कि सरकार वहां नगर पालिका चुनाव टालना चाहती है। इसके अलावा आरक्षण आवंटन नियमावली के अनुसार पालिका अध्यक्ष के जितने भी पद होंगे उसी के अनुसार रोस्टर के आधार पर आरक्षण निर्धारित होगा। लेकिन वर्तमान में सरकार ने 43 पालिका अध्यक्ष पदों के आधार पर ही रोस्टर तय किया है। याचिकाकर्ताओं के अनुसार सरकार ने पूर्व में किच्छा नगरपालिका के कुछ वार्ड गांवों में मिला दिए थे। जिस पर हाईकोर्ट ने रोक लगा दी थी । जिसके बाद सरकार ने इन क्षेत्रों को पुनः नगर पालिका में मिला दिया। लेकिन अब वहां नगर पालिका के चुनाव टालने की कोशिश की जा रही है।

सीएम पोर्टल में शिकायत के बाद लोनिवि ने होटल स्वामी को भेजा नोटिस

लैंसडौन, एजेंसी। लैंसडौन-फतेहपुर मार्ग पर जयहरीखाल ब्लॉक के अंतर्गत गोयूं गांव में यूपी के मेरठ निवासी एक व्यक्ति द्वारा बनाया गया एक होटल इन दिनों चर्चाओं में है। सीएम पोर्टल में शिकायत होने के बाद लोनिवि लैंसडौन के अधिशासी अभियंता ने होटल स्वामी को नोटिस जारी कर संबंधित भूमि से अवैध अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए हैं। वहीं एसडीएम ने भी मामले की जांच कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की बात कही है।

मेरठ निवासी संजीव कुमार ने सीएम हेल्पलाइन पोर्टल में दर्ज शिकायत में कहा कि मेरठ निवासी रोमेश नोरिया ने लैंसडौन-फतेहपुर मार्ग पर गोयूं गांव की खाता खतौनी संख्या 17 की भूमि में अतिक्रमण कर होटल बना लिया है। मानकों के अनुसार सड़क किनारे से 5 मीटर की दूरी पर भवन निर्माण किया जाना चाहिए। इसके लिए संबंधित विभाग की अनुमति भी जरूरी है, लेकिन उक्त व्यक्ति ने बिना विभागीय अनुमति के नियमों को ताक पर रखकर अतिक्रमण कर होटल का निर्माण कराया है। वहीं होटल स्वामी रोमेश नोरिया ने बताया कि वर्ष 2022 में उनके द्वारा लोनिवि को एनओसी के लिए पत्र लिखा गया था। उनका जबाब नहीं मिलने पर उन्होंने जिला पंचायत से नक्शा पास करवाकर होटल का निर्माण कार्य शुरू करवाया जो कि नियमानुसार है।

संजीव कुमार द्वारा लैंसडौन-फतेहपुर मार्ग पर बन रहे होटल को लेकर सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई गई है।

संक्षिप्त खबरें

भगोड़े को पुलिस ने दबोचा

नई दिल्ली। मध्य जिला की ऑपरेशन यूनिट टीम ने एक हिट एंड रन (सड़क हादसे के मामले फरार) मामले में फरार शाहबाज नामक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। वह घटना के बाद से फरार चल रहा था। पुलिस के अनुसार आरोपित शाहबाज सीलमपुर का रहने वाला है। मध्य जिले के डीसीपी एम हर्षवर्धन ने बताया कि शाहबाज के ऊपर न्यू उस्मानपुर थाने में करीब 6 साल पहले सड़क हादसे का मामला दर्ज हुआ था। उस मामले में बाद में कोर्ट ने उसे भगोड़ा भी घोषित कर दिया था। डीसीपी के अनुसार मध्य जिला की ऑपरेशन यूनिट भगोड़े बदमाशों की जांच कर रही थी। इस बीच पुलिस टीम को शाहबाज के बारे में गुप्त सूचनामिली। पुलिस टीम ने सूचना को पुख्ता कर सीलमपुर से गिरफ्तार किया। पुलिस ने उसे कोर्ट में पेश किया कर उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है।

गांजा के साथ तस्कर गिरफ्तार

नई दिल्ली । दक्षिण पश्चिम जिले के एंटी स्नैचिंग सेल और सरोजिनी नगर थाना की पुलिस टीम ने गांजा तस्करी के मामले में नदीम नामक एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। उसके पास से 990 ग्राम फाइन क्वालिटी का गांजा बरामद किया गया है। वह लक्ष्मीबाई नगर इलाके का रहने वाला है। जांच पड़ताल में पता चला है कि यह पहले भी इस तरह के मामलों में शामिल रहा है। दक्षिण पश्चिम जिले के डीसीपी सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि नदीम के बारे में पुलिस टीम को एक गुप्त सूचना मिली थी। उसी आधार पर सफदरजंग एनक्लेव के एसीपी रणवीर सिंह की देखरेख में इंस्पेक्टर हरि सिंह, सब इंस्पेक्टर मांगीलाल, हेड कांस्टेबल अजय, मनोज, भगत, अनिल कुमार, नरेंद्र और कांस्टेबल बबलू यादव की टीम ने पिलंजी गांव में नदीम को धर दबोचा। इसके पास से बैग मिला, जिसमें गांजा रखा हुआ था। आगे की पूछताछ में पता चला कि बाहर से गांजा लाकर वह आसपास के इलाकों में बेचता है। वह लक्ष्मीबाई नगर के अर्जुन दास कैंप की झुग्गी बस्ती में रहता है।

लूट और हत्या में दोषी चार साल बाद गिरफ्तार

नई दिल्ली । अशोक विहार पुलिस ने लूट और हत्या में दोषी ठहराए गए फर्लो जंपर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार शख्स की पहचान विजय कुमार के रूप में हुई है। विजय चार साल से फरार था। डीसीपी अभिषेक धनिया ने बताया कि विजय ने अशोक विहार इलाके में वर्ष 2010 में लूटपाट के दौरान हत्या की थी। इस मामले में कोर्ट ने दोषी ठहराते हुए सजा भी सुनाई थी। वर्ष 2020 में फर्लो पर तीन माह के लिए वह बाहर आया, लेकिन वापस जेल नहीं लौटा था। टेक्निकल सर्विलांस की मदद से उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

मजदूरों को आर्थिक सहायता नहीं दे रही दिल्ली सरकार : विजेंद्र गुप्ता

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने दिल्ली सरकार पर मजदूर विरोधी होने का आरोप लगाते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार कोर्ट के आदेशों की अवहेलना कर भवन निर्माण मजदूरों को आर्थिक सहायता उपलब्ध नहीं करवा रही है। कोर्ट ने दिल्ली में प्रदूषण बढ़ने पर ग्रेप-4 लागू होने के कारण बेरोजगार हुए लाखों श्रमिकों को तुरंत आर्थिक मदद के रूप में प्रत्येक पात्र श्रमिक को आठ हजार रुपये देने का आदेश दिल्ली सरकार को दिया था। लेकिन दिल्ली सरकार के असंवेदनशील रवैये के कारण लाखों मजदूरों के बच्चों को अन्न का निवाला तक उपलब्ध नहीं हो पा रहा है।

गुप्ता ने कहा कि प्रदूषण के मद्देनजर एक बार फिर से ग्रेप-4 का दूसरा चरण लागू हो गया है और निर्माण गतिविधियों पर रोक के कारण दिल्ली के 20 लाख मजदूर फिर से बेरोजगार हो गए हैं। उनके परिवारों पर रोजी रोटी का संकट खड़ा हो गया है। गुप्ता ने कहा कि दिल्ली सरकार ने खुद पिछले दिनों ह्यदिल्ली बिल्डिंग एंड अदर कंस्ट्रक्शन वर्कर्स वेलफेयर बोर्डह्न में पंजीकृत 90,759 श्रमिकों को 8000 रुपये की एकमुश्त आर्थिक सहायता देने का वादा किया था, लेकिन किसी भी मजदूर को 8 हजार रुपये नहीं मिले हैं। गुप्ता ने हैरानी जताई कि सरकार इतनी असंवेदनशील कैसे हो सकती है। ये मजदूर अगर इतने ही पढ़े लिखे होते और अपने बैंक खातों को आधार से लिंक करना जानते तो वो मजदूरी नहीं कर रहे होते। सरकार को इनके प्रति उदारवादी नीति अपनाते हुए इन्हें आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए और आगे के लिए अपना खाता आधार से लिंक करने के लिए उन्हें सलाह दी जानी चाहिए। गुप्ता ने मांग की है कि इन सभी 11 लाख श्रमिकों को भी तुरंत आर्थिक सहायता देकर उनके रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया शुरू करवाई जानी चाहिए। गुप्ता ने कहा कि 90,759 रजिस्टर्ड श्रमिकों के साथ-साथ उन श्रमिकों को भी आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए

एलजी ने दी ईडी को केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी, सिसोदिया ने कहा- मुद्दे से भटकाने की कोशिश

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली विधानसभा चुनाव से ठीक पहले आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल की मुसीबतें बढ़ती दिखाई दे रही हैं। दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना ने शराब नीति मामले में केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए ईडी को मंजूरी दे दी है।

एलजी ने एक्साइज घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए ईडी को मंजूरी दे दी है। ईडी ने 21 मार्च को दिल्ली के तत्कालीन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार किया था और मई में उनके खिलाफ मामला दर्ज किया था।

अपनी अंतिम जांच रिपोर्ट में, ईडी ने अरविंद केजरीवाल के साथ-साथ मनीष सिसोदिया को एक्साइज शुल्क घोटाले का मास्टरमाइंड बताया है। एजेंसी ने कहा है कि केजरीवाल और सिसोदिया ने साउथ लॉबी की मदद के लिए एक्साइज ड्यूटी नीति 2021-22 में बदलाव किए, जिसने कथित तौर पर 100 करोड़ रुपये की रिश्वत दी थी। 100 करोड़ रुपये की रिश्वत में से आप ने 45 करोड़ रुपये का इस्तेमाल गोवा विधानसभा चुनाव प्रचार में किया था।

राजधानी में विधानसभा चुनाव से पहले आप सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल के लिए मुश्किल खड़ी करने वाले घटनाक्रम में उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने ईडी को आबकारी नीति मामले में दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री पर मुकदमा चलाने की मंजूरी दे दी है। प्रवर्तन निदेशालय ने इस महीने की शुरुआत में केजरीवाल पर मुकदमा चलाने के लिए उपराज्यपाल से मंजूरी मांगी थी, क्योंकि उसे आबकारी नीति के निर्माण और कार्यान्वयन में भारी स्तर का भ्रष्टाचार मिला था।

इस मुद्दे पर अब आम आदमी पार्टी के नेता मनीष सिसोदिया का एक बयान सामने आया है। जिसमें उन्होंने कहा, अगर एलजी विनय सक्सेना ने अरविंद केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी दी है, तो ईडी उस मंजूरी की कॉपी क्यों नहीं दिखा रही? यह साफ है कि यह खबर झूठ और गुमराह करने वाली है। बाबासाहेब के अपमान के मुद्दे से ध्यान भटकाने के लिए जुमलेबाजी बंद करो और दिखाओ कहां है ईडी को मुकदमा चलाने के लिए दी गई मंजूरी?

आप के पूर्व विधायक सुखबीर सिंह दलाल ने थामा भाजपा का दामन

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली विधानसभा चुनाव के पहले आम आदमी पार्टी (आप) को एक बड़ा झटका लगा है। आप के पूर्व विधायक सुखबीर सिंह दलाल ने शनिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का दामन थाम लिया है।

केंद्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा समेत पार्टी के कई प्रमुख नेताओं की मौजूदगी में सुखबीर सिंह दलाल भाजपा में शामिल हुए। दलाल के भाजपा में शामिल होने से माना जा रहा है कि पार्टी को स्थानीय स्तर पर और मजबूती मिलेगी। भाजपा में शामिल होने के बाद सुखबीर सिंह ने पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को धन्यवाद करते हुए कहा कि वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा की नीतियों से प्रभावित हैं। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश प्रगति और विकास कर रहा है।

बता दें कि सुखबीर सिंह दलाल दिल्ली के मुंडका सीट से विधायक रह चुके हैं। 2015 में वह आम आदमी पार्टी से विधायक बने थे। 2020 में हुए विधानसभा चुनाव में पार्टी ने उनका टिकट काट दिया था। इस बार के चुनाव में आम आदमी पार्टी ने जसबीर कराला को उम्मीदवार बनाया है। सियासी गलियारों में खबर है कि भाजपा मुंडका से सुखबीर दलाल को टिकट देकर मैदान में उतार सकती है।

बता दें कि इससे पहले दिल्ली सरकार में मंत्री कैलाश गहलोत भी भाजपा का दामन थाम चुके हैं। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल, दुष्यंत गौतम और अन्य भाजपा नेताओं की मौजूदगी में उन्होंने भाजपा का दामन थामा था। कैलाश गहलोत ने भाजपा की सदस्यता लेने के बाद मीडिया से बात करते हुए कहा था कि आम आदमी पार्टी छोड़ना मेरे लिए आसान कदम नहीं था। अन्ना आंदोलन से मैं पार्टी से जुड़ा था। लगातार दिल्लीवासियों के लिए काम किया। हर कोई सोच रहा है कि मैंने किसी दबाव में यह निर्णय लिया। मैंने आज तक किसी के दबाव में कोई काम नहीं किया। 2015 से राजनीतिक जीवन से पार्टी में रहकर कोई भी काम दबाव में नहीं किया।

सामाजिक कार्यों के लिए बौद्ध समाज ने सोलंकी को किया सम्मानित

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नई दिल्लीः जिन कार्यों को विधायक और जनप्रतिनिधि को करना चाहिए लेकिन उसकी अनदेखी करते है उन कार्यों को भी रणबीर सिंह सोलंकी ने तत्परता से कराया। पालम विधानसभा में सोलंकी द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों लिए एक समारोह में सोलंकी मार्केट स्थित प्रधान कार्यालय में बौद्ध समाज संघ पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने राष्ट्रीय युवा चेतना मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं फेडरेशन ऑफ साउथ एंड वेस्ट डिस्ट्रीक्ट वेलफेयर फोरम के चेयरमेन रणबीर सिंह सोलंकी को शॉल, प्रशस्ति पत्र एवं डॉ आंबेडकर जी की मूर्ति भेंट कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष सुखबीर बौद्ध ने कहा कि जिस कार्य को विधायक एवं अन्य जनप्रतिनिधि नहीं कर सके उन्हें भी रणबीर सोलंकी ने सरकारी विभागों से कराया। वर्षों से डाबड़ी स्थिति डॉ अंबेडकर जी की मूर्ति एवं पार्क की सफाई उनके द्वारा चंद घंटों में करा दी गई जबकि क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों ने इसकी अनदेखी कर रखी थी।

अपने संबोधन में श्री सोलंकी ने कहा कि क्षेत्र की समस्या को लेकर हम तत्काल संबंधित विभागों में मिलकर उन्हें समस्याओं से अवगत करा अपने कर्तव्यों के निर्वाहन करने का अनुरोध करते हैं और ईमानदार अधिकारी उसे तत्परता से करते हैं।

इस अवसर पर क्षेत्रीय नागरिकों सहित प्रेम प्रभाकर, हरिश्चंद्र राय, दिनेश प्रसाद कुशवाहा,डॉक्टर सुरेंद्र झा, हरिशंकर बौद्ध,अमर सिंह, एडवोकेट राहुल गौतम, सुखबीर बौद्ध, पूजा गौतम, सुजाता गौतम, आर एस बुद्ध, बालेंद्र गौतम एवं आदि उपस्थित थे।

सुदामा चरित्र एवं राजा परीक्षित के मोक्ष का प्रसंग सुनकर भावुक हुए श्रद्धालु

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

खोडा, हिमालय इंक्लेव स्थिति प्राचीन शिव शक्ति दुर्गा मन्दिर प्रांगण में चल रही संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा के सातवें दिन कथा वाचक आचार्य विष्णु शरण भरद्वाज ने सुदामा चरित्र और राजा परीक्षित के मोक्ष प्रसंग का वर्णन किया गया। उन्होंने बताया, सुदामा जी, भगवान कृष्ण के परम मित्र थे। वे गरीबी में रहते हुए भी भगवान के ध्यान में लगे रहते थे। सुदामा जी की पत्नी सुशीला, सुदामा जी से बार-बार कहती थीं कि वे भगवान कृष्ण से मिलकर मदद मांगें। सुदामा जी, पत्नी के कहने पर द्वारका पहुंचते हैं। द्वारपाल, भगवान कृष्ण को सुदामा जी के आने की जानकारी देते हैं। भगवान कृष्ण, नंगे पैर दौड़कर सुदामा जी से मिलते हैं और उन्हें गले लगा लेते हैं। कृष्ण जी, सुदामा जी को सिंहासन पर बिठाते हैं और उनके चरण धोते हैं। और उनसे कुशल क्षेम पूछते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए क्या लाये हो। सुदामा जी मुठ्ठी भर चावल की पोटली कृष्ण जी को देते हैं और भगवान उस चावल को खाकर खुश हो जाते हैं। कृष्ण जी, सुदामा जी को कुबेर का धन देकर मालामाल कर देते है और रहने के लिए कंचन महल की सुदामा नगरी बसा देते हैं। इसके बाद सभी भक्तजन को प्रसाद बितरित किया गया। मंदिर समिति के मीडिया प्रभारी श्री संतोष मिश्रा जी ने बताया कि इस मौके पर योगेश भाटी, मुकेश गिरी मन्दिर समिति के अध्यक्ष श्री विनोद तिवारी, विनोद कुमार नागर, तेजपाल गुप्ता, हरिशचंद्र शर्मा, डी. पी. उपाध्याय, सूरज सिंह कुशवाह, परमात्मा यादव, पं. शेष नारायण मिश्र (मन्दिर पुजारी), संतोष मिश्रा, हृदयराम मिश्रा, कृष्ण स्वरूप वर्मा, संतोष वर्मा, लोकेंद्र सिंह, मनमोहन तिवारी, संदीप मिश्रा, संजय माथुर, सत्य नारायण गुप्ता, मोनू उपाध्याय, शिव प्रसाद पांडेय, , नारायण सिंह कुशवाह, दिलीप सिंह कुशवाह, जंगबीर सिंह, विजय चौधरी, मनोज चौहान, शंकर लाल पटेल, शिवराम सिंह, समरपाल सिंह, डब्बु कुमार, दीपान्शु, अनुराग, हिमांशु, बिहारी लाल सहित हजारों लोग मौजूद थे।

विदेश में पढ़ने के इच्छुक छात्रों का पूरा खर्च उठाएगी आप सरकार, शुरू करेगी डॉ. अंबेडकर सम्मान स्कॉलरशिप योजना

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली के दलित समाज के बच्चों को अब विदेश में पढ़ने का सपना साकार हो सकेगा। दलित छात्रों को सिर्फ विदेश की किसी मनचाही टॉप की यूनिवर्सिटी में एडमिशन लेना होगा। उसके बाद आने- जाने और वहां रह कर पढ़ाई करने का पूरा आम आदमी पार्टी की सरकार उठाएगी। आम आदमी पार्टी की सरकार डॉ. अंबेडकर सम्मान स्कॉलरशिप योजना शुरू करेगी। शनिवार को आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली के दलित समाज के लिए यह बड़ी घोषणा की। उन्होंने कहा कि इस योजना का लाभ दलित समाज के सरकारी कर्मचारी भी उठा सकेंगे। वह भी अपने बच्चों को मुफ्त में विदेश पढ़ने के लिए भेज सकेंगे। उन्होंने कहा कि अमित शाह और भाजपा ने संसद में बाबा साहब का अपमान किया और उनका मजाक उड़ाया, यह योजना इसका जवाब है। भाजपा वालों, तुम बाबा साहब को गाली दो और मैं उन्हें सम्मान दूंगा। इस दौरान मनीष सिसोदिया, सीएम आतिशी, मंत्री मुकेश अहलावत, अवध ओझा, राखी बिड़लान, कुलदीप कुमार समेत अन्य वरिष्ठ नेता मौजूद रहे।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि अभी हमने तीन दिन पहले देखा कि किस तरह देश के गृह मंत्री और भाजपा के नेता अमित शाह ने संसद के अंदर बाबा साहब अंबेडकर का अपमान किया। उन्होंने जो शब्द इस्तेमाल किए वो अपमानजनक तो थे ही, लेकिन जिस लहजे से उन्होंने बोला, उन्होंने बाबा साहब का मजाक उड़ाया। अमित शाह कह रहे थे कि अंबेडकर- अंबेडकर कहना आजकल फैशन हो गया है। मैं अपने आप को बाबा साहब अंबेडकर का भक्त मानता हूं और इससे मुझे व्यक्तिगत तौर पर भी बहुत दुख हुआ। मैं समझता हूं कि दुनिया भर में बाबा साहब को चाहने वाले करोड़ों-करोड़ों लोगों को इससे पीड़ा पहुंची है।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि बाबा साहब अंबेडकर जब जिंदा थे, तो उस समय भी कई लोग उनके सामने उनका मजाक उड़ाया करते थे। लेकिन किसी ने सोचा नहीं था कि आजाद भारत में भी कभी ऐसा समय आएगा, जब कोई पार्टी और कोई नेता इस तरह खुलेआम संसद के अंदर उनका मजाक उड़ाएगा। जबकि आज हमारी संसद बाबा साहब के संविधान की वजह से है। हम भाजपा और उनके नेताओं की कड़ी निंदा करते हैं, जिन्होंने खुलेआम बाबा साहब अंबेडकर का मजाक उड़ाया। लेकिन इस अपमान के जवाब में आज मैं बाबा साहब अंबेडकर के सम्मान में एक बहुत बड़ी घोषणा कर रहा हूं।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि बाबा साहब ने शिक्षा को सबसे ज्यादा तवज्जो दी थी। उन्होंने कहा था कि अगर हमारे समाज को आगे बढ़ना है तो एक ही चीज है जो हमारे समाज को एक पीढ़ी के अंदर सबको बराबर खड़ा कर सकती है और वो है शिक्षा। उन्होंने अपनी जिंदगी में शिक्षा पाने के लिए बहुत संघर्ष किए, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। उनके जमाने में बहुत ज्यादा छुआछूत थी। वह जब स्कूल जाते थे तो अपने साथ टाट-पट्टी लेकर जाते थे। उन्हें क्लास के बाहर बैठा दिया जाता था। वह टाट-पट्टी पर बैठते थे और उनको कहा जाता था कि क्लास के अंदर जो टीचर बोल रहा है उसकी आवाज आ रही होगी। उस आवाज को सुनकर तुम पढ़ लेना। ऐसी परिस्थिति में पढ़कर उन्होंने पहले बंबई से ग्रेजुएशन की और उसके बाद वह पीएचडी के लिए कोलंबिया यूनिवर्सिटी गए। 1915 में उन्होंने कोलंबिया यूनिवर्सिटी से पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। जिसके बाद वह लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स गए, वहां से उन्होंने पीएचडी की। लेकिन लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में पढ़ते हुए उन्हें अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी, क्योंकि उनके पास पैसे कम पड़ गए थे और उनको वापस भारत आना पड़ा। यहां आकर उन्होंने पैसों का इंतजाम किया और दोबारा अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स गए।

विश्व ध्यान दिवस : दिल्ली के मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान में सैकड़ों लोगों ने किया ध्यान

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस के रूप में घोषित किया है। इस अवसर पर दिल्ली के मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान में विश्व ध्यान दिवस पर सैकड़ों लोगों ने ध्यान लगाया।

योग अनुसंधान अधिकारी ए. दौरेन सिंह ने बताया, मैं इस केंद्र में लगभग 25 सालों से काम कर रहा हूं। 21 जून को विश्व योग दिवस मनाया जाता है। साथ ही 21 दिसंबर को अब से विश्व ध्यान दिवस मनाया जाएगा। यह दोनों ही विशेष दिवस हैं। एक साल का सबसे बड़ा दिन है, तो दूसरा साल की सबसे बड़ी रात है। बिना ध्यान के योग अधूरा है। इसलिए हर व्यक्ति को योग करना चाहिए। अभी तक लोगों को लगता था कि योग अलग है, ध्यान अलग है। लेकिन, ध्यान एक योग की ही प्रक्रिया है। जिसको योग करना है, उसके लिए ध्यान जरूरी है। बिना ध्यान के मन शांत नहीं होता है। आजकल की भागम भाग भरी जिंदगी में हर किसी को तनाव और एनजाइटी है। इसलिए मन शांत रखना चाहिए।

एक अन्य प्रतिभागी सेजल ने बताया, मैं यहां फाउंडेशन कोर्स की छात्र हूं। मुझे योग सीखते दो महीने हो गए है। हम इसके माध्यम से दुनिया को दिखा रहे हैं कि हमारी जड़ें कहां हैं। आजकल के लोग मानसिक रूप से स्वस्थ महसूस नहीं कर रहे हैं। इसी वजह से योग की भूमिका अहम हो जाती है।

पीतमपुरा की रहने वाली रजनी अग्रवाल ने कहा, मैंने यहां से फाउंडेशन कोर्स किया है। इसके बाद मैंने यहां से कई कोर्सेज किए। हम सब योग को बहुत मानते हैं। योग हमारे शरीर को ठीक रखता है। लेकिन, ध्यान हमारे मानसिक तनाव को दूर करता है। इस समय की कार्यशैली की वजह से लगभग हर व्यक्ति तनाव में रहता है। इससे लोगों को कई मानसिक बीमारियां हो जाती हैं। इससे हमारी शारीरिक स्थिति भी खराब हो जाती है। जब तक हम अंदर से शांत नहीं होंगे तब तक हमारा योग करने से कोई मतलब नहीं है। इसमें ध्यान बहुत बड़ी भूमिका निभाता है।

बल्लीमारान विधानसभा में भाजपा से जुड़े बाल्मीकि समाज के सैकड़ों लोग आम आदमी पार्टी में शामिल

- बल्लीमारान से विधायक एवं कैबिनेट मंत्री इमरान हुसैन ने सबको पटका और टोपी पहनाकर आम आदमी पार्टी में शामिल किया

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

बल्लीमारान विधानसभा क्षेत्र से भाजपा से जुड़े वाल्मीकि समाज के सैकड़ों लोगों ने आम आदमी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। दिल्ली के खाद्य आपूर्ति मंत्री व बल्लीमारान के विधायक इमरान हुसैन ने सभी लोगों का आम आदमी पार्टी में शामिल होने पर उनका जोरदार स्वागत किया।

आज दिल्ली के खाद्य आपूर्ति मंत्री इमरान हुसैन की मौजूदगी में विशाल ढकोलिया (अध्यक्ष वाल्मीकि जन्मोत्सव कमेटी,दिल्ली) मुकेश ढकोलिया, अजित बहोत,ललित बहोत, वैभव टांक, अभिषेक टांक, मयंक चौधरी, हरमहेंद्र चौहान, भारत, मनीष बहोत, विकास ढलोर,अनुराग ढकोलिया, रंजित खलीफा, विनय पार्चा,सन्नी टांक,अंकित जाटव, पुनित जाटव,अभिषेक चौधरी, सचिन ढकोलिया, काका सूद, भानू ढकोलिया, नकुल चौधरी, राहुल लूहेराजी, सन्नी लूहेराजी, विनोद बहोत, लालचन्द, दानिश अंसारी, शहदाब भाई, राजेश चौहान, विक्की बहोत, तरुण मेहता , दक्ष ढकोलिया,पारस चौहान, मोहित बहोत, जितेश बहोत, अंकल चिनू, आबिद भाई ,मोहित इन्दीरिया, बॉबी खटल, अमित तन्वर सहित बीजेपी की विचारधारा से जुड़े अन्य सैकड़ों लोगों ने आम आदमी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। दिल्ली के खाद्य पूर्ति मंत्री व बल्लीमारान के विधायक इमरान हुसैन ने टोपी-पटका पहनाकर सभी का आम आदमी पार्टी में स्वागत किया। इस अवसर पर इमरान हुसैन ने कहा कि वाल्मीकि समाज का समर्थन हमारे लिए गर्व और जिम्मेदारी की बात है। हमारी पार्टी हमेशा समाज के हर वर्ग के लिए काम करती आई है और यह कदम हमें और मजबूती प्रदान करेगा। वाल्मीकि समाज के प्रतिनिधियों ने कहा कि आम आदमी पार्टी की नीतियों और सुशासन से प्रेरित होकर उन्होंने यह कदम उठाया। उन्होंने कहा, अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी ने शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली और पानी जैसे बुनियादी क्षेत्रों में जो बदलाव किए हैं, वे समाज के हर वर्ग के लिए प्रेरणादायक हैं। खासकर सफाई कर्मचारियों और समाज के कमजोर वर्गों के लिए किए गए प्रयास के चलते हमलोग आम आदमी पार्टी से जुड़ रहे हैं। बल्लीमारान के विधायक इमरान हुसैन ने इसे एक बड़ा राजनीतिक समर्थन बताते हुए कहा कि यह कदम पार्टी की जमीनी पकड़ को खासकर समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों के बीच और मजबूत करेगा। हमारी सरकार और पार्टी वाल्मीकि समाज के सशक्तिकरण और उनके मुद्दों के समाधान के लिए निरंतर प्रयास करती रहेगी । इस अवसर पर खाद आपूर्ति मंत्री इमरान हुसैन ने कहा कि रेवड़ी पर चर्चा अभियान को मिल रहे जन समर्थन से सभी विपक्षी पार्टियों घबरा गई हैं। अगर दिल्ली के लोगों को सुविधा देना मुफ्त की रेवड़ी है तो अरविंद केजरीवाल जी के मार्गदर्शन में दिल्ली के लोगों को दिल्ली के लोगों को मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी,दिल्ली के सरकारी स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, मोहल्ला क्लीनिक और सरकारी अस्पतालों में अच्छा इलाज,दिल्ली की महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा, बुजुर्गों के लिए मुफ्त तीर्थ यात्रा निरंतर जारी रहेगी चाहे विपक्षी दलों के लोग इसमें कितना भी अड़चन लगा ले। अरविंद केजरीवाल की 6 रेवड़ियों से हर समाज के लोगों के खासकर कमजोर समाज के लोगों की जीवनशैली में बड़ा बदलाव आया है।

संजय सिंह ने बीजेपी पर लगाए गंभीर आरोप

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी का कहना है कि भाजपा दिल्ली में रह रहे पूर्वांचल समाज के लोगों को उजाड़ने की साजिश कर रही है. पार्टी के वरिष्ठ नेता संजय सिंह ने कहा कि भाजपा संसद में पूर्वांचल समाज के लोगों को रोहिंग्या कहकर अपमानित करने के बाद अब उनके बच्चों को प्रताड़ित करना और उनके घरों पर बुल्डोजर चलाना चाहती है. पूर्वांचल समाज को बर्बाद करने के लिए भाजपा ने अपने अधिकारियों से एमसीडी में आदेश पास कराया है कि निगम के स्कूलों में पढ़ रहे बांग्लादेशी प्रवासियों की पहचान की जाए और उनके अतिक्रमण को हटाया जाए. अभी कुछ दिन पहले ही भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा है कि यूपी, बिहार के लोग बांग्लादेशी और रोहिंग्या हैं, इनके वोट कटवाएंगे. अगर भाजपा को बांग्लादेशी और रोहिंग्याओं को पकड़ना होता तो ये बक्करवाला में जाते, जहां इनकी केंद्र सरकार ने इनको बसाया है और तमाम सुविधाएं दी हैं. उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि अगर भाजपा अपनी गंदी साजिशों को बंद नहीं करेगी तो आम आदमी पार्टी पूर्वांचल समाज के लिए आर-पार की लड़ाई लड़ेगी. आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और सांसद संजय सिंह ने पार्टी मुख्यालय में प्रेसवार्ता कर कहा कि भाजपा यूपी, बिहार और पूर्वांचलियों के प्रति अपने घृणित मानसिकता से बाहर नहीं आ रही है और भाजपा संसद में विवाद के बाद पूर्वांचलियों को दिल्ली में बर्बाद करने की एक नई योजना लेकर आई है.

नर्सरी दाखिला: स्कूलों में उपलब्ध सीटों की तुलना में आए कई गुना अधिक आवेदन, जनवरी में आएगी पहली लिस्ट

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

राजधानी दिल्ली के 1741 से अधिक निजी स्कूलों में नर्सरी, केजी और पहली कक्षा में दखिले के लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि शुक्रवार को समाप्त हो गई. इसके बाद अब स्कूलों ने दाखिले के लिए प्राप्त आवेदनों के आधार पर पहली सूची तैयार करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है. पहली सूची तैयार करने के लिए स्कूल पॉइंट्स क्राइटेरिया के आधार पर अंक देकर सूची तैयार कर रहे हैं. 17 जनवरी को पहली दाखिला सूची जारी की जाएगी. लेकिन, इसमें सबसे बड़ी बात यह है कि स्कूलों के पास उपलब्ध सीटों की तुलना में कई गुना ज्यादा दाखिला आवेदन प्राप्त हुए हैं. इसलिए स्कूलों को सूची तैयार करने में काफी मशक्कत करनी पड़ रही है. हालांकि, स्कूल सिबलिंग्स और एल्यूमिनी के आधार पर 25% अतिरिक्त अंक देकर पहले से स्कूल में पढ़ चुके या मौजूदा समय में पढ़ रहे बच्चों के भाई-बहन को वरीयता दे रहे हैं.

नर्सरी दाखिला की प्रक्रिया को लेकर आईपी एक्सटेंशन स्थित नेशनल विक्टर पब्लिक स्कूल की निदेशक निधि पांचाल ने बताया कि उनके यहां पर नर्सरी दाखिले के लिए कुल 200 सीटें हैं, जिनमें से 50 सीटें ईडब्ल्यूएस कैटेगरी के लिए आरक्षित हैं. अभी फिलहाल डेढ़ सौ सीटों के लिए दाखिला प्रक्रिया चल रही है. इन 150 सीटों पर दाखिले के लिए करीब 1500 आवेदन आए हैं. अब पॉइंट्स क्राइटेरिया के आधार पर पॉइंट देकर पहली दाखिला सूची तैयार करेंगे और 17 जनवरी को निदेशालय के निदेर्शानुसार जारी की जाएगी. निधि पांचाल ने बताया ने बताया कि इस साल भी लगभग पिछले साल के बराबर ही दाखिला आवेदन प्राप्त हुए हैं. उन्होंने बताया कि कुल 200 सीटों में से 20% सीटें मैनेजमेंट कोटे की भी रहती हैं. इसलिए 40 सीटों पर दाखिला मैनेजमेंट कोटे के माध्यम से होगा. उन्होंने बताया कि ईडब्ल्यूएस कैटेगरी के दाखिलों के लिए निदेशालय द्वारा अलग से अप्रैल माह में दाखिला प्रक्रिया शुरू की जाती है. इसलिए 50 सीटों पर दाखिले अप्रैल माह के आसपास ही होंगे.

उत्तर रेलवे

निविदा सूचना

उप मुख्य अभियन्ता/निर्माण/उत्तर रेलवे, तिलक ब्रिज, नई दिल्ली द्वारा कार्य के लिए निर्धारित प्राफार्मा पर एकल पैकेट खुली ई–निविदा आमंत्रित की जाती है।

1	कार्य का नाम व स्थान	दिल्ली मंडल के दिल्ली–रेवाड़ी खंड पर उप मुख्य अभियंता/निर्माण/तिलक ब्रिज के अधिकार क्षेत्र में के संबंध में "उत्तर रेलवे के साथ डीएफसी की कनेक्टिविटी के संबंध में कुंभावास यार्ड कार्य" जिसमें सिविल कार्य, तटबंधों को भरने और काटने में मिट्टी कार्य सहित स्थायी मार्ग कार्य, कंबल सामग्री के संघनन सहित आपूर्ति और फैलाव, पत्थर की गिट्टी की आपूर्ति और डालना, एलएचएस का विस्तार, रिटेनिंग दीवारों आदि का प्रावधान, सेवा भवन, उच्च स्तरीय प्लेटफार्मों का प्रावधान, जलनिकासी प्रणाली का प्रावधान, रेलवे ट्रैक/टर्न आउट और अन्य सभी स्थायी मार्ग स्थापनाएं आदि, मौजूदा भवनों और मौजूदा पी–वे अवसंरचनाओं के सभी प्रकार के निराकरण और अन्य सभी संबद्ध कार्य आदि शामिल हैं ।
2	कार्य की अनुमानित लागत	रु. 49.96 करोड़
3	धरोहर राशि	रु. 2647900/–
4	कार्य निष्पादन की अवधि	18 (अठारह) माह
5	ई–निविदा जमा करने व खुलने का समय, तारीख व स्थान	निविदा दिनांक 15.01.2025 तक आईआरईपीएस वेब साइट **www.ireps.gov.in** पर 11:30 बजे तक अपलोड की जा सकती हैं। निविदाकर्ता ई निविदा में भाग ले सकते हैं, जो दिनांक 15.01.2025 को 11:30 बजे खोली जाएगी।
6	विस्तृत निविदा सूचना एवं निविदा दस्तावेज	विस्तृत ई–निविदा दस्तावेज **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। उपरोक्त निविदाओं के दस्तावेज आईआरईपीएस वेबसाइट पर प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए दिनांक 01.01.2025 से 15.01.2025 तक उपलब्ध होंगे। उपरोक्त निविदाओं के संबंध में अन्य सभी नियम और शर्ते निविदा दस्तावेज में दी गयी हैं। विस्तृत निविदा सूचना को उपरोक्त कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर भी देखा जा सकता है।

सं. 490–एसीएस–सी–कुभांवास–टीकेजे दिनांक 20.12.2024

3900/24

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

पूर्वांचल समाज को बर्बाद करने के लिए भाजपा ने अपने अधिकारियों से एमसीडी में आदेश पास करा, पहचान करने और हटाने को कहा- संजय सिंह

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी का कहना है कि भाजपा दिल्ली में रह रहे पूर्वांचल समाज के लोगों को उजाड़ने की साजिश कर रही है। पार्टी के वरिष्ठ नेता संजय सिंह ने कहा कि भाजपा संसद में पूर्वांचल समाज के लोगों को रोहिंग्या कहकर अपमानित करने के बाद अब उनके बच्चों को प्रताड़ित करना और उनके घरों पर बुल्डोजर चलाना चाहती है। पूर्वांचल समाज को बर्बाद करने के लिए भाजपा ने अपने अधिकारियों से एमसीडी में आदेश पास कराया है कि निगम के स्कूलों में पढ़ रहे बांग्लादेशी प्रवासियों की पहचान की जाए और उनके अतिक्रमण को हटाया जाए। अभी कुछ दिन पहले ही भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा है कि यूपी, बिहार के लोग बांग्लादेशी और रोहिंग्या हैं, इनके वोट कटवाएंगे। अगर भाजपा को बांग्लादेशी और रोहिंग्याओं को पकड़ना होता तो ये बक्करवाला में जाते, जहां इनकी केंद्र सरकार ने इनको बसाया है और तमाम सुविधाएं दी हैं। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि अगर भाजपा अपनी गंदी साजिशों को बंद नहीं करेगी तो आम आदमी पार्टी पूर्वांचल समाज के लिए आर-पार की लड़ाई लड़ेगी।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और सांसद संजय सिंह ने पार्टी मुख्यालय में प्रेसवार्ता कर कहा कि भाजपा यूपी, बिहार और पूर्वांचलियों के प्रति अपने घृणित मानसिकता से बाहर नहीं आ रही है और भाजपा संसद में विवाद के बाद पूर्वांचलियों को दिल्ली में बर्बाद करने की एक नई योजना लेकर आई है। पूर्वांचलियों के बच्चों को प्रताड़ित करने की योजना लेकर आई है। उनका घर, दुकान उजाड़ने की योजना लेकर आई है। उनके घरों में पर बुलडोजर चलाने की योजना लेकर आई है। मैं भाजपाइयों को सावधान करना चाहता हूं कि ऐसी हरकत मत करो, वरना हम लोग सीधी लड़ाई के लिए मैदान में उतरेंगे और उसका अंजाम बहुत बुरा होगा। हमारे यूपी, बिहार के लोगों को बांग्लादेशी कहकर अपमानित करना बंद करो। अगर भाजपाइयों ने उनको उजाड़ने और उनके बच्चों को अपमानित करने की कार्रवाई, उनके ऊपर बुलडोजर चलाने की कार्रवाई करने की कोशिश की तो इसका अंजाम बहुत बुरा होगा।

संजय सिंह ने आगे कहा कि सब जानते हैं कि एलजी के अधीन सारे अधिकारी हैं। इसलिए भाजपा ने हमारे पूर्वांचल और यूपी, बिहार के बच्चों को अपमानित करने और उनका घर उजाड़ने के लिए एमसीडी से एक आदेश पारित कराया है। इसमें लिखा हुआ है, ष्शिक्षा विभाग को नगर निगम स्कूलों में दाखिला देते समय अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों की पहचान करने के लिए जरूरी कदम उठाने होंगे। इसके साथ ही, यह भी अनुरोध किया जाता है कि स्कूल में अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों के बच्चों की पहचान करने के लिए उचित पहचान और सत्यापन अभियान भी चलाया जाए। सभी को अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों द्वारा की गई अतिक्रमण को हटाने के लिए उचित कार्रवाई की जाए। स्वास्थ्य विभाग जन्म पंजीकरण और जन्म प्रमाणपत्र जारी करते समय सभी एहतियाती कदम उठाए और यह सुनिश्चित करे कि अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों को जन्म प्रमाणपत्र न जारी किया जाए। संजय सिंह ने कहा कि यह योजना अतिक्रमण अभियान के नाम पर रेहड़ी पटरी पर दुकान लगाकर अपना जीवन बसर करने वाले यूपी, बिहार के लोगों को उजाड़ने की है। यह योजना झुग्गी बस्तियों में रहने वाले यूपी बिहार के लोगों को उजाड़ने की है। यह स्कूलों में यूपी, बिहार और पूर्वांचल के बच्चों को अपमानित करने की योजना है। यह योजना पूर्वांचलियों के खिलाफ है। क्योंकि भाजपा के अध्यक्ष जेपी नड्डा ने संसद में कहा है कि पूर्वांचली बांग्लादेशी रोहिंग्या हैं।

दिल्ली में सुबह कोहरा छाया, न्यूनतम तापमान 7.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली में शनिवार सुबह कोहरा छाया रहा और न्यूनतम तापमान 7.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो इस मौसम के औसत तापमान से एक डिग्री कम है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने यह जानकारी दी। दिल्ली की वायु गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार, शुक्रवार को वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 429 से घटकर 392 यानी बेहद खराब श्रेणी में आ गया। शून्य से 50 के बीच एक्यूआई को अच्छा, 51 से 100 को संतोषजनक 101 से 200 को मध्यम, 201 से 300 को खराब, 301 से 400 को बेहद खराब और 401 से 500 को गंभीर माना जाता है। आईएमडी ने बताया कि सुबह साढ़े आठ बजे आर्द्रता का स्तर 100 प्रतिशत दर्ज किया गया। मौसम अधिकारी ने दिन में आसमान साफ रहने तथा अधिकतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान जताया है।

दलित समाज के बच्चे डॉ. अंबेडकर स्कॉलरशिप से दुनिया की किसी भी यूनिवर्सिटी में पढ़ सकेंगे : केजरीवाल

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनावी से पहले आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने एक और बड़ा ऐलान कर दलित समाज के लोगों को सीधे तौर पर साधने की कोशिश की है। उन्होंने शनिवार को डॉ. अंबेडकर स्कॉलरशिप योजना की घोषणा की।

आप संयोजक ने बताया कि अब दिल्ली के दलित समाज के बच्चे दुनिया की किसी भी यूनिवर्सिटी में पढ़ाई कर सकते हैं। पैसों की वजह से उन्हें उच्च शिक्षा से वंचित नहीं रहना पड़ेगा। इसके लिए उन बच्चों को उस यूनिवर्सिटी में सिर्फ एडमिशन लेना है और उसके बाद उनके आने-जाने और पढ़ाई का खर्चा दिल्ली सरकार उठाएगी।

अरविंद केजरीवाल ने एक बड़ी जनसभा के बीच यह ऐलान किया। उन्होंने कहा, आज मैं चाहता हूं कि कोई भी दलित समाज का बच्चा पैसे की कमी की वजह से उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित न रहे। इसलिए आज में डॉ. अंबेडकर स्कॉलरशिप का ऐलान करता हूं।

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि जिस तरीके से बाबासाहेब ने गरीबी से निकलकर विदेश की दो अलग-अलग यूनिवर्सिटी से डिग्रियां हासिल कीं, वह अपने-आप में एक बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकारी कर्मचारियों के बच्चों को भी इसका पूरा लाभ मिलेगा और वे बच्चे भी विदेश की किसी भी यूनिवर्सिटी में पढ़ाई कर सकते हैं।

दलित छात्रों के विदेश में पढ़ाई का पूरा खर्च उठाएंगे : केजरीवाल

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले आम आदमी पार्टी लगातार घोषणाएं कर रही है। आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को आंबेडकर छात्रवृत्ति की घोषणा की है। इसके तहत दलित छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए विदेश में दाखिले मिलने पर पूरा खर्च सरकार उठाएगी। केजरीवाल ने कहा कि जिस तरह भाजपा नेताओं ने बाबा साहेब आंबेडकर का अपमान किया है, उसका जवाब मैं दलित छात्रों के लिए आंबेडकर छात्रवृत्ति योजना की घोषणा करके दे रहा हूं। कार्यक्रम के दौरान मनीष सिसोदिया सहित अन्य आप नेता मौजूद रहे। केजरीवाल ने कहा कि बाबा साहेब ने शिक्षा को सबसे ज्यादा तवज्जो दिया। उन्होंने कहा था कि अगर हमारे समाज को आगे बढ़ना है तो शिक्षा ही ऐसी चीज है जो हमारे समाज को एक पीढ़ी के अंदर सबको बराबर खड़ा कर सकती है। उन्होंने अपनी जिंदगी में शिक्षा पाने के लिए जितने संघर्ष किए, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। उनके जमाने में छुआछूत की परंपरा थी। उन्हें कक्षा के बाहर बैठकर पढ़ाई करनी होती थी। उस स्थिति में उन्होंने मुंबई से स्नातक कर विदेश में दो-दो विश्वविद्यालय से मानद की उपाधि हासिल की। केजरीवाल ने कहा कि जब वह लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में पढ़ाई करने गए तो उनके पास पैसों की कमी हो गई। पढ़ाई बीच में छोड़कर आना पड़ा। फिर पैसे की व्यवस्था करके वह दोबारा गए और पढ़ाई पूरी की। आज मैं चाहता हूं की कोई भी दलित समाज का बच्चा पैसे की कमी की वजह से उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित न रह जाए। इसलिए मैं डॉ. आंबेडकर छात्रवृत्ति योजना का ऐलान करता हूं। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि कुछ लोगों का सवाल है कि इस योजना का फायदा सरकारी विभागों में काम कर रहे दलित कर्मचारियों के बच्चों को मिलेगा की नहीं। मैं समझता हूं कि कोई भी ईमानदार सरकारी कर्मचारी अपने बच्चों को विदेश में बिना छात्रवृत्ति के पढ़ाने की हैसियत नहीं रखता है। इसलिए यह योजना उनपर भी लागू होती है। उन्होंने कहा कि बच्चों को सिर्फ पढ़ाई करनी है। बाबा साहेब के पदचिह्नों पर चलना है। पूर्व सीएम ने कहा कि भाजपा नेताओं ने संसद के अंदर बाबा साहेब का अपमान किया। उन बाबा साहेब का जिनके संविधान की वजह से देश चल रहा है, जिनकी वजह से संसद है। उन्होंने कहा कि भाजपा नेता के उस बयान ने करोड़ों लोगों को दुख पहुंचाया है। मैं बाबा साहेब आंबेडकर का अपने आप को भक्त मानता हूं।

बाबा साहेब के सपनों को पूरा कर रहे : आतिशी

दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने आंबेडकर छात्रवृत्ति योजना पर कहा कि इस देश के संविधान ने हमें मतदान का अधिकार दिया है। बाबा साहेब ने देश को संविधान दिया। बाबा साहेब हमें यह नारा दे गए कि शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो। बाबा साहेब का सपना था कि हर बच्चे को अच्छी शिक्षा मिल सके। आजादी के 75 साल बाद भी सिर्फ एक ही राज्य में उसे पूरा किया जा रहा है। वह सरकार दिल्ली की सरकार और नेता अरविंद केजरीवाल हैं। यहां पर बजट का 25 फीसदी हिस्सा शिक्षा पर खर्च किया जा रहा है।

पूर्व सैनिकों ने साझा किए अपने अनुभव, देशभक्ति के जज्बे को किया सलाम

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

पूर्व सैनिकों ने अपने सेवाकाल के अनुभवों को साझा करते हुए उन दिनों को याद किया जब देशभक्ति का जज्बा दिलों में धड़कता था और हर चुनौती का सामना करने का हौसला कूट-कूट कर भरा हुआ था। यह विचार उन्होंने बापरोला स्थित जय विहार एक्सटेंशन में पंचकोसी फाउंडेशन द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी हमारे पूर्व सैनिक-हमारा गौरव में व्यक्त किए।

इस कार्यक्रम में करीब दो दर्जन से अधिक पूर्व सैनिकों ने 1971 के भारत-पाक युद्ध, कारगिल युद्ध, सीमाओं की चौकसी, और आपातकालीन परिस्थितियों में अपनी भूमिका का जिक्र किया। उनके संस्मरणों ने कार्यक्रम में मौजूद लोगों के दिलों को गर्व और प्रेरणा से भर दिया। स्थानीय पूर्व सैनिकों में राजहंस, देवेंद्र सिंह गुसांई, धर्म सिंह, बीडी जोशी, पीसी जोशी, एस के मंडल, उमेश कुमार, जेएस रावत, एस के तिवारी, चंद्रमा भक्त, लक्ष्मण तिवारी, राम सजीवन, दिलीप सिंह तंवर, नरेंद्र कोठारी, मनीष राठौर, रमेशचंद्र, जोगिंद्र सिंह, गजेंद्र कुमार आदि शामिल थे।

पंचकोसी फाउंडेशन के अध्यक्ष सुशील कुमार देव ने इस मौके पर कहा कि इन सभी पूर्व सैनिकों को आगामी 19 जनवरी 2025 को आयोजित गणतंत्र दिवस उत्सव में सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि फाउंडेशन हर साल गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस को उत्सव की तरह मनाता है, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं, चित्रकला प्रदर्शनी, और स्कूली बच्चों द्वारा प्रस्तुत भव्य सांस्कृतिक देशभक्ति कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम में शामिल सभी ने पूर्व सैनिकों के योगदान को सराहा और उनके अनुभवों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। पंचकोसी फाउंडेशन का यह प्रयास न केवल पूर्व सैनिकों का सम्मान है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए देशभक्ति और समर्पण का संदेश भी है।

अरविंद केजरीवाल की बढ़ी मुश्किल: एलजी ने ईडी को आप संयोजक के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी दी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल की मुश्किलें बढ़ गई हैं। दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को आबकारी नीति मामले में पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी दे दी है। 5 दिसंबर को प्रवर्तन निदेशालय ने अरविंद केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी मांगी थी।

30 जनवरी को केजरीवाल की एक याचिका पर हाईकोर्ट करेगा सुनवाई

दिल्ली हाईकोर्ट 30 जनवरी 2025 को दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति मामले में ईडी के आरोपपत्र पर संज्ञान लेने के आदेश के खिलाफ अरविंद केजरीवाल की याचिका पर सुनवाई करेगा। न्यायमूर्ति मनोज कुमार ओहरी को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के वकील ने सूचित किया कि अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू शुक्रवार को प्रस्तुतियां देने वाले थे, लेकिन वह नहीं पहुंच सके।

अदालत ने केजरीवाल के वकील के अनुरोध पर मामले को शुरू में 19 फरवरी 2025 के लिए सूचीबद्ध किया था। इसके बाद 30 जनवरी को पोस्ट किया है। केजरीवाल के वकील ने स्थगन के ईडी के अनुरोध का विरोध करते हुए कहा, यहां एक व्यक्ति है, जिसके चुनाव जनवरी में आ रहे हैं और वह मामले पर बहस करने के लिए दूसरे पक्ष का अंतहीन इंतजार कर रहा है। अदालत ने आप नेता मनीष सिसौदिया की इसी तरह की याचिका पर भी 30 जनवरी 2025 की सुनवाई तय की है। केजरीवाल और सिसोदिया ने ट्रायल कोर्ट के आदेश को रद्द करने की मांग की है केजरीवाल और सिसोदिया दोनों ने ट्रायल कोर्ट के आदेश को रद्द करने की मांग की है और तर्क दिया है कि ट्रायल कोर्ट ने उनके अभियोजन के लिए मंजूरी के अभाव में आरोपपत्र पर संज्ञान लिया, जो कानून में अनिवार्य है क्योंकि कथित अपराध के समय वे लोक सेवक थे। हालांकि, ईडी की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा था कि केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी मिल गई है और वह एक हलफनामा दाखिल करेंगे।

डीयू में मासिक धर्म अवकाश नीति लागू करने की मांग

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षकों ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को एक पत्र लिखकर मासिक धर्म अवकाश नीति लागू करने की अपील की है। यह पत्र दिल्ली विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद की सदस्य डॉ. सीमा दास, अकादमिक परिषद की सदस्य डॉ. ममता चौधरी और जीसस एंड मैरी कॉलेज की स्टाफ एसोसिएशन की अध्यक्ष डॉ. रिचा राज ने संयुक्त रूप से लिखा है। पत्र में महिलाओं के मासिक धर्म के दौरान होने वाली असुविधा, दर्द और अन्य शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों के बारे में अवगत कराया गया है। पत्र में कहा गया है कि महिला शिक्षकों के लिए प्रति माह कम से कम दो दिन के भुगतान सहित मासिक धर्म अवकाश दिया जाए। पत्र में जापान, दक्षिण कोरिया, स्पेन और आयरलैंड जैसे देशों का हवाला देते हुए कहा गया है कि इन देशों ने ऐसी नीतियां लागू कर कार्यस्थल पर महिलाओं की जरूरतों को समझने और उन्हें सहयोग देने का उदाहरण प्रस्तुत किया है। साथ ही, भारत के कई राज्यों में भी ऐसी नीतियां पहले से लागू हैं।

LGY वीके सक्सेना ने 500 से अधिक शिक्षकों से की बातचीत, ठएढ से जुड़े मुद्दों पर की चर्चा

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने हाल आज दिल्ली के निजी स्कूलों के प्रधानाचार्यों और शिक्षकों के साथ एक महत्वपूर्ण संवाद सत्र आयोजित किया. इस सत्र में 500 से अधिक प्रधानाचार्यों और शिक्षकों ने सहभागिता की, जो दिल्ली के 5000 से अधिक निजी स्कूलों का प्रतिनिधित्व करते हैं. इस संवाद श्रृंखला के अंतर्गत, उपराज्यपाल ने शिक्षा की गुणवत्ता, छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य, और सरकारी नीतियों के क्रियान्वयन पर चर्चा की.

वीके सक्सेना ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर संवाद के संदर्भ में जानकारी साझा करते हुए लिखा, ह्लहमें एनईपी 2020 के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों पर चर्चा करने का अवसर मिला. साथ ही, हमने परिवहन और बुनियादी ढांचे की बाधाओं जैसे अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार किया.ह्व शिक्षकों ने बम की धमकियों और साइबर अपराधों के बारे में चिंता व्यक्त की और पुलिस की भूमिका की सराहना की. उपराज्यपाल ने यह भी कहा कि अतिरिक्त कक्षाओं के लिए फ्लोर एरिया रेशियो (एफएआर) के मुद्दे का समाधान निकालने के लिए पहले ही कदम उठाए जा चुके हैं. उन्होंने शिक्षकों द्वारा प्रस्तावित प्रारंभिक चरण के अनुसंधान और विकास के विचार को प्रेरणादायक बताया. उनके अनुसार, यह दृष्टिकोण हमारे युवा छात्रों के लिए नई संभावनाओं का द्वार खोल सकता है.

सक्सेना ने समाज में शिक्षा के संदर्भ में महत्वपूर्ण बात की, ह्लहमें शिक्षा में सामाजिक विभाजन से बचना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि समाज के सभी वर्गों के हितों को ध्यान में रखा जाए.ह्व उन्होंने शिक्षा जगत के सभी सदस्यों को अधिकारों के प्रति जागरूक रहने एवं मुखर होने के लिए प्रेरित किया. उपराज्यपाल वीके सक्सेना का यह संवाद कार्यक्रम पिछले एक साल से चल रहा है, जिसमें विभिन्न समुदायों से संवाद स्थापित किया जा रहा है. यह पहल न केवल निजी स्कूलों के प्रधानाचार्यों और शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह छात्रों के भविष्य को भी उज्ज्वल बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती है.

विराज प्रोफाइल्स को 2024-2025 के लिए विनिर्माण क्षेत्र में सबसे पसंदीदा कार्यस्थल के रूप में मान्यता दी गई

नई दिल्ली, झ स्टेनलेस स्टील विनिर्माण में वैश्विक अग्रणी विराज प्रोफाइल्स को 2024-2025 के लिए विनिर्माण क्षेत्र में सबसे पसंदीदा कार्यस्थल के रूप में अपनी मान्यता की घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है। यह प्रतिष्ठित सम्मान हाल ही में नई दिल्ली के द ललित होटल में आयोजित मार्क्समेन के सबसे पसंदीदा कार्यस्थल पुरस्कार समारोह में प्रदान किया गया ।यह पुरस्कार श्री दिलीप घोरपड़े, समूह सीएचआरओ और श्री हरीश आहूजा, वरिष्ठ प्रबंधक, कॉर्पोरेट संचार ने विराज प्रोफाइल्स की ओर से प्राप्त किया। यह पुरस्कार समावेशी, रचनात्मक और सशक्त कार्यस्थल संस्कृति विकसित करने में कंपनी के समर्पण को मान्यता देता है जो कर्मचारी खुशी और कॉर्पोरेट सफलता दोनों को बढ़ावा देता है ।मार्क्समेन के सबसे पसंदीदा कार्यस्थल पुरस्कार उन संगठनों का सम्मान करते हैं जो उच्च-विश्वास और उच्च-प्रदर्शन कार्यस्थल वातावरण बनाने में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं। विराज प्रोफाइल की उपलब्धि कर्मचारी जुड़ाव, स्थायी कार्यस्थल प्रथाओं और निरंतर सुधार की संस्कृति में इसके नेतृत्व को उजागर करती है। पेशेवर विकास, विविधता और कर्मचारी कल्याण में कंपनी की सक्रिय पहल ने विनिर्माण क्षेत्र में नए मानक स्थापित किए हैं ।मान्यता के लिए आभार व्यक्त करते हुए, श्री दिलीप घोरपड़े ने कहा, ह्लयह पुरस्कार लोगों पर केंद्रित कार्यस्थल बनाने पर हमारे फोकस का प्रमाण है जो सहयोग, नवाचार और अखंडता को महत्व देता है। विराज प्रोफाइल में, हमारे कर्मचारी हमारी सफलता की रीढ़ हैं, और यह सम्मान उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण को दशार्ता है ह्वश्री हरीश आहूजा ने कहा, ह्लयह उपलब्धि हमें एक ऐसे संगठन के रूप में विकसित होने के लिए प्रेरित करता है जो न केवल व्यवसाय में बल्कि कर्मचारी कल्याण और विकास में भी उत्कृष्टता प्राप्त करता है। हम मार्क्समेन डेली को हमारे प्रयासों को मान्यता देने के लिए धन्यवाद देते हैं।

विराज प्रोफाइल के बारे में : विराज प्रोफाइल एक अग्रणी स्टेनलेस स्टील निमार्ता है, जो अपने विविध उत्पाद पोर्टफोलियो और अत्याधुनिक विनिर्माण प्रौद्योगिकियों के लिए जाना जाता है। 90 से अधिक देशों में वैश्विक उपस्थिति के साथ, कंपनी स्टेनलेस स्टील उद्योग में गुणवत्ता, नवाचार और स्थिरता की पहचान है। उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्ध, विराज प्रोफाइल्स दीर्घकालिक मूल्य सृजन को बढ़ावा देने के लिए अपने कार्यबल और संचालन में निवेश करना जारी रखता है।

मार्क्समेन के सबसे पसंदीदा कार्यस्थल पुरस्कारों के बारे में: मार्क्समेन डेली द्वारा सबसे पसंदीदा कार्यस्थल पुरस्कार उन संगठनों का सम्मान करते हैं जो विभिन्न उद्योगों में असाधारण कार्यस्थल प्रथाओं का प्रदर्शन करते हैं। यह पुरस्कार उन कंपनियों को मान्यता देता है जो कर्मचारी कल्याण को प्राथमिकता देती हैं, विश्वास को बढ़ावा देती हैं और नवाचार को बढ़ावा देती हैं, कार्यस्थल प्रबंधन में उत्कृष्टता के नए मानक स्थापित करती हैं।

बांसुरी स्वराज ने पर निशाना साधा- चुनाव से पहले दिल्ली में किया बदलाव का आह्वान

नई दिल्ली। आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए आम आदमी पार्टी, भाजपा और कांग्रेस ने अपनी-अपनी तैयारियां तेज कर दी है. इस बीच, सभी पार्टियों के बीच जुबानी जंग भी जारी है. अब दिल्ली बीजेपी सांसद बासुंरी स्वराज ने केजरीवाल शासित आम आदमी पार्टी की सरकार पर निशाना साधा है. उन्होंने कहा कि दिल्ली नेतृत्व परिवर्तन का इंतजार कर रही है. भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज ने यह भी दावा किया कि लोग आप सरकार के बहाने से तंग आ चुके हैं. करोल बाग के बीकानेर चौक पर मीडिया से बात करते हुए स्वराज ने कहा, हमने सिग्नल पर लोगों से बात की और पर्चे बांटे. अब हम व्यापारियों से मिलने जा रहे हैं. भाजपा चुनाव घोषणापत्र तैयार करने की अपनी तैयारियों के तहत विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से संपर्क कर रही है.

रैपिडो कैब ड्राइवर की हत्या करने वाले आरोपी गिरफ्तार, 400 रुपये के लिए उतारा था मौत के घाट

नई दिल्ली। उत्तर पूर्वी दिल्ली के सोनिया विहार इलाके में 17 दिसंबर की रात में हुई एक दिल दहला देने वाली घटना ने सभी को स्तब्ध कर दिया है. महज 400 रुपये की किराए की रकम के विवाद को लेकर एक रैपिडो कैब ड्राइवर, संदीप की चाकू से गोदकर निर्मम हत्या कर दी गई. यह घटना रात 1:15 बजे के आसपास हुई, जब संदीप तीन यात्रियों को लेकर सोनिया विहार के नानकसर टिकट पर पहुंचे थे. संदीप, जो मूल रूप से उत्तर प्रदेश के औरैया जिले का निवासी था, जहांगीरपुरी में रहकर कैब चलाता था. जब उन्होंने यात्रियों से 400 रुपये किराया मांगा, तो एक यात्री ने न केवल आपत्ति जताई, बल्कि उन्होंने संदीप के साथ मारपीट करना भी शुरू कर दिया. हमलावर ने अपने दो साथियों को भी बुला लिया और तीनों ने मिलकर संदीप पर हमला कर दिया. इस हमले में संदीप को चाकू से गंभीर रूप से घायल कर दिया गया. अस्पताल में मौतः घटना के तुरंत बाद पुलिस ने घायल संदीप को जग प्रवेश चंद अस्पताल पहुंचाया, जहां उसकी हालत नाजुक बनी रही. दुखद रूप से, इलाज के दौरान संदीप ने दम तोड़ दिया. इस घटना ने संदीप के परिवार झकझोर कर रख दिया. पुलिस कार्रवाईः उत्तर पूर्वी दिल्ली के डीसीपी राकेश पावरिया ने जल्द ही मामला दर्ज करने और आवश्यक जांच शुरू करने की जानकारी दी. शव का पोस्टमार्टम कर परिजनों को सौंप दिया गया है. पुलिस ने घटना स्थल पर स्थित सीसीटीवी फुटेज और आसपास के लोगों से पूछताछ की.जांच के दौरान, यह पाया गया कि संदीप जिस मार्ग से आया था, वह खजूरी चौक से होकर गुजरता था, और घटना 2 पुस्ता सोनिया विहार के पास हुई थी. पुलिस ने प्रतीक नाम के एक व्यक्ति को हिरासत में लिया, जिसने बताया कि उसने कैब बुक की थी जबकि वह अपने दोस्तों के साथ शराब पी रहा था.

अटल गौरव सम्मान श्री अरबिंदो कॉलेज के प्रोफेसर हंसराज सुमन को दिया गया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

ग्रेस इंडिया एजुकेशनल चैरिटेबल न्यास (रजि.) के तत्वावधान में शिक्षा, साहित्य, फिल्म, पत्रकारिता, समाजसेवा, अभिनय व शोध के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वालों को भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की 100 वीं जयंती के अवसर पर वाईएमसीए–नई दिल्ली में ग्रेस इंडिया सम्मान समारोह - 2024 के अंतर्गत अटल गौरव सम्मान दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री अरबिंदो कॉलेज में प्रोफेसर हंसराज सुमन को दिया गया। संस्था के चेयरमैन डॉ. शशिधर मेहता डॉ. सुरेंद्र सिंह डॉ. जितेंद्र कुमार, श्री राजकुमार सरोज ने उन्हें शॉल, स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान पत्रकारिता व शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य करने पर दिया गया। बता दें कि दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रो. सुमन एक महत्त्वपूर्ण नाम है। ये पिछले तीन दशकों से पत्रकारिता व अध्यापन कार्य कर रहे हैं। इनके द्वारा आधुनिक पत्रकारिता पर लिखी गई पुस्तक हिन्दी पत्रकारिता : प्रौद्योगिकी परिवर्तन का प्रभावह्व जल्द ही प्रकाशित हो आ रही है । यह पुस्तक वर्तमान न्यू मीडिया पर आधारित है। प्रो.हंसराज सुमन ने अटल गौरव सम्मान मिलने पर न्यास के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि इस तरह के सम्मान से पत्रकारों और अध्यापन से जुड़े व्यक्तियों को बेहतर कार्य करने का प्रोत्साहन मिलेगा। इससे भारतीय मीडिया की वैश्विक पहचान बनेगी।

न्यास के अध्यक्ष डॉ.शशिधर मेहता ने बताया कि यह सम्मान प्रति वर्ष पत्रकारिता, समाजसेवा, फिल्म, अभिनय, साहित्य व शोध कार्य करने वालों को दिया जाता है। यह संस्थान अत्यंत पिछड़े, दलित समुदाय के संविधान प्रदत्त अधिकारों को दिलाने तथा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है तथा इस क्षेत्र में कार्य करने वालों को पुरस्कृत कर प्रोत्साहित भी करता रहता है। भारतीय समाज में पूरी तरह उपेक्षित कर दिए गए समाज को मुख्यधारा से जोड़ना बहुत जरूरी है। प्रो.हंसराज सुमन ऐसे समाज के बीच जाकर उन्हें संविधान प्रदत्त अधिकारों से अवगत कराते रहे हैं तथा शिक्षा के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते रहे हैं। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सच्चे अनुयायी के रूप में प्रो.हंसराज सुमन ने बाबा साहेब के पद चिह्नों पर चलते हुए दलित और पिछड़े समाज के बीच जागरूकता के लिए बहुत काम किया है। न्यास ने उनके महत्वपूर्ण सामाजिक कार्यों को देखते हुए ग्रेस इंडिया सम्मान के तहत ह्लअटल गौरव सम्मान -2024ह्व प्रोफेसर हंसराज सुमन को देने का निर्णय लिया है। अटल बिहारी वाजपेयी जी की 100 वीं जयंती के अवसर पर न्यास द्वारा बनाई गई ज्यूरी ने इनके नाम को प्रस्तावित किया था। संस्था ऐसे व्यक्ति को सम्मानित कर अपने को गौरवान्वित अनुभव करती है । प्रो. हंसराज सुमन दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध श्री अरबिंदो कॉलेज हिन्दी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है। ये विभिन्न विश्वविद्यालयों में मीडिया अध्यापन, पाठ्यक्रम का निर्माण व सेमिनार में पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति पर अपना पक्ष रखते हैं।

प्रो.. सुमन आम आदमी पार्टी के शिक्षक संगठन के पूर्व अध्यक्ष व ऑल इंडिया यूनिवर्सिटीज एंड कॉलेजिज एससी/एसटी, ओबीसी टीचर्स एसोसिएशन के भी नेशनल चेयरमैन है, फोरम ऑफ एकेडेमिक्स फॉर सोशल जस्टिस के चेयरमैन भी हैं। ये पाँच वर्ष तक नॉन कॉलेजिएट सेंटर के प्रभारी भी रहे है। प्रो.सुमन वर्ष-2015–2017 और 2017–2019 तक दिल्ली विश्वविद्यालय की सर्वोच्च संस्था एकेडेमिक काउंसिल के सदस्य भी रह चुके हैं। प्रो. सुमन दिल्ली विश्वविद्यालय की अनेक कमेटियों में रहकर अपने दायित्व का पूर्णतः निर्वाह करते रहे हैं। एडमिशन कमेटी, अपॉइंटमेंट्स और प्रमोशन कमेटी, मेडिकल कमेटी, फंक्शन कमेटी, सलेब्स कमेटी के अलावा प्रो. सुमन डीयू की टास्क फोर्स कमेटी के भी सदस्य रहे हैं। प्रो. सुमन को राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक सम्मान व अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। इन्हें दिल्ली सरकार का सर्वोच्च सम्मान डॉक्टर अम्बेडकर अवार्ड -2015 दिया जा चुका है। डॉ.राधा कृष्णन अवार्ड, योगेश गुप्त साहित्य रत्न अवार्ड, संत रविदास सम्मान, संत कबीर सम्मान के अलावा लगभग 100 संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। शिक्षण के क्षेत्र में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाते हुए प्रो. सुमन ने 10 पुस्तकों का सम्पादन किया है तथा राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनके 100 से अधिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। साथ ही प्रो. सुमन ने न्यू मीडिया विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी पत्रकारिता पर प्रौद्योगिकी परिवर्तन का प्रभाव विषय पर पीएचडी की है।

राष्ट्रीय ऊर्जा मेले में 10 राज्यों के छात्रों और शिक्षकों ने ऊर्जा संरक्षण का संदेश दिया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

नई दिल्ली-राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस के अवसर पर, टाटा पावर ने नई दिल्ली में राष्ट्रीय ऊर्जा मेला 2024 का भव्य आयोजन किया। इस मेले में देश भर के 10 राज्यों के 150 से अधिक स्कूलों के 1,000 से अधिक छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया। यह मेला टाटा पावर के चर्चित क्लब एनर्जी कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया, जो सस्टेनेबल इज अटेनेबल अभियान के अंतर्गत कंपनी की सतत विकास और जागरूकता बढ़ाने की प्रतिबद्धता का हिस्सा है।

मेले का उद्देश्य युवाओं को ऊर्जा संरक्षण के प्रति प्रेरित करना और पर्यावरण के लिए जिम्मेदारी का भाव विकसित करना था। कार्यक्रम में कई प्रेरणादायक गतिविधियां आयोजित की गईं, जिनमें प्रतिस्पर्धात्मक खेल, रचनात्मक कार्यशालाएं और सांस्कृतिक प्रदर्शन शामिल थे। यह मेला छात्रों को स्थिरता और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए समाधान सोचने और अपनाने की दिशा में प्रोत्साहित करने का एक मंच बना। कार्यक्रम की विशेष झलक स्वर्गीय रतन टाटा को दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि थी, जिसमें उनके राष्ट्र निर्माण और सतत प्रगति में योगदान को याद किया गया। टाटा पावर के सीएचआरओ और सस्टेनेबिलिटी एवं सीएसआर प्रमुख हिमाल तिवारी ने कहाः स्थिरता जागरूकता से शुरू होती है। राष्ट्रीय ऊर्जा मेला युवाओं में नवाचार, जागरूकता और जिम्मेदारी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दशार्ता है।

कार्यक्रम में टाटा पावर की सस्टेनेबिलिटी ब्रांड एंबेसडर सुश्री प्राची शेवगांवकर ने विशेष सत्र लिया, जिसमें उन्होंने छात्रों को सतत प्रथाओं को अपनाने और जलवायु परिवर्तन से निपटने में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया। टाटा पावर-डीडीएल के मुख्य कार्यकारी गजानन एस. काले ने कहाः राष्ट्रीय ऊर्जा मेला केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सीखने और सहयोग का मंच है। यह छात्रों को न केवल शिक्षित कर रहा है, बल्कि उन्हें अपने समुदायों का नेतृत्व करने के लिए सशक्त भी बना रहा है। विशिष्ट अतिथि, कर्नल हेमंत कुमार साह (कमांडिंग ऑफिसर-5 दिल्ली, गर्ल्स बटालियन, एनसीसी निदेशालय, दिल्ली) और एस. सुनील (उपनिदेशक, शिक्षा विभाग, दिल्ली सरकार) ने टाटा पावर और प्रतिभागियों के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने जलवायु परिवर्तन से निपटने और सतत विकास की दिशा में युवाओं की भूमिका पर बल दिया। राष्ट्रीय ऊर्जा मेला 2024 ऊर्जा संरक्षण और स्थिरता के प्रति युवाओं में जागरूकता और नेतृत्व कौशल विकसित करने की दिशा में एक प्रभावी पहल साबित हुआ। इसने पर्यावरण संरक्षण के प्रति समर्पित नागरिकों की एक नई पीढ़ी तैयार करने का संदेश दिया।

पंजाबः नगर निकाय चुनाव के तहत पूर्वा 11 बजे तक औसतन 27 प्रतिशत मतदान

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

चंडीगढ़, । पंजाब में पांच नगर निगमों और 44 नगर पालिका परिषदों एवं नगर पंचायतों के चुनाव के लिए शनिवार को पूर्वा 11 बजे तक औसतन 27 प्रतिशत मतदान हुआ। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि मतदान सुबह सात बजे शुरू हुआ जो शाम चार बजे तक जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि सुबह नौ बजे तक औसतन 10 प्रतिशत मतदान हुआ और पूर्वा 11 बजे तक औसतन 27 प्रतिशत मतदान हुआ। अधिकारियों ने बताया कि मतदान प्रक्रिया पूरी होने के बाद आज ही मतगणना होगी। पंजाब में पांच नगर निगमों झ अमृतसर, जालंधर, लुधियाना, पटियाला और फगवाड़ा के अलावा 44 नगर पालिका परिषदों और नगर पंचायतों के लिए चुनाव हो रहे हैं। अधिकारियों ने बताया कि नगर निकाय चुनाव के लिए कुल 3,336 उम्मीदवार मैदान में हैं। इन चुनावों के लिए कुल 3,809 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। नगर निकाय चुनावों में 17.75 लाख महिलाओं सहित कुल 37.32 लाख मतदाता मतदान के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि मतदान के लिए ह्यइलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) का इस्तेमाल किया जा रहा है। मतदाता ठंड के मौसम में भी वोट डालने के लिए कई मतदान केंद्रों पर कतारों में खड़े रहे। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के तरुण चुघ, कांग्रेस सांसद गुरजीत सिंह औजला, लुधियाना के विधायक अशोक पराशर और जालंधर छावनी के विधायक परगट सिंह समेत कई नेताओं ने मताधिकार का इस्तेमाल किया। पटियाला में भाजपा ने आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) के इशारे पर फर्जी मतदान किया जा रहा है। भाजपा नेता जय इंदर कौर ने आरोप लगाया कि वार्ड में कुछ बाहरी लोग घूम रहे हैं और उन्होंने पुलिस से उनके खिलाफ कार्रवाई की मांग की। पटियाला में वार्ड संख्या 34 से भाजपा उम्मीदवार सुशील नय्यर ने एक मतदान केंद्र पर फर्जी वोट डाले जाने का आरोप लगाते हुए आत्मदाह की धमकी दी। पटियाला के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक नानक सिंह के मौके पर पहुंचने के बाद भाजपा नेता जय इंदर कौर और पार्टी समर्थकों को पुलिस अधिकारी के साथ बहस करते हुए देखा गया। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ लोगों को बिना उचित सत्यापन के वोट डालने की अनुमति दी जा रही है और वे फर्जी मतदान कर रहे हैं। भाजपा के एक समर्थक ने कहा, ह्यहमकोई भी उन्हें रोक नहीं रहा। इसके लिए कौन जिम्मेदार है? सिंह ने इसके जवाब में कहा, ह्यहमतदान की वीडियोग्राफी हो रही है। इससे पहले, पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह की बेटी कौर ने आरोप लगाया था कि आप विधायक चेतन सिंह जौरामाजरा और गुरलाल घनौर वार्ड संख्या 34 के लिए बाहरी लोग हैं, लेकिन वे इलाके में मौजूद हैं। पटियाला में शिरोमणि अकाली दल ने दावा किया कि वार्ड नंबर 15 में उसके बूथ पर तोड़फोड़ की गई। नगर निकाय चुनाव को सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) के लिए अग्निपरीक्षा के तौर पर देखा जा रहा है। पार्टी नवंबर में हुए चार विधानसभा उपचुनावों में से तीन में जीत हासिल करने के बाद नगर निगम चुनावों में भी अपनी जीत का क्रम जारी रखना चाहेगी। इन चुनावों के जरिए शहरी मतदाताओं के बीच सत्तारूढ़ पार्टी की लोकप्रियता का पता चलेगा। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने चुनावों से पहले आप उम्मीदवारों के लिए रोड शो किए और प्रचार किया। आप की पंजाब इकाई के अध्यक्ष नियुक्त किए जाने के बाद अमन अरोड़ा की भी यह पहली परीक्षा होगी। इन चुनावों में कांग्रेस का भी बहुत कुछ दांव पर लगा है। कांग्रेस को अमृतसर, जालंधर, लुधियाना और पटियाला नगर निगमों में बहुमत मिला था। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और शिरोमणि अकाली दल (शिअद) भी नगर निगम चुनाव में किस्मत आजमा रहे हैं।

पलवल : नाबालिग लड़की का नशीला पदार्थ खिलाकर किया अपहरण

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

पलवल, । पलवल में नाबालिग लड़ की को नशीला पदार्थ खिलाकर अपहरण करके ले जाने व आरोपियों द्वारा हत्या करने की आशंका व्यक्त करने का मामला सामने आया है। कैंप थाना पुलिस ने महिला की शिकायत पर दो नामजद के खिलाफ केस दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है। मिली जानकारी के अनुसार एक महिला ने पुलिस को दी शिकायत में कहा कि 17 दिसंबर को शाम करीब साढ़े छह बजे वह दवाई लेने चली गई थी। उसी दौरान पीछे से राजू व राहुल नामक युवक उसकी नाबालिग 16-17 वर्षीय बेटी कुछ खिलाकर अपने साथ ले गए। पीड़िता ने शक जाहिर किया है कि आरोपी उसकी लड़की को जान से मार सकते है। शिकायत में कहा कि उसने 10 दिसंबर को एक शिकायत पुलिस को दी थी, लेकिन पुलिस ने उसकी शिकायत पर कोई कार्रवाई नहीं की। जिसके कारण आरोपी युवकों के हौसले बुलंद हो गए और उन्होंने इस वारदात को अंजाम दे दिया। पांच दिन बीत जाने के बाद भी उसकी बेटी का पुलिस कोई सुराग नहीं लगा सकी है। आरोपी अपराधी किस्म के है, पहले भी धमकी देते थे। जिस दिन मौका मिलेगा, उसी दिन तेरी बेटी को उठाकर ले जाऐंगे। कैंप थाना प्रभारी दिनेश कुमार ने शनिवार को बताया कि थाना क्षेत्र में रहने वाली पीड़िता की शिकायत पर दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है, लेकिन अभी तक पुलिस न तो लड़की का कोई पता लगा सकी है और न ही आरोपियों का कोई सुराग नहीं मिला है। पुलिस का कहना है कि आरोपियों व लड़की की तलाश में पुलिस की टीम जुटी हुई है, जल्द ही तलाश कर लिया जाएगा।

हरियाणाः चौटाला का पार्थिव शरीर तेजा खेड़ा फार्महाउस में रखा गया, तीन बजे होगा अंतिम संस्कार

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

चंडीगढ़, । हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला का पार्थिव शरीर सिरसा में तेजा खेड़ा स्थित उनके परिवार के फार्महाउस में शनिवार को लोगों के अंतिम दर्शन के लिए रखा गया। इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) के एक नेता ने यह जानकारी दी। इनेलो नेता ने बताया कि तेजा खेड़ा गांव में अपराह्न तीन बजे राजकीय सम्मान के साथ चौटाला का अंतिम संस्कार किया जाएगा। चौटाला का शुक्रवार को गुरुग्राम में निधन हो गया था। वह 89 वर्ष के थे। इनेलो के एक प्रवक्ता ने शुक्रवार को बताया था कि चौटाला की तबीयत बिगड़ने पर उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां बाद में उनका निधन हो गया। चौटाला के अंतिम संस्कार में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ समेत कई गणमान्य लोग शामिल होंगे। ओम प्रकाश चौटाला के छोटे बेटे अभय सिंह चौटाला (इनेलो नेता) एवं बड़े बेटे अजय सिंह चौटाला (जननायक जनता पार्टी प्रमुख) और पूर्व उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला सहित परिवार के अन्य सदस्य तेजा खेड़ा पहुंचे। कांग्रेस नेता कुमारी शैलजा एवं रणदीप सिंह सुरजेवाला भी पांच बार मुख्यमंत्री रहे चौटाला को श्रद्धांजलि देने उनके फार्महाउस पहुंचे। गांव में भी बड़ी संख्या में लोग एकत्र हुए हैं। हरियाणा सरकार ने शुक्रवार को तीन दिन का राजकीय शोक घोषित किया। इसके अलावा शनिवार को सभी कार्यालयों में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया है।

गुरदासपुर में पुलिस चौकी के बाहर धमाके जैसी आवाज सुनी गई, जांच जारी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

चंडीगढ़, । पंजाब के गुरदासपुर जिले में वडाला बांगर पुलिस चौकी के बाहर विस्फोट जैसी आवाज सुनाई देने से इलाके में दहशत फैल गई, जिसके बाद पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारदी। पिछले सात दिन में यह तीसरी ऐसी घटना है। इससे पहले 17 दिसंबर को अमृतसर के इस्लामाबाद थाने में धमाका हुआ था। इसमें कोई हताहत नहीं हुआ था। अधिकारियों के अनुसार, गुरदासपुर में यह घटना शुक्रवार रात करीब साढ़े नौ बजे हुई। उन्होंने बताया कि स्थानीय लोगों ने विस्फोट जैसी आवाज सुनी और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने हालांकि कहा कि घटनास्थल पर ऐसा कुछ भी नहीं मिला जिससे यह संकेत मिले कि विस्फोट हुआ था। गुरदासपुर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) दयामा हरीश कुमार ओम प्रकाश और पुलिस अधीक्षक (एसपी) जुगराज सिंह सहित वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का दौरा किया। कुमार ने कहा, कुछ स्थानीय लोगों ने पुलिस उपाधीक्षक को सूचना दी। इसके बाद नियंत्रण कक्षा को भी सूचना मिली। वरिष्ठ अधिकारी तुरंत मौके पर पहुंचे। उन्होंने कहा, ह्यऐसी सूचना मिली थी कि कुछ आवाज सुनाई दी। मौके पर पहुंचने पर पता चला कि एक दरवाजे का शीशा टूटा हुआ था और पास में एक ईंट पड़ी थी। हम मामले की जांच कर रहे हैं। यह घटनाक्रम गुरदासपुर में बख्शीवाल पुलिस चौकी के बाहर हुए संदिग्ध विस्फोट के दो दिन बाद हुआ है। सोशल मीडिया पर प्रसारित एक असत्यापित पोस्ट में आतंकवादी संगठन ह्यखालिस्तान जिंदाबाद फोर्स ने इसकी जिम्मेदारी ली थी।

डीएम ने किया पीसीएस परीक्षा के केंद्रों का निरीक्षण

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

बदायूँः जिलाधिकारी निधि श्रीवास्तव ने शनिवार को अधिकारियों के साथ पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा के लिए बनाए गए परीक्षा केदो का निरीक्षण कर वहां की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया व आवश्यक दिशा निर्देश अधिकारियों को दिए। जिलाधिकारी ने महात्मा गांधी पालिका इंटर कॉलेज, हाफिज सिद्दीकी इस्लामिया इंटर कॉलेज सहित विभिन्न परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने परीक्षा केंद्रों में सीसीटीवी कैमरा,प्रवेश द्वार,केंद्र व्यवस्थापक कक्ष आदि का निरीक्षण किया तथा साफ सफाई, प्रकाश व्यवस्था सीसीटीवी कैमरो को लगाने की व्यवस्था, अभ्यर्थियों की तलाशी के संदर्भ में,परीक्षा कक्ष आदि विभिन्न बिंदुओं पर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन सहित अन्य अधिकारीगण मौजूद रहे।

महिलाएं उठाएं जनसुनवाई का लाभ, 24 को आएंगी महिला आयोग सदस्य

बदायूँः जिला प्रोबेशन अधिकारी अभय कुमार ने बताया कि 24 दिसम्बर 2024 को पूर्वान्हन 11:00 बजे जनपद बदायूँ में मा० सदस्य उ०प्र० राज्य महिला आयोग लखनऊ संगीता जैन द्वारा लोक निर्माण विभाग, बदायूँ के गेस्ट हाउस में महिला जनसुनवाई तथा जिला कारागार बदायूँ मे महिला बन्दी गृह व जनपद स्तर पर चिन्हित आंगनबाडी केन्द्र का निरीक्षण किया जाना है। सम्बन्धित अधिकारीगण जनसुनवाई व महिला बन्दी गृह निरीक्षण व आगनबाडी केन्द्र निरीक्षण हेतु ससमय प्रतिभाग करें।

सीसीटीवी कैमरो की निगरानी में होगी पीसीएस प्रवेश परीक्षा, बायोमेट्रिक उपस्थिति से होगा प्रवेश

- परीक्षा प्रारंभ होने से 45 मिनट पहले अभ्यर्थियों का प्रवेश परीक्षा केंद्र में नहीं होगा
- अभ्यर्थी परीक्षा केंद्रो पर परीक्षा प्रारंभ होने के समय से डेढ़ घंटा पहले पहुंचे

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

बदायूँः जिलाधिकारी निधि श्रीवास्तव ने बताया कि 22 दिसंबर 2024 को उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2024 के लिए सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। जिसमें कुल 5376 अभ्यर्थी प्रतिभाग करेंगे। कुल 12 महाविद्यालय व विद्यालयों में 14 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। प्रत्येक परीक्षा केंद्र में 384 अभ्यर्थी परीक्षा देंगे। परीक्षा को सकुशल रूप से संपन्न करने के लिए पर्याप्त पुलिस बल भी मौजूद रहेगा। प्रत्येक परीक्षा केंद्र में अभ्यर्थी की बायोमेट्रिक उपस्थिति भी कराई जाएगी। परीक्षा सीसीटीवी कैमरा की निगरानी में होगी। उन्होंने बताया कि इन 14 परीक्षा केंद्रों में गिन्दो देवी महिला महाविद्यालय, हाफिज सिद्दीकी इस्लामिया इंटर कॉलेज, केदारनाथ महिला इंटर कॉलेज, एनएमएसएन दास पीजी कॉलेज, नगर पालिका कन्या इंटर कॉलेज, राजाराम महिला इंटर कॉलेज, राजकीय इंटर कॉलेज, राजकीय कन्या इंटर कॉलेज, राजकीय महाविद्यालय, श्री कृष्ण इंटर कॉलेज, सिंगलर गर्ल्स इंटर कॉलेज, महात्मा गांधी पालिका इंटर कॉलेज है। एनएमएसएन दास पीजी कॉलेज तथा श्री कृष्ण इंटर कॉलेज के ब्लॉक ए एवं ब्लॉक बी में अलग-अलग दो परीक्षा केंद्र संचालित होंगे। इस प्रकार कुल 12 महाविद्यालय व विद्यालयों में 14 परीक्षा केंद्र संचालित होंगे। प्रत्येक परीक्षा केंद्र में 384 अभ्यर्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि परीक्षा के दौरान कैलकुलेटर, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स, मोबाइल, ज्वेलरी फूड आइटम, कैमरा, स्मार्ट वॉच, हेल्थ बैंड आदि पर प्रतिबंध रहेगा। प्रथम पाली प्रातः 9:30 से पूर्वाह्न 11:30 बजे तक तथा द्वितीय पाली अपराह्न 2:30 बजे से शाम 4:30 बजे तक होगी। परीक्षा सीसीटीवी कैमरा की निगरानी में होगी। उन्होंने बताया कि 22 दिसंबर को होने वाली परीक्षा में अभ्यर्थियों का प्रवेश परीक्षा प्रारंभ होने के समय से डेढ़ घंटा पहले प्रारंभ हो जाएगा तथा परीक्षा प्रारंभ होने से ठीक 45 मिनट पहले अभ्यर्थियों का प्रवेश परीक्षा केंद्र में नहीं होगा। उन्होंने सभी अभ्यर्थियों से अपील की कि वह अपने-अपने निर्धारित परीक्षा केदो पर परीक्षा प्रारंभ होने के समय से डेढ़ घंटा पहले पहुंचे। क्योंकि 45 मिनट पूर्व गेट बंद हो जाएगा और फिर किसी भी अभ्यर्थी को प्रवेश की अनुमति नहीं होगी। अपर जिलाधिकारी प्रशासन ने बताया कि अभ्यर्थी को तीन ओएमआर शीट दी जाएगी। जिसमें एक गुलाबी रंग की होगी। दूसरी हरे रंग की व तीसरी नीले रंग की होगी। गुलाबी रंग की ओएमआर शीट लोक सेवा आयोग उत्तर प्रदेश को भेजी जाएगी तथा हरे रंग की ओएमआर शीट नोडल अधिकारी के माध्यम से कोषागार में संरक्षित होगी तथा नीले रंग की ओएमआर शीट अभ्यर्थी अपने साथ ले जा सकेंगे। उन्होंने बताया कि परीक्षा को सकुशल रूप से संपन्न करने के लिए 14 स्टेटिक मजिस्ट्रेट बनाए गए हैं। 03 स्टेटिक मजिस्ट्रेट रिजर्व में रखे गए हैं तथा 14 सेक्टर मजिस्ट्रेट बनाए गए हैं। 03 सेक्टर मजिस्ट्रेट रिजर्व में रखे गए हैं। परीक्षा सीसीटीवी कैमरा की निगरानी में होगी। प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर पर्याप्त सीसीटीवी लगाए जाएंगे। सीसीटीवी के माध्यम से की जा रही परीक्षा को आयोग के अधिकारी व केंद्र व्यवस्थापक आदि देख सकते हैं। किसी प्रकार की कमी होने पर 11 प्रकार के अलर्ट जारी होंगे।

डीएम की अध्यक्षता में तहसील सहसवान में हुआ संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

बदायूँः जिलाधिकारी निधि श्रीवास्तव ने तहसील सहसवान में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस की अध्यक्षता करते हुए अधिकारियों को प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध ढंग से निस्तारण करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर कुल 52 शिकायती व प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिनमें से 08 का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया। शेष के गुणवत्तापरक निस्तारण के निर्देश संबंधित विभागीय अधिकारियों को दिए गए। इस अवसर पर तहसील में सुशासन सप्ताह का भी आयोजन किया गया। जिलाधिकारी ने अधिकारियों से कहा कि आमजन की शिकायतों का निस्तारण माननीय मुख्यमंत्री की प्राथमिकताओं में है, इसलिए सभी अधिकारी गंभीरता पूर्वक कार्य करें। उन्होंने भूमि विवाद से संबंधित शिकायतों के निस्तारण में राजस्व पुलिस विभाग की संयुक्त टीम बनाकर मौके पर जाकर निस्तारण करने के लिए कहा। उप जिलाधिकारी सहसवान प्रेमपाल सिंह ने बताया कि 19 से 25 दिसंबर तक तहसील में सुशासन सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। जिसको सफलतापूर्वक तहसील परिसर में आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सुशासन सप्ताह अंतर्गत शिकायतों के गुणवत्तापरक निस्तारण के उपरांत उसको पोर्टल पर फीड किया जाता है। इस अवसर पर चकरोड पर से अवैध कब्जा हटाने, पेंशन की मांग, आवास की मांग सहित विभिन्न विभागों से कुल संबंधित 52 शिकायती व प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से 08 का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया तथा शेष के गुणवत्तापरक व समयबद्ध निस्तारण के निर्देश संबंधित विभागीय अधिकारियों को दिए गए हैं। इस अवसर पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, मुख्य विकास अधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी सहित अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

कन्नौज में नाबालिग से दुष्कर्म के आरोपी पूर्व सपा नेता का होटल जब्त

कन्नौज, । उत्तर प्रदेश के कन्नौज में नाबालिग से दुष्कर्म के आरोप में जेल में बंद समाजवादी पार्टी नेता नवाब सिंह का होटल पुलिस ने शनिवार को जब्त कर लिया। भारी पुलिस बल की मौजूदगी में डुगडुगी बजवाकर होटल को सील कर दिया गया। सीओ सिटी कमलेश कुमार ने बताया कि नाबालिग से दुष्कर्म के आरोपी नवाब सिंह यादव पर गैंगस्टर एक्ट की धाराओं में कार्रवाई की गई थी जिसके बाद उनकी संपत्तियों को खंगालने का काम किया जा रहा है।

ग्राम संगठन समूह सखियों का तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण संपन्न

आसफपुर - स्थानीय क्षेत्रीय ग्राम्य विकास प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य अनुज कुमार श्रीवास्तव व यहां के प्रसार कार्यक्रम अधिकारी संदीप कुमार अवस्थी के निर्देशन में चलाया जा रहा ग्राम संगठन समूह की महिलाओं का प्रशिक्षण कार्यक्रम बीते शनिवार देर शाम संपन्न हुआ । इस तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य प्रशिक्षक राधेश्याम पाल व ममता ने महिलाओं को खाद्य पोषण , स्वास्थ्य व स्वच्छता विषयक महत्वपूर्ण जानकारी दी । इस कार्यक्रम में जनपद संभल की कविता वर्मा , गीता यादव , सरस्वती , लक्ष्मी , रीना , सीमा, निशा , राधिका , काजल , विमला देवी , भावना कुमारी , राजबाला सुनीता यादव , मुन्नी देवी, ममता , संगीता , पूनम , भारती , प्रीति , छाया कुमारी व स्वाति सहित लगभग 40 महिलाओं ने प्रतिभाग लिया । इस समूचे कार्यक्रम में संस्थान के मुखिया अनुज कुमार श्रीवास्तव , प्रसार कार्यक्रम अधिकारी संदीप कुमार अवस्थी , प्रेम सागर यादव , अमित कुमार , आकाश कुमार व रामगोपाल कश्यप सहित समस्त विभागीय कर्मचारियों ने सहयोग किया । कार्यक्रम समापन के दौरान संस्थान के प्राचार्य अनुज कुमार श्रीवास्तव व प्रसार कार्यक्रम अधिकारी संदीप कुमार अवस्थी ने महिला प्रतिभागियों को एक एक बैग , छायांकन प्रति सहित प्रमाण पत्र भेंट किए । इस दौरान महिला प्रतिभागियों ने ढोलक , मजीरा और चिमटा की धुन पर भक्ति गीतों का गायन किया

गुरुग्रामः नाबालिग छात्र ने दी थी स्कूल में ब्लास्ट की धमकी

गुरुग्राम, । यहां सेक्टर-65 स्थित श्रीराम मिलेनियम स्कूल में ब्लॉस्ट की धमकी स्कूल के ही 12 साल के छात्र ने दी थी। छात्र ने शनिवार को पुलिस पूछताछ में इस धमकी का कारण बताया कि वह स्कूल में ऑनलाइन क्लॉस लगवाना चाहता था। इसलिए उसने ईमेल पर धमकी दी थी। पुलिस ने छात्र की पहचान करके उसे जांच में शामिल किया है। जानकारी के अनुसार बीती 18 दिसम्बर को सेक्टर-65 स्थित श्रीराम मिलेनियम स्कूल में ब्लॉस्ट किए जाने की धमकी ई-मेल के माध्यम से मिली थी। स्कूल की ओर से शिकायत पर साइबर क्राइम साउथ थाना पुलिस ने केस दर्ज करके जांच शुरू की।

गुरुग्रामः 15 वर्षीय नाबालिग से दुष्कर्म के दोषी को 20 वर्ष कठोर कारावास

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

गुरुग्राम, । 15 वर्षीय नाबालिग बच्ची के साथ दुष्कर्म के मामले में यहां की एक अदालत ने 20 साल की कैद (कठोर कारावास) की सजा सुनाई है। जानकारी के अनुसार 11 जून 2020 को थाना सेक्टर-40 गुरुग्राम में 15 वर्षीय नाबालिक लडकी के साथ दुष्कर्म करने की शिकायत दर्ज की गई। इस शिकायत पर पुलिस ने पॉक्सो एक्ट की सम्बन्धित धाराओं के तहत केस दर्ज किया। पुलिस ने इस मामले में आरोपी रमन उर्फ सोनू निवासी गांव औरादोली जिला जशपुर (छत्तीसगढ़) को गिरफ्तार किया गया। पुलिस टीम द्वारा आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद आरोपी के खिलाफ सभी आवश्यक साक्ष्य व गवाह एकत्रित करके अदालत में पेश किए गए। पुलिस द्वारा अदालत में दाखिल की गई चार्जशीट व पुलिस द्वारा एकत्रित किए गए साक्ष्यों व गवाहों के आधार पर शुक्रवार 20 दिसंबर को एडिशनल सेशन जज की अदालत ने निर्णय दिया। आरोपी को दोषी ठहराते हुए धारा 6 पॉक्सो एक्ट के तहत 20 वर्ष कैद (कठोर कारावास) व 40 हजार रुपये जुमार्ने की सजा सुनाई गई है।

गुरुग्रामः काम में कोताही बरतने, लोगों के फोन नहीं उठाने वाले इंजीनियर नपेंगे

- निगमायुक्त अशोक कुमार गर्ग ने की इंजीनियरिंग विंग के अधिकारियों के साथ बैठक में दिखाए तेवर

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

गुरुग्राम, । नगर निगम गुरुग्राम के आयुक्त ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि सभी अधिकारी आमजन के फोन जरूर उठाएं। इसके अलावा, विभिन्न वाट्सएप ग्रुप में आने वाली शिकायतों को तुरंत ही नोट करें। उसका समाधान करके जानकारी ग्रुप में सांझा जरूर करें। अब से अगर किसी भी अधिकारी की फोन नहीं उठाने संबंधी शिकायत आती है, तो उसके खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जाएगी। वे रविवार को अपने कार्यालय में इंजीनियरिंग विंग के अधिकारियों के साथ बैठक कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कार्य में कोताही को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा तथा बार-बार एक ही शिकायत आने पर संबंधित अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई होगी। पहली बार शिकायत मिलने पर चेतावनी दी जाएगी, जबकि दूसरी बार कारण बताओ नोटिस जारी किया जाएगा। इसी प्रकार अगर शिकायत तीसरी बार आती है, तो नियम-8 के तहत तथा चौथी बार शिकायत मिलने पर नियम-7 के तहत कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि बार-बार शिकायत जिस भी अधिकारी की आएगी तो उसे सेवामुक्त करने की कार्रवाई भी की जा सकती है। नगर निगम गुरुग्राम के आयुक्त अशोक कुमार गर्ग ने कहा कि इंजीनियरिंग ब्रांच के अधिकारी क्षेत्र में सीवर ओवरफ्लो व ब्लॉकेज संबंधी शिकायतों पर गंभीरता से कार्रवाई करते हुए उसका त्वरित समाधान सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि अधिकारी सबसे पहले नागरिकों को अंतरिम राहत उपलब्ध कराएं तथा स्थाई समाधान की दिशा में कार्य शुरू कराएं। बैठक में संयुक्त आयुक्त जयवीर यादव, चीफ इंजीनियर मनोज यादव सहित सभी कार्यकारी अभियंता, सहायक अभियंता व कनिष्ठ अभियंता शामिल थे। निगमायुक्त ने कहा कि हरियाणा सरकार के निदेर्शानुसार प्रत्येक कार्य दिवस आयोजित होने वाले समाधान शिविरों में 90 प्रतिशत शिकायतें सीवरेज से संबंधित आ रही हैं। उन्होंने इस प्रकार की स्थिति पहली बार देखी है कि शहर में अधिकतर शिकायत सीवर जाम या ओवरफ्लो से संबंधित आ रही हैं। कार्यकारी अभियंता हर सप्ताह करें बैठक निगमायुक्त ने सभी कार्यकारी अभियंताओं से कहा कि वे अपने डिवीजन से संबंधित सहायक अभियंताओं व कनिष्ठ अभियंताओं के साथ सप्ताह में कम से कम एक बार बैठक जरूर करें तथा बैठक में चीफ इंजीनियर को भी बुलाएं। इस दौरान कार्य निष्पादन में आने वाली परेशानियों पर चर्चा करें तथा उन्हें दूर कराएं। इन बैठकों की प्रोसिडिंग भी जारी की जानी अनिवार्य है। इसके अलावा, इंजीनियरिंग विंग में लगे सुपरवाईजरों को भी जवाबदेह बनाने के निर्देश दिए गए। बैठक में यह भी सुझाव दिया गया कि टेंडर में एजेंसी की परफॉर्मेंस को भी आधार बनाया जाए और जिस एजेंसी पर पूर्व में 20 प्रतिशत से अधिक पेनल्टी लगी हो, वह टेंडर प्रक्रिया में भाग ना ले सके।

फरीदाबाद में महिला की पीट-पीटकर हत्या

फरीदाबाद, । फरीदाबाद में शनिवार को एक महिला की मौत हो गई। मृतका हैप्पी के परिजनों ने उसके पति और उसके ससुर पर जमीन के लिए 5 लाख रुपए मांगने और पूरे पैसे नहीं देने पर प्रताड़ित करने के साथ मारपीट कर हत्या करने के आरोप लगाए हैं। मृतका के भाई चमन कुमार ने बताया कि वह दिल्ली के रहने वाले है। उनकी बहन की शादी 12 जून 2022 को जवाहर कॉलोनी के रहने वाले पुष्कर से हुई थी। लेकिन तभी से वह लोग से जमीन के लिए रुपए मांग रहे थे और उन्होंने 2 लाख रुपए दे भी दिए थे। इसके बावजूद बीते कल उन्होंने उनकी बहन की पीट-पीट कर हत्या कर दी। उन्हें सूचना भी उनके दूसरे रिश्तेदार विनोद सिंह ने दी उन्होंने बताया कि आपकी बहन की मौत हो चुकी है। इसके बाद जब वह फरीदाबाद पहुंचे तब जवाहर कॉलोनी उनके घर पर लडका फरार था। फिर उन्हें बताया गया मृतका के शव को निजी अस्पताल में रखवाया गया हैं। अब मायके पक्ष के लोग आरोपी पति और ससुराल पक्ष के लोगों पर कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। मृतका का एक सवा साल का बेटा भी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

औद्योगिक भूखंडों के आबंटन में युवाओं व महिलाओं को मिले प्राथमिकता: दीपक मैनी

- पीएफटीआई ने औद्योगिक समस्याओं को दूर करने व शहर के विकास के लिए भाजपा जिला अध्यक्ष के साथ की बैठक

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

गुरुग्राम, । इंडस्ट्री एवं ट्रेड के वेलफेयर के लिए कार्य करने वाली राष्ट्रीय स्तर की संस्था प्रोग्रेसिव फेडरेशन ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री (पीएफटीआई) की कोर कमेटी ने शनिवार को भाजपा जिला अध्यक्ष कमल यादव के साथ बैठक की। पीएफटीआई ने औद्योगिक समस्याओं को दूर करने व शहर के विकास के लिए इस बैठक में चर्चा की। पीएफटीआई के चेयरमैन उद्योगपति दीपक मैनी ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए उद्योगों से संबंधित कुछ समस्याओं व मुद्दों को भाजपा जिला अध्यक्ष कमल यादव के समक्ष उठाया। उन्होंने कहा कि गुरुग्राम के सभी औद्योगिक क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं का पूर्णतया अभाव है। सीवरेज लाइन पुरानी ओर छोटी होने के कारण ओवरफ्लो रहती है। गुरुग्राम के सभी औद्योगिक क्षेत्रों में शराब के ठेकों की भरमार है, जिससे कारखानों में श्रमिक दिन में ही शराब पीकर काम पर आते हैं। जिससे काम के दौरान दुर्घटना या हादसा होने का डर रहता है। दीपक मैनी ने कहा कि नए औद्योगिक क्षेत्रों में प्लॉट का आबंटन ऑक्सन से नहीं होना चाहिए। क्योंकि ऑक्सन से भूखंडों का प्रॉपर्टी डीलरों द्वारा दुरपयोग किया जाता है। उन्होंने कहा कि औद्योगिक भूखंडों का आबंटन वरीयता और आवश्यकता के स्तर पर होना चाहिए। युवा उद्यमियों ओर महिलाओं को भूखण्ड आबंटन में प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि औद्योगिक क्षेत्रों में कानून व्यवस्था में सुधार होने चाहिए। शाम व सुबह जब श्रमिक काम पर आते व जाते हैं, तब पुलिस की पेट्रोलिंग बढ़ा दी जाए। दीपक मैनी ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्रों से निकलने वाली मेट्रो का कार्य जल्द से जल्द शुरू किया जाना चाहिए। साथ ही हीरो होंडा चौक से उमंग भारद्वाज चौक तक एलिवेटेड रोड के निर्माण कार्य भी शीघ्र आरम्भ करवाया जाए। इस अवसर पर पायनियर औद्योगिक एसोसिएशन बिलासपुर ने अपने औद्योगिक क्षेत्रों की बिजली की पुरानी समस्या को जिला अध्यक्ष कमल यादव के समक्ष उठाया गया। इस अवसर पर पीएफटीआई के वाईस चेयरमैन डॉ. एसपी अग्रवाल, पीएफटीआई के डायरेक्टर व लेबर लॉ एडवाइजर एसोसिएशन आरएल शर्मा एडवोकेट, पीएफटीआई के डायरेक्टर डॉ. अंशुल ढींगरा, पीएफटीआई के जिला अध्यक्ष पीके गुप्ता, कोषाध्यक्ष अमन गुप्ता, कोर कमेटी सदस्य विनोद पहिलाजानि, डीपी गौड़, संजय जैन, विनय गुप्ता, डॉ. केके अग्रवाल, दुर्गेश वाधवा, जितेंद्र यादव, कंवर सिंह जून, पवन कुमार आदि काफी संख्या में उधोगपति उपस्थित रहे।

कंगाल मध्यप्रदेश में माल ही माल

कर्ज में गले-गले तक डूबी मध्यप्रदेश में धन की कोई कमी नहीं है। मप्र की सरकार निवेश के लिए विदेशों के चक्कर काट रही है जबकि मध्यप्रदेश में चौतरफा पैसा बिखरा पड़ा है। यहां तक कि मध्यप्रदेश में परिवहन विभाग के सिपाही तक करोड़पति है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयकर विभाग को एक लावारिस कार से 52 किलो सोना और भारी मात्रा में कैश बरामद हुआ। कार रातीबड़ क्षेत्र के मेंडोरी के जंगल में लावारिस हालत में मिली है। पुलिस और इनकम टैक्स यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि कार में पैसे और सोना कौन छोड़ गया? सोने की कीमत करीब 42 करोड़ बताई जा रही है, जबकि 10 करोड़ रुपये कैश भी जब्त किया गया है. फिलहाल इस पूरे मामले की जांच पड़ताल की जा रही है। भोपाल में आयकर विभाग की टीम ने त्रिशूल कंस्ट्रक्शन कंपनी के मालिक राजेश शर्मा के ठिकानों पर बुधवार सुबह छापमारी की। शर्मा का नाम प्रदेश के एक पूर्व मंत्री और पूर्व मुख्य सचिव से जुड़ा है। आईटी की टीम ने भोपाल में 49, इंदौर में दो और ग्वालियर में एक जगह सर्च की। आयकर विभाग को राजेश शर्मा के 10 लॉकर्स की जानकारी मिली है, जिनमें भारी मात्रा में ज्वेलरी और अन्य मूल्यवान सामग्री पाई गई है। विभाग ने ज्वेलरी की वैल्यूएशन अभी तक नहीं की है। इसके अलावा टीम ने दस्तावेज, कंप्यूटर डेटा, मोबाइल फोन और हार्ड डिस्क भी जब्त किए हैं। भोपाल के विभिन्न इलाकों जैसे नीलबड़, एमपी नगर, कस्तूरबा नगर, होशंगाबाद रोड और 10 नंबर मार्केट में छापेमारी जारी है। इंदौर में त्रिशूल कंस्ट्रक्शन के आदित्य गर्ग और ग्वालियर में रामवीर सिकरवार के ठिकानों पर भी छापे मारे गए। सिकरवार के पास पांच एकड़ जमीन खरीदने के दस्तावेज भी मिले हैं। इससे पहले उनके खिलाफ ईडी भी कार्रवाई कर चुका है। मप्र अभी तक ईडी के निशाने पर नहीं आया है। यहां किसी भी दल के नेता को अभी ईडी खोज नहीं पायी है। मध्यप्रदेश भले ही आर्थिक रूप से पिछड़ा राज्य हो लेकिन यहाँ के नेता ही नहीं बल्कि सिपाही तक करोड़पति हैं। पिछले दिनों मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में परिवहन विभाग के पूर्व आरक्षक सौरभ शर्मा के घर करोड़ों रुपये नकद मिले हैं, जिसे देख अधिकारी भी दंग रह गए. दरअसल, लोकायुक्त पुलिस नेसौरभ शर्मा के दो ठिकानों पर छापा मारा. इस दौरान उनके घर से 4 करोड़ रुपये नकद मिले. वहीं छापेमारी के दौरान 50 लाख के सोने-हीरे, 60 किलों चांदी भी मिले हैं. सौरभ शर्मा के दो ठिकानों से टीम को 4 करोड़ रुपये नकद, 60 किलो चांदी, 50 लाख के सोने-हीरे के जेवर, 4 एसयूवी, 22 प्रॉपर्टी के दस्तावेज और नोट गिनने की 7 मशीनें भी मिली हैं। अब आप कल्पना कीजिये की यदि परिवहन मंत्री के घर छापा मारा जाये तो कितना माल मिल सकता है? मध्यप्रदेश में एक लम्बे आरसे तक मुख्यमंत्री रहे शिवराज सिंह चौहान की पत्न ी के बारे में ये खबरें चला करतीं थीं कि उन्होंने मुख्यमंत्री आवास में नोट गिनने की मशीनें लगा रखीं हैं, तब लोग हँसते थे, लेकिन एक पूर्व सिपाही के घर इन मशीनों का मिलना ये संकेत देता है कि मुख्यमंत्री आवास में इन मशीनों के होने की खबरें भी निराधार नहीं थीं, लेकिन कोई ईडी, कोई सीबीआई, कोई लोकायुक्त मुख्यमंत्री निवास तक पहुँचने का साहस नहीं दिखा सका। गरीब मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह चौहान मंत्रिमंडल के एक मंत्री के बच्चे के स्कूली बास्ते से तक नॉट टपक पड़े थे, बाद में इस मामले को रफा-दफा कर दिया गया। मध्यप्रदेश में सरकारी राजस्व की चोरी की वजह से ही सरकार गले-गले तक कर्ज में डूबी है। अब प्रदेश सरकार अब तक का सर्वाधिक कर्ज लेने की तैयारी में है। यह कर्ज 88 हजार 540 करोड़ रुपये का होगा।

संसद में घमासान - शाबाश?

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के सबसे बड़े लोकतंत्र जिसके बारे में पूरी दुनियाँ चर्चा करती है। दूसरी ओर भारत का संविधान जो हमारे लिए पूज्यनीय है, परंतु इसके ऊपर ही संसद में चर्चा पर घमासान मचा हुआ है। दरअसल संसद के ऊपरी सदन में माननीय गृहमंत्री ने संविधान पर चर्चा का जवाब देते हुए कुछ ऐसा जुमला बोला कि विपक्ष ने उसे हाथों- हाथ लपक लिया, उसे मुद्दा बनाकर गृहमंत्री के पद छोड़नें की मांग तक की बात बना दी जिसके बचाव में माननीय पीएम सहित अनेक मंत्री सामने आए व गृहमंत्री ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस लेकर कहां की उसके बयान को एआई की मदद से तोड़ मरोड़ कर एक अंश को प्रस्तुत किया गया है जिसपर दो दिनों से घमासान चल रहा है, परंतु गुरुवार दिनांक 19 नवंबर 2024 का दिन संसद के काला दिवस के रूप में माना जा सकता है, जहां शाब्दिक घमासान ने धक्का मुकी का रूप ले लिया, जिसमें दो सांसद महोदय घायल हो गए हैं व अस्पताल में भर्ती है, तथा दोनों प्रमुख पार्टियों ने एक दूसरे के खिलाफ पुलिसथाने में एफआईआर दर्ज करा दी है सताधारी पार्टी ने नए आईपीसी कानून की धारा 115 117 125 131 351 3(5) तो विपक्षी बड़ी पार्टी ने 114 115 116 117 129 130 131 133 धाराओं के अंतर्गत सांसद मार्ग पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज की है जो मैंने एफआईआर के लिए दी गई पांच पुष्ठों की कॉपी देखी उसमें करीब 15 संसद सदस्यों के हस्ताक्षर भी हैं, जो मैंने अपने 40 वर्षों के स्तंभकार लेखन के करियर में शायद पहली बार ही यह देखा हूं, क्योंकि लोकतंत्र के मंदिर में अपने प्रतिनिधियों की धक्कामुकी बाचाबाची देखकर मतदाता, जनता हैरान है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, संसद में धमासान शाबाश? हमारे चुने हुए प्रतिनिधियों एफआईआर बनाम एफआईआर। साथियों बात अगर हम गुरुवार दिनांक 19 नवंबर 2024 को संसद परिक्षेत्र में धक्कामुक्की करें तो, बाबासाहेब आंबेडकर से संबंधित मुद्दे पर विपक्ष और सत्तापक्ष के सदस्यों ने गुरुवार को संसद परिसर में प्रदर्शन किया और इस दौरान उनकी कथित तौर पर धक्का-मुक्की भी हुई। सत्ताधारी पार्टी का आरोप है कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने धक्का-मुक्की की जिस वजह से उसके बुजुर्ग सांसद प्रताप सारंगी चोटिल हुए। सारंगी को राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं कांग्रेस का आरोप है कि पार्टी मुद्दे से ध्यान भटकाने की कोशिश कर रही है। दोनों पार्टियों ने एक दूसरे के खिलाफ दिल्ली पुलिस से शिकायत भी दर्ज कराई है। कांग्रेस ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा, गृह मंत्री ने संसद में बाबासाहेब का अपमान किया है। आज बाबासाहेब के अपमान के खिलाफ संसद परिसर में इंडिया गठबंधन के सांसद प्रदर्शन कर रहे थे। जब इंडिया गठबंधन के सांसद मकर द्वार पहुंचे तो वहां पहले से मौजूद पार्टी के सांसदों ने कांग्रेस अध्यक्ष और नेता विपक्ष के साथ धक्का-मुक्की और बदसलूकी की। इस दौरान कांग्रेस अध्यक्ष को चोट भी आई है सत्ताधारी पार्टी की इस गुंडागर्दी के खिलाफ आज कांग्रेस के सांसदों ने संसद मार्ग स्थित पुलिस थाने में बदसलूकी करने वाले सांसदों के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई। लोकसभा स्पीकर को भी लिखा पत्र इसके अलावा कांग्रेस सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर दावा किया कि बीजेपी के तीन सांसदों ने संसद परिसर में नेता प्रतिपक्ष के साथ धक्का-मुक्की की, जो न सिर्फ कांग्रेस नेता की गरिमा पर हमला है, बल्कि संसद की लोकतांत्रिक भावना के विपरीत भी है। उन्होंने बिरला से आग्रह किया कि इस मामले में वह उचित कार्रवाई करें। कांग्रेस सांसदों ने कहा, ह्यहमें उम्मीद है कि आप इस मामले को पूरी गंभीरता से लेंगे और उचित कार्रवाई करेंगे। साथियों बात अगर हम इस धक्कामुक्की का मामला पुलिस थाने की दहलीज पर पहुंचने पर एफआईआर बनाम एफआईआर की करें तो, संसद भवन में गुरुवार को हुई धक्का-मुक्की के बाद लोकसभा सदस्य अनुराग ठाकुर और बांसुरी स्वराज ने नेता प्रतिपक्ष के खिलाफ दिल्ली पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। इस मामले में नेताओं ने राहुल गांधी के खिलाफ लोकसभा अध्यक्ष और राज्यसभा के सभापति से भी शिकायतें की हैं। संसद मार्ग थाने में शिकायत दर्ज कराने के बाद अनुराग ठाकुर ने पत्रकारों से कहा कि के द्वारा शारीरिक हमला और उकसाने के लिए उनके खिलाफ दिल्ली पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने कहा कि एनडीए के सांसद शांतिपूर्ण तरीके से कांग्रेस के झूठ के प्रोपेगेंडा को बेनकाब कर रहे थे और उनसे माफी की मांग कर रहे थे। उसी समय राहुल गांधी अपने इंडी गठबंधन के सांसदों के साथ आए और तय रास्ते से न जाकर एनडीए के सांसदों के बीच आ गए। उन्होंने अपनी पार्टी के सदस्यों को उकसाया भी और दुर्भावनापूर्ण रवैये के साथ आगे बढ़े। राहुल गांधी के खिलाफ उन्होंने बीएनएस की धारा 109, 115, 117, 125, 131 और 351 के तहत शिकायत दर्ज कराई है। इसमें 109 हत्या का प्रयास और 117 स्वेच्छा से गंभीर चोट पहुंचाने का मामला है।

क्या फिर होगा उस्ताद जाकिर हुसैन जैसा तबला वादक

उन्होंने अलग-अलग संगीत शैलियों में भी काम किया, जिससे उनका संगीत और भी समृद्ध हुआ। जाकिर हुसैन ने दुनिया भर के कई प्रसिद्ध संगीतकारों के साथ काम किया। उन्होंने विभिन्न संस्कृतियों के संगीत को मिलाकर एक नया रूप दिया। वे भारतीय संगीत के राजदूत थे। उन्होंने पूरी दुनिया में भारतीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतने बड़े कलाकार होने के बावजूद जाकिर हुसैन बहुत ही सरल और विनम्र स्वभाव के थे। वह हमेशा दूसरों का सम्मान करते। इससे उनके प्रति सम्मान का भाव और बढ़

डॉ. आर.के. सिन्हा
लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद

उस्ताद जाकिर हुसैन के निधन से सारा देश और उनके सारे संसार में रहने वाले प्रशंसक उदास हैं। अभी कल ही तो अमेरिका के कैलिफोर्निया प्रांत के सानफ्रांसिस्को शहर के एक कब्रिस्तान में उनके मृत शरीर को ह्लसुपुर्दे खाकह्व कर दिया गया। भरे मन से विश्व भर के सैकड़ों प्रसंशक उस्ताद जाकिर को मिट्टी देने पहुँचे। उनके प्रशंसकों का तो यही कहना है कि उनके जैसा तबला वादक फिर कभी नहीं होगा? यह तो भविष्य ही बताएगा? परंतु, अब उस्ताद जाकिर हुसैन, पंडित शिव कुमार शर्मा और पंडित हरि प्रसाद चौरसिया की जुगलबंदियां वाकई में सबको याद आएंगी। ये युगलबंदियाँ वाकई कमाल की होती थीं। मैंने तो अपने युवावस्था में पड़ना के गर्दनीबाग मैदान में दशकों तक हर वर्ष दुगार्पूजा के अवसर पर इन महान कलाकारों के आयोजनकताओं में एक रहा हूँ और इनसभी के संघर्ष के दिनों को करीबी से देखा है। क्या उनके जैसा तबला वादक फिर कभी नहीं होगा? यह कहना तो सही नहीं होगा कि उनके जैसा कोई और नहीं होगा। संगीत एक ऐसी चीज है जो हमेशा अपने ढंग से विकसित होती ही रहती है। हो सकता है कि भविष्य में कोई ऐसा तबला वादक भी आए जो अपनी प्रतिभा और मेहनत से जाकिर हुसैन की याद दिला दे। लेकिन, अभी के लिए, यह कहना सही ही होगा कि उस्ताद जाकिर हुसैन जैसा तबला वादक फिर से पैदा होना मुश्किल होगा।

वे एक अद्वितीय और महान कलाकार थे। अब उस्ताद जाकिर हुसैन, पंडित शिव कुमार शर्मा और पंडित हरि प्रसाद चौरसिया की जुगलबंदियां वाकई में याद आएंगी। वह कमाल की होती थीं। इन दिग्गजों का साथ-साथ मंच पर आना ही अपने आप में एक अद्भुत अनुभव होता था। उस्ताद जाकिर हुसैन तबले के उस्ताद थे, और उनकी लयकारी का कोई मुकाबला नहीं था। पंडित शिव कुमार शर्मा संतूर बजाते थे, जो एक मधुर और अद्वितीय वाद्य है। पंडित हरि प्रसाद चौरसिया बांसुरी के जादूगर है, और उनकी बांसुरी की धुनें मन को मोह लेती हैं। जब ये मंच पर आते, तो लय, ताल और मधुरता का एक अद्भुत संगम होता था। इन कलाकारों के बीच एक अद्भुत सामंजस्य भी था। वे एक-दूसरे की कला का सम्मान करते और एक-दूसरे के साथ संवाद करते हुए संगीत बनाते। उनकी जुगलबंदी सिर्फ एक साथ बजाना मात्र नहीं थी, बल्कि एक-दूसरे के साथ संगीत की एक महान यात्रा पर निकलना जैसा था। इनकी जुगलबंदियों में भावनात्मक गहराई भी होती थी। वे अपने संगीत के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते थे, और श्रोता भी उनसे जुड़ जाते थे। उनके संगीत में खुशी, गम, प्यार, और शांति जैसे विभिन्न भावों का अनुभव होता था। इन तीनों कलाकारों की जुगलबंदियां भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक अनमोल विरासत के रूप में याद रखी जाएँगी। उन्होंने दुनिया भर में भारतीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी जुगलबंदियां भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में हमेशा याद रखी जाएंगी। मेरा मानना ह

कि उस्ताद जाकिर हुसैन और पंडित शिवकुमार शर्मा की जुगलबंदी भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में एक अद्भुत और अद्वितीय घटना थी। दोनों ही अपने-अपने वाद्य यंत्रों के महारथी थे। जब ये दोनों मंच पर एक साथ आते थे, तो एक ऐसा जादुई माहौल बन जाता था जो श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देता था। जाकिर हुसैन की तबले की थाप और शिवकुमार शर्मा के संतूर की मधुर ध्वनियाँ एक साथ मिलकर एक ऐसा लयबद्ध मिश्रण बनाती थीं, जो सुनने में बेहद सुखद होता था।

दोनों कलाकार एक-दूसरे की लय को अच्छी तरह समझते भी थे और उसके साथ तालमेल बिठाते हुए संगीत को एक नई ऊँचाई पर ले जाते थे। उनकी जुगलबंदी केवल संगीत नहीं थी, बल्कि एक आत्मिक संवाद थी। ऐसा लगता था जैसे दोनों कलाकार अपने-अपने वाद्य यंत्रों के माध्यम से एक-दूसरे से बातें कर रहे हों। कभी तबले की तेज गति संतूर की मधुर तान के साथ बात करती थी, तो कभी संतूर की धीमी लय तबले की जोरदार थाप के साथ संवाद करती थी। उनकी जुगलबंदी में भावनाओं की गहराई होती थी। वे अपने संगीत के माध्यम से श्रोताओं को एक अलग ही भावनात्मक या यूँ कहें कि आध्यात्मिक दुनिया में ले जाते थे। दोनों कलाकार अपने-अपने वाद्य यंत्रों के उस्ताद थे और उनकी कलात्मकता का कोई जवाब नहीं था। जाकिर हुसैन की उंगलियां तबले पर ऐसे थिरकती थीं जैसे कोई जादू कर रही हों, और शिवकुमार शर्मा अपने संतूर से ऐसे मीठे स्वर निकालते थे, जो सीधे दिल को छू जाते थे। जाकिर हुसैन की लय और ताल पर गजब की पकड़ थी। वे मुश्किल से मुश्किल तालों को भी आसानी से बजा लेते थे। वह तबला बजाते समय नए-नए प्रयोग करते रहते थे, जिससे उनकी प्रस्तुति हमेशा ताजा और दिलचस्प लगती थी। जाकिर हुसैन के तबले की धुन में एक अलग ही भावना होती थी, जो सुनने वाले को छू जाती थी। जाकिर हुसैन ने तबला वादन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। उन्होंने दुनिया भर के कई कलाकारों के साथ काम किया और तबले को एक वैश्विक वाद्य यंत्र बनाया। पंजाब घराने से संबंध खने वाले जाकिर हुसैन अपनी जटिल और बारीक लयकारी के लिए जाने जाते थे। वे मुश्किल तालों को भी सहजता से बजाते। उनकी लय में एक अद्भुत प्रवाह होता, जो संगीत को जीवंत और गतिशील बनाता। वे अपनी उंगलियों को तबले पर इस तरह चलाते जैसे कोई जादू कर रहे हों। जाकिर हुसैन हमेशा नई-नई लय और तालों का प्रयोग करते रहते, जिससे उनका संगीत हमेशा नया और रोमांचक लगता। मैंने जाकिर हुसैन के कार्यक्रमों को दिल्ली और पटना में अनेकों बार निकटता से देखा है। वे हर बार छा जाते थे। उनके तबले से निकलने वाली हर ध्वनि स्पष्ट और सटीक होती थी। वे तबले के विभिन्न हिस्सों से अलग-अलग तरह की आवाजें निकालने में माहिर थे। उनकी उंगलियां तबले पर इतनी तेजी से चलती थीं कि देखने वाले भी हैरान रह जाते। वे अपनी अंगुलियों से विभिन्न तरह के बोल और लय बजाते। वह तबले के साथ संवाद करते हुए महसूस होते। इस तरह से लगता था कि मानो उनकी उंगलियां तबले से जैसे कोई कहानी कह रही हों। जाकिर हुसैन शिखर पर अपनी कड़ी मेहनत के बल पर पहुंचे थे। वे अंत तक हर दिन रियाज करते, जिससे उनकी कला में निखार बना रहे। उनकी संगीत में जान बसती थी। उनका जुनून उनके प्रदर्शन में साफ दिखाई देता था। जाकिर हुसैन हमेशा नई चीजों को सीखने और प्रयोग करने के लिए तैयार रहते।

अंबेडकर के प्रति सच्ची श्रद्धा राष्ट्र दृष्टिकोण में, न कि नाम जपने में

बुलंद बयानबाजी के बावजूद, जाति-आधारित भेदभाव प्रणालीगत बना हुआ है, जिसका सबूत दलितों के खिलाफ हिंसा जैसी चल रही घटनाओं से मिलता है। दलितों के मुद्दों को उठाने में इंडिया ब्लॉक की तीव्रता हाशिए पर पड़े समूहों के संघर्षों की वास्तविक समझ की कमी के विपरीत है। सरकार ने महिला सशक्तीकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 जैसी पहल की है। इसने अंबेडकर की विरासत का सम्मान करने के लिए पंच तीर्थ स्थलों का निर्माण करके दलितों की गरिमा पर जोर दिया।

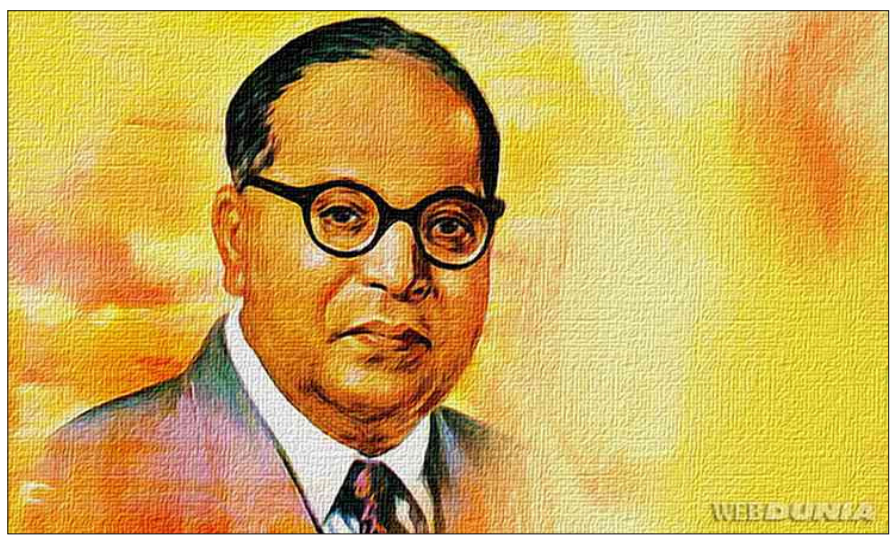

प्रियंका सौरभ
लेखक

बाबासाहेब अम्बेडकर की विरासत पर चल रहा राजनीतिक विवाद, इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे राजनेता, विशेष रूप से प्रमुख जातियों के, जाति-आधारित भेदभाव को सम्बोधित किए बिना इसका शोषण करते हैं। यह इस बात पर जोर देता है कि दलित केवल पहचान के लिए नहीं, बल्कि सम्मान, समानता और अवसरों के लिए लड़ते हैं और राष्ट्र के लिए अम्बेडकर के दृष्टिकोण पर जोर देते हैं। गृह मंत्री अमित शाह द्वारा अम्बेडकर के समर्थकों द्वारा ह्लईश्वर की गलत खोजह्व के बारे में हाल ही में की गई टिप्पणियों ने आधुनिक भारत में जाति व्यवस्था की निरंतरता पर चर्चाओं को फिर से हवा दे दी है। इन टिप्पणियों ने इस बात पर बहस छेड़ दी है कि क्या वे जाति-आधारित भेदभाव के खिलाफ दशकों से चल रही सक्रियता को कमजोर करती हैं। बी.आर. अम्बेडकर के विचार और दृष्टिकोण अत्यधिक प्रासंगिक बने हुए हैं, जो न केवल दलितों के लिए बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। अम्बेडकर के सिद्धांतों को चुनिंदा रूप से अपनाना और हाशिए पर पड़े समूहों से सम्बंधित मुद्दों पर अपर्याप्त ध्यान उनके मिशन के सार को कमजोर करता है। अम्बेडकर को देवता बनाने की प्रथा सामाजिक परिवर्तन और दलित समुदाय को सशक्त बनाने में उनके अपार योगदान में निहित है। राजनेता, जिनमें से अधिकांश प्रमुख जातियों से हैं, जातिगत भेदभाव को सम्बोधित किए बिना अंबेडकर की विरासत पर बहस कर रहे हैं। कांग्रेस ने ऐतिहासिक रूप से अंबेडकर की पहल का विरोध किया, आरक्षण और मंडल आयोग की सिफारिशों का विरोध किया। पार्टी ने जातिगत वास्तविकताओं को सम्बोधित करने के बजाय दलितों को एक गरीब वर्ग (ह्लगरीब जनताह्व) के रूप में माना। बजट आवंटन के बावजूद दलितों को अभी भी शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जो 50-60 साल पहले की तरह ही है। अंबेडकर की विरासत पर संसद की बहस प्रमुख जाति के राजनेताओं के बीच जातिगत प्रवचन की सतहीता को उजागर करती है। बुलंद बयानबाजी के बावजूद, जाति-आधारित भेदभाव प्रणालीगत बना हुआ है, जिसका सबूत दलितों के खिलाफ हिंसा जैसी चल रही घटनाओं से मिलता है। दलितों के मुद्दों को उठाने में इंडिया ब्लॉक की तीव्रता हाशिए पर पड़े समूहों के संघर्षों की वास्तविक समझ की कमी के विपरीत है। सरकार ने महिला सशक्तीकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 जैसी पहल की है। इसने अंबेडकर की विरासत का सम्मान करने के लिए पंच तीर्थ स्थलों का निर्माण करके दलितों की गरिमा पर जोर दिया। ज्ञान (गरीब, युवा, अन्नदाता, नारी) जैसे कार्यक्रमों का उद्देश्य दलितों सहित हाशिए पर पड़े समूहों को सशक्त बनाना है। हाल के वर्षों में भाजपा में दलितों का प्रतिनिधित्व काफी बढ़ा है। इन प्रयासों के बावजूद, जाति-आधारित भेदभाव जारी है, जिसमें दलित व्यक्ति पर पेशाब करने जैसी घटनाएँ शामिल हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल, जैसे नारी शक्ति वंदन अधिनियम और पंच तीर्थ स्थलों का उद्देश्य दलितों के सम्मान और विमर्श को ऊपर उठाना है। भाजपा ने राष्ट्रीय स्तर पर दलित नेताओं को अभूतपूर्व रूप से शामिल किया है। अंबेडकर के विचार दलितों से परे हैं, जो सभी हाशिए पर पड़े समूहों के लिए भेदभाव और असमानता का समाधान प्रस्तुत करते हैं। ध्यान अस्तित्व से हटकर समान अवसर और शासन और प्रशासन में प्रतिनिधित्व की आकांक्षाओं पर केंद्रित हो गया है। अंबेडकर के प्रति सच्ची श्रद्धा राष्ट्र के लिए उनके दृष्टिकोण को अपनाने में निहित है, न कि केवल उनका नाम जपने या उनकी छवि का आह्वान करने में। बाबासाहेब अंबेडकर एक पूजनीय व्यक्ति बने हुए हैं, जो दलितों की सम्मान और समानता की आकांक्षाओं के केंद्र में हैं। उनकी विरासत दलितों से आगे तक फैली हुई है, जो भेदभाव और राष्ट्र निर्माण पर व्यापक चचाओं को प्रभावित करती है। दलित केवल पहचान की राजनीति से परे समान अवसर, शासन में समानता और अपनी आकांक्षाओं के लिए सम्मान चाहते हैं। उनका संघर्ष आकांक्षा और राष्ट्रीय समावेशिता के व्यापक विषयों को शामिल करता है। दलित पहचान के संकट से नहीं जूझ रहे हैं; उनका संघर्ष सम्मान, मान्यता, अवसर और समानता पर केंद्रित है। अंबेडकर से लेकर कांशीराम, मायावती और रामविलास पासवान जैसे नेताओं तक, दलित आंदोलन लचीलेपन और आकांक्षाओं की विरासत पर आधारित है। दशकों से तुष्टिकरण की राजनीति ने दलितों को वंचित रखा है, कुछ लाभ प्रदान किए हैं जबकि समानता की उनकी आकांक्षाओं को दबा दिया है। अंबेडकर की विरासत पर बहस आधुनिक भारत में जातिगत भेदभाव की निरंतरता को रेखांकित करती है। जाति मानव समानता और सम्मान के साथ सबसे महत्त्वपूर्ण विश्वासघात बनी हुई है, जो सच्ची सामाजिक प्रगति में बाधा डालती है। जाति-आधारित पूर्वाग्रहों को चुनौती देने और समुदायों में आपसी सम्मान को बढ़ावा देने के लिए अभियानों और शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करें। भेदभाव विरोधी कानूनों को लागू करें और जाति-आधारित हिंसा और असमानता के लिए कठोर दंड का प्रावधान करें। दलितों और अन्य हाशिए के समूहों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार के अवसरों तक पहुँच का विस्तार करें। सामूहिक गौरव को प्रेरित करने के लिए राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर अंबेडकर जैसे दलित नेताओं के योगदान को पहचानें और उनका सम्मान करें। शिकायतों को दूर करने और विश्वास बनाने के लिए समुदायों के बीच खुली चर्चा की सुविधा प्रदान करें। राजनीतिक नेताओं से विभाजनकारी बयानबाजी से बचने और सामाजिक न्याय के लिए नीतियों पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह करें। समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए शासन, शिक्षा और निर्णय लेने वाली संस्थाओं में दलितों का प्रतिनिधित्व बढ़ाएँ। हाशिए के समुदायों के भीतर समानता और सम्मान की वकालत करने वाली स्थानीय पहलों का समर्थन करें।

अंबेडकर की आड़ में वोट बैंक की कवायद

योगेन्द्र योगी

राजनीतिक दलों के लिए दलित वोट बैंक शुरू से ही सत्ता बटोरने का साधन रहा है। हकीकत में दलितों की दयनीय हालत को बदलने के बजाय राजनीतिक दल ऐसा कोई मौका नहीं छोडा चाहते जिससे यह साबित कर सकें कि वे ही दलितों के असली मसीहा हैं। यही वजह है कि संसद में अंबडेकर को लेकर जोरदार हंगामा बरपा रहा। विपक्षी दल दलित वोट बैंक को भाजपा से अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए अंबेडकर के जरिए पुरजोर कोशिश में जुटे हुए हैं। लोकसभा में भाजपा गठबंधन के हाथों लगातार तीसरी बार पराजय झेल चुके विपक्षी दल केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के इस्तीफे की मांग से हार की क्षतिपूर्ति करना चाहते हैं। असलियत में इन दलों को न अंबेडकर के उसूलों की परवाह है और न ही दलितों के हितों की। संविधान पर संसद में चल रही बहस के दौरान गृह मंत्री अमित शाह ने अपने भाषण के दौरान कहा था कि आजकल अंबेडकर का नाम लेना एक फैशन बन गया है। उन्होंने कहा कि अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर इतना नाम अगर भगवान का लेते तो सात जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता। अमित शाह के पूरे भाषण के एक अंश को लेकर विपक्ष ने शाह के इस्तीफे की मांग करते हुए संसद की कार्यवाही ठप कर दी। विपक्ष के हाथ तो मानो सुनहरा मौका लग गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अमित शाह के बचाव में पीछे नहीं रहे। मोदी ने भाषण के बारे में लंबा पोस्ट किया। उन्होंने कहा कि अमित शाह ने संसद में अंबेडकर को अपमानित करने के काले अध्याय को एक्सपोज किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के अंबेडकर के प्रति किए गए पापों की लंबी फेहरिस्त है, जिसमें उन्हें दो बार चुनावों में हराना भी शामिल है। अमित शाह के इस बयान पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर राहुल गांधी ने लिखा कि मनुस्मृति मानने वालों को अंबेडकर जी से तकलीफ बेशक होगी ही। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने कहा कि गृह मंत्री अमित शाह ने भरे सदन में बाबा साहेब का अपमान किया है। उससे फिर एक बार सिद्ध हो गया है कि बीजेपी और आरएसएस तिरंगे के खिलाफ थे। दलित वोट बैंक के आकर्षण से इस विवाद में कूदने में कोई भी दल पीछे नहीं रहा। उधर उद्धव ठाकरे ने कहा कि अमित शाह की टिप्पणी भाजपा के अहंकार को दशार्ती है और इसने पार्टी के असली चेहरे को उजागर किया है। उन्होंने यह भी पूछा कि भाजपा के सहयोगी दल, जैसे जनता दल (यूनाइटेड), तेलुगू देशम पार्टी और रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया, क्या अंबेडकर के बारे में अमित शाह की टिप्पणी से सहमत हैं? आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल ने कहा कि शाह की टिप्पणी बेहद अपमानजनक है। केजरीवाल ने कहा कि बाबा साहेब का अपमान हिंदुस्तान नहीं सह सकता। वे इस देश के लिए भगवान से कम नहीं हैं। राष्ट्रीय जनता दल के प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने कहा कि गृह मंत्री को राजनीति छोड़ देनी चाहिए और चले जाना चाहिए। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव कहा कि बहुत लंबा भाषण था। पत्रकारों से बेहतर कौन जानता होगा कि जुमले से किसको जाना जाता था। आज हमको 11 जुमलों का संकल्प सुनने को मिला। उत्तर प्रदेश के नगीना से सांसद चंद्रशेखर ने भी अमित शाह के बयान को अंबेडकर के संघर्ष का अपमान बताया। इन बयानों में राजनीतिक दलों की कोरी चिंताएं झलकती हैं। दलितों के साथ इस देश में किस तरह की राजनीति की गई है, इसका बड़ा उदाहरण बहुजन समाज पार्टी सुप्रीमो मायावती हैं। मायावती के उत्तर प्रदेश में शासन के दौरान सरकारी लूट-खसूट में कसर बाकी नहीं रही। मायावती ने पूरे प्रदेश में चुनाव चिन्ह हाथी और अंबेडकर के साथ खुद की मूर्तियां सरकारी खर्च पर लगवाईं। वर्ष 2013 में लोकायुक्त ने जांच करके एक रिपोर्ट दी थी। लोकायुक्त ने रिपोर्ट में कहा था कि 14 अरब से ज्यादा का घोटाला है। आश्चर्य यह है कि गैर भाजपा राज्यों में दलितों पर हुए अत्याचार विपक्षी दलों को नजर नहीं आए। राजस्थान में कांग्रेस के शासन के दौरान दलित युवतियों से सामूहिक बलात्कार और हत्या की घटनाएं हुईं। अंबेडकर की दुहाई देने वाले विपक्षी दल आज तक यह खुलासा नहीं कर सके कि किस प्रदेश में दलितों ने सर्वाधिक तरक्की की है? दलितों के सामाजिक-आर्थिक जीवन स्तर में कितना बदलाव आया है? दरअसल भ्रष्टाचार की गाज दलितों की योजनाओं पर भी गिरी है।

सीएम योगी बोले, आधी आबादी की उपेक्षा करके सशक्त और समर्थ नहीं हो सकता समाज

प्रात: किरण संवाददाता

गोरखपुर, 21 दिसंबर (वेब वार्ता)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को कहा कि आधी आबादी की उपेक्षा करके कोई भी समाज सशक्त और समर्थ नहीं हो सकता। हर महिला में सफलता की नई कहानी लिखने का सामर्थ्य है। मुख्यमंत्री योगी शनिवार को योगिराज बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह में राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एसआरएलएम) द्वारा संचालित श्री बाबा गोरखनाथ कृपा दुग्ध उत्पादक संस्था और इस संस्था द्वारा गोरखपुर मंडल के अंतर्गत सात दुग्ध अवशीतन केंद्रों के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि महिलाओं के लिए काम की भी कोई कमी नहीं है। जरूरत एक फील्ड का चयन कर उसके अनुरूप प्रशिक्षण लेकर खुद को तैयार करने और परिश्रम व पूरी तन्मयता से आगे बढ़ने की है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि देश और समाज के विकास तथा इसे सशक्त और शक्तिशाली बनाने के लिए महिला सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन की दिशा में कार्य करना ही होगा। उन्होंने महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि सफलता को सभी जय जयकार करते हैं और विफलता को दुत्कारते हैं। जन्म सफलता के लिए हुआ है, दुत्कारने के लिए नहीं। जब हम सही दिशा में अच्छा कार्य करेंगे तो सफलता के साथ सराहना भी मिलेगी। इसलिए सही दिशा में बढ़ें और कभी असफलता मिले तो उसकी समीक्षा कर कमियों को दूर करें। याद रखना होगा कि परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता है। सही दिशा में किए गए परिश्रम से ही सफलतम कहानियां लिखी जाती हैं। सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा और मार्गदर्शन में महिला सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन यानी नारी सशक्तिकरण का नया दौर शुरू हुआ है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना हो, नारी वंदन, या फिर प्रदेश में मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना और मातृ वंदना योजना ये सभी महिला सशक्तिकरण के लिए ही हैं। पहली बार स्वतंत्र भारत मे महिलाओं को यह अनुभव हुआ कि उनके नाम पर योजनाएं बनी हैं और इसका लाभ भी उन्हें प्राप्त हो रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन के तहत हर घर में बने शौचालय नारी गरिमा के प्रतीक हैं तो मुफ्त रसोई गैस कनेक्शन नारी सम्मान और समर्थ नारी का अभियान। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने बताया कि आगामी 27 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उत्तर प्रदेश के 40 लाख परिवारों को पीएम स्वामित्व योजना के तहत घरौनी प्रमाणपत्र वितरित करेंगे। इसके पहले प्रदेश के 60 लाख परिवारों को घरौनी प्रमाणपत्र दिया जा चुका है। सीएम योगी ने उत्कृष्ट कार्य करने वाली विद्युत सखियों, बीसी सखियों, लखपति दीदियों, नमो ड्रोन दीदियों और बैंक सखियों को प्रमाणपत्र वितरित करने के अलावा राष्ट्रीय आजीविका मिशन से जुड़ी 7,405 महिला स्वयं सहायता समूहों को 242.30 करोड़ रुपये की सहायता राशि का हस्तांतरण भी किया।

पलवल: नशीला पदार्थ पिलाकर महिला से रेप,3 साल तक किया ब्लैकमेल, वीडियो वायरल होने पर पति ने देखी

पलवल, । पलवल में युवकों ने महिला को नशीला पदार्थ पिलाकर रेप करने का मामला सामने आया है। इसके बाद अश्लील वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करके 1 लाख रुपए हड़पे, फिर बाद में महिलाओं का वीडियो और फोटो भी वायरल कर दिया। जिसके बाद पीड़ित महिला ने पुलिस को इसकी शिकायत दी। जब महिला के पति ने आरोपियों का फोन चेक किया तो उसमें गांव के दूसरी महिलाओं की भी अश्लील फुटेज मिले। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। यह मामला पलवल जिले के उपमंडल हथीन के बहीन थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी विवाहिता ने शनिवार को पुलिस को शिकायत दी है। जिसमें उसने बताया कि 3 साल पहले आरोपी कर्मवीर और सोनू ने उसके घर पर आकर नशीला पदार्थ पिला दिया। इसके बाद आरोपियों ने महिला की बेहोशी की हालत में रेप किया और अश्लील वीडियो व फोटो अपने मोबाइल के कैमरे में कैद कर लिया। आरोपियों ने इसके बाद महिला को ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। महिला को अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी देकर आरोपी युवक उससे पैसों की डिमांड करने लगे

नोएडा में स्ट्रीट क्राइम की रोकथाम के लिए पुलिस का एक्शन, एंकाउंटर में 3 बदमाश गिरफ्तार

प्रात: किरण संवाददाता

नोएडा,। गौतम बुद्ध नगर पुलिस कमिश्नरेट का सड़कों पर होने वाले अपराध को रोकने के लिए चलाये जा रहे चेकिंग अभियान में पुलिस को बड़ी सफलता मिली. जब अलग-अलग थाना क्षेत्रों में हुए दो एंकाउंटर में दो बदमाश पुलिस की गोली लगने से घायल हो गये. जबकि एक बदमाश को पुलिस ने कॉबिंग ऑपरेशन में पकड़ा है. बदमाश के पास से लूटा हुआ मोबाइल फोन, चोरी हुई मोटरसाइकिल, तमंचा और कारतूस बरामद किया गया है. पुलिस चेकिंग अभियान के दौरान बदमाशों की पहचान : पुलिस के हिरासत में इलाज के लिए ले जाए जा रहे बदमाश की पहचान दीपक के रूप में हुई है जो एक शातिर लुटेरा है. चोरी और मोबाइल लूट के मामले थाना सेक्टर-24, नोएडा और थाना कल्याणपुरी दिल्ली से जेल जा चुका है, एडीसीपी नोएडा जोन-1 ने बताया कि सेक्टर-57, नोएडा पर थाना सेक्टर-58, नोएडा की पुलिस टीम द्वारा चेकिंग की जा रही थी. दो बदमाश घायल, दूसरा कॉबिंग के दौरान गिरफ्तार : चेकिंग के दौरान एक मोटर साइकिल पर दो व्यक्ति सवार आते दिखायी दिये, जिन्हें पुलिस ने रुकने का इशारा किया लेकिन वह नहीं रुके और पुलिस टीम पर फायरिंग कर तेजी से चौकी सेक्टर-57 की तरफ सर्विस रोड से भागने लगे. पुलिस जवाबी कार्रवाई में बदमाश पैर में गोली लगने के कारण घायल हो गया. जिसकी पहचान दीपक पुत्र हरीश के रूप में हुई है. उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है. मौके से फरार उसके साथी रामकिशन वर्मा को कॉबिंग के दौरान गिरफ्तार किया गया है. घायल बदमाश को अस्पताल में कराया गया भर्ती : पुलिस और बाइक सवार बदमाश के बीच दूसरी मुठभेड़ थाना फेस 2 में हुई. सेक्टर-83 मेट्रो स्टेशन की तरफ वाले रोड की तरफ गंदा नाले की सर्विस पर हुई. एडीसीपी नोएडा सेंट्रल ने बताया कि थाना फेस 2 नोएडा पुलिस द्वारा याकूबपुर रेड लाइट पर संदिग्ध व्यक्ति और वाहन की चेकिंग के दौरान एक बिना नम्बर की बाइक पर सवार व्यक्ति को रुकने का इशारा किया गया तो वो नहीं रुका और भागने लगा, जब पुलिस ने पीछा किया तो उसने तमंचे से पुलिस टीम पर फायर किया. पुलिस की कार्यवाही में बदमाश पैर में गोली लगने के कारण घायल हो गया. बदमाश की पहचान सुमित गुप्ता के रूप में हुई है. पुलिस ने उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है. गिरफ्तार तीनों बदमाशों से लूट के कई सामान बरामद : प्रारंभिक जानकारी के अनुसार सुमित एक नामी फूड चेन कंपनी में काम करता था और ठठफक्षेत्र में मोटर साइकिल से लोगो के मोबाइल की लूट को अंजाम देता था. सुमित के पास से बिना नम्बर की काले रंग की स्पेलंडर प्लस बाइक, लूटा हुआ 3 मोबाइल फोन, तमंचा और कारतूस बरामद किया गया है. उनके आपराधिक रिकॉर्ड की जानकारी की जा रही है.

संक्षिप्त खबरें

फरीदाबाद : पुलिस के प्रयासों से वर्ष 2024 में महिला अपराधों में आई कमी

फरीदाबाद,। फरीदाबाद पुलिस की सख्त कार्रवाई व सतर्कता से अभी तक वर्ष 2023 की अपेक्षा 2024 में महिला विरुद्ध अपराधों के 181 मामलों की कमी दर्ज की गई है। वर्ष 2023 के 720 के मुकाबले वर्ष 2024 में दर्ज हुए हैं 539 मामले, 181 मामलों की कमी आई है। पुलिस प्रवक्ता ने शनिवार को बताया कि महिला विरुद्ध अपराध के शीर्षक दुष्कर्म के साथ हत्या के वर्ष 2023 में 4 के मुकाबले 2024 में एक मामला, अश्लील शब्दों का प्रयोग करने के 5 के मुकाबले एक, दहेज हत्या के 32 मामलों के मुकाबले 23, छेड़छाड़ के 127 के मुकाबले 77 मामले, 8/12 पोक्सो के 56 के मुकाबले 47, नाबालिग लडकी को बहला फुसलाकर ले जाने के 85 के मुकाबले 49 मामले, महिला को शादी के लिए मजबूर करने या दुष्कर्म आदि के लिए अपहरण के 25 के मुकाबले 15 मामले, दुष्कर्म के 169 के मुकाबले 105 मामले, सामूहिक दुष्कर्म के 6 के मुकाबले 3 तथा दुष्कर्म के प्रयास के वर्ष 2023 में 8 मामलों के मुकाबले वर्ष 2024 में 06 मामले दर्ज हुए हैं। इस प्रकार महिला विरुद्ध अपराध के अंतर्गत वर्ष 2023 में 720 मामलों के मुकाबले वर्ष 2024 में 539 मामले दर्ज हुए हैं। जिनमें 181 मामलों की कमी दर्ज की गई है।

मंदिर-मस्जिद विवाद पर मोहन भागवत के बयान का संभल के मुस्लिम लोगों ने किया समर्थन

संभल,। राष्ट्रीलोय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत के मंदिर-मस्जिद विवाद को लेकर दिए बयान पर संभल के लोगों ने प्रतिक्रिया दी है। मुस्लिम लोगों ने उनके बयान का समर्थन करते हुए कहा कि उन्होंने बिल्कुल सही कहा है। संभल के निवासी शाहिद अख्तर ने कहा कि मैं मोहन भागवत के बयान का स्वागत करता हूं। उन्होंने सही कहा है कि हर मस्जिद के नीचे मंदिर मत ढूंढों। मस्जिद बहुत ईमानदारी के पैसे से और साफ जगह पर बनती है। हमारे इस्लाम में कहा गया है कि किसी की जमीन पर कब्जा करके मस्जिद मत बनाओ। देश भाईचारे से चलता है, नफरत से नहीं। हिंदू, मुस्लिम, सिख और ईसाई मिलेंगे तो देश खुशहाल होगा और तरक्की होगी। संभल के निवासी जफर हुसैन का कहना है कि मोहन भागवत ने जो बयान दिया है वो सही है। मोहन भागवत ने सही कहा है कि हर मस्जिद के नीचे मंदिर मत ढूंढो। यह सही नहीं है।

प्रयागराज में आस्था और आधुनिकता का संगम, डोम सिटी में हर समय पर्यटक ले सकेंगे

महाकुंभनगर, 21 दिसंबर। जनवरी 2025 से त्रिवेणी के तट पर आयोजित होने जा रहे महाकुंभ को दिव्य, भव्य और नव्य स्वरूप प्रदान करने का योगी सरकार का संकल्प है। इसे मूर्त रूप देने के लिए पर्यटन विभाग भी निजी संस्थाओं के साथ मिलकर नए प्रतिमान बना रहा है। महाकुंभ नगर के अरैल क्षेत्र में तैयार हो रही डोम सिटी इसी की एक झलक देती है। संगम में महाकुंभ की शुरूआत के पूर्व ही आस्था और अध्यात्म की दुनिया आकार लेने लगी है। इस आयोजन के साक्षी बनने जा रहे करोड़ों पर्यटकों और श्रद्धालुओं के लिए कुम्भ क्षेत्र आधुनिकता का एक ऐसा भव्य शहर तैयार हो रहा है जिसे देखकर हर किसी की आँखें चौंधिया जाएं। आधुनिकता, भव्यता और अध्यात्म का यह अद्भुत मेल है डोम सिटी, जिसे पर्यटन विभाग के सहयोग से एक निजी कंपनी ईवो लाइफ स्पेस प्रा. लि. तैयार कर रही है। कंपनी के निदेशक अमित जौहरी का कहना है कि उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने पर्यटन के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इसी श्रृंखला में उनकी यह कल्पना त्रिवेणी की रेत पर साकार हो रही है जिसके लिए पर्यटन विभाग की तरफ से सवा तीन हेक्टेयर जमीन उन्हें मिली है, जिसमें देश की पहली डोम सिटी तैयार हो रही है।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिवस पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

● अटल बिहारी वाजपेयी राष्ट्रवाद एवं सामाजिक समरसता की जीवंत किवंदती थे : श्री सुधीर गिरि

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय में उत्तर प्रदेश शासन के आदेश के अनुपालन के क्रम में जिला प्रशासन के साथ मिलकर भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिवस सप्ताह समारोह पर वाद-विवाद प्रतियोगिता/ भाषण प्रतियोगिता/ निबंध प्रतियोगिता एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता का शानदार आयोजन किया गया।इसके साथ ही प्रसिद्द कवि डा. राहुल अवस्थी, डा. श्रीगोपाल नारसन, डा. मधु चतुर्वेदी, डा. यतीन्द्र कटारिया एवं वरिष्ठ कवि योगेन्द्र नाथ अरुण ने अटल जी पर शानदार कवितायेँ सुनाकर सभी को भाव-विभोर कर दिया।श्री शनिवार को श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय के रविंद्रनाथ टैगोर आडिटोरियम में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी जी के जन्मदिवस सप्ताह समारोह पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ संस्थापक अध्यक्ष सुधीर गिरि, प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी, डा. ओमवीर सिंह, डा. मधु चतुर्वेदी, कुलपति प्रो. (डा.) कृष्ण कान्त दवे, डा. यतीन्द्र कटारिया आदि ने सरस्वती माँ की प्रतिमा के सन्मुख दीप प्रज्वलित करके एवं अटल जी के चित्र पर पुष्प अर्पित करके किया। अपने सम्बोधन में मुख्य वक्ता प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी ने कहा कि अटल जी जैसा महान व्यक्तित्व सदियों में एकाध ही बार अवतरित होता है। उन्होंने इस देश में धर्म, जाति एवं सामाजिक समरसता का संदेश दिया। डा. राजीव त्यागी ने उपस्थित बच्चों को अटल जी की प्रिय पंक्तियाँ- हार नही मानूंगा, रार नयी ठानूंगा के द्वारा जीवन में संघर्ष के मायने बताएं निर्णायक मण्डल की अध्यक्षा/ जज डा. मधु चतुर्वेदी ने अटल जी को भारत के सामाजिक सौहार्द का ब्रांड एम्बेसडर बताया। इस अवसर पर डा. रितुराज सिंह, डा. अनिल जायसवाल, डा. गीता कौशिक, डा. पंकज रानी, डा. सोहेंन सिंह, डा. ओमवीर सिंह, नीलम शर्मा, अंकित चौहान डा. जितेन्द्र सिंह, ईमराना, डा. अंजलि चौधरी, डा. श्वेता अग्रवाल मेरठ परिसर निदेशक डा. प्रताप सिंह एवं मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग उपस्थित रहे।

सदर विधायक महबूब अली ने सपाईयों संग जिला मुख्यालय पर सौंपा ज्ञापन

केन्द्रीय मंत्री अमित शाह की आपत्तिजनक टिप्पणी से संविधान निमार्ता का अपमान : महबूब अली

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। समाजवादी पार्टी के कद्दावर नेता पूर्व कैबिनेट मंत्री, सदर विधायक/लोक लेखा समिति के चेयरमैन हाजी महबूब अली, विधायक सपा प्रमुख/पूर्व कैबिनेट मंत्री ने अखिलेश यादव के निदेर्शानुसार जिला मुख्यालय पर महामहिम राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया। श्री अली ने कहा कि केन्द्रीय मंत्री अमित शाह द्वारा भारतीय सविंधान के जनक दलितो, पिछड़ो के मसीहा भारत रत्न बाबा सहाब डा० भीमराव अम्बेडकर जी पर आपत्तिजनक टिप्पणी की है, जिससे देश/प्रदेश के पिछडो, दलित, वचिंत, एवं शोषित जनमानस को गहरा अधात पहुँचा है। ग्रहमंत्री जी की इस टिप्पणी से दलितों व पिछड़ो के प्रति भाजपा की संविधान विरोधी मानसिकता प्रकट होती है।इस मौके पर समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष मस्तराम यादव, समरपाल सिंह, मा० विधायक, परवेज अली, पूर्व सदस्य विधान परिषद, शशीकांत गोयल, यामीन फारूकी, बॉबी भगत सिंह, अतीक अहमद, आलेमीन सैफी, साजिद अली, जाकिर हुसैन, जितेन्द्र यादव, रफट प्रधान, आदि सैकडो की संख्या में समाजवादी कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

श्रीमद् भागवत कथा में मनुष्य को जीवन की छोटी- छोटी बातों पर भी अमल करने की सीख

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। श्रीमद् भागवत कृष्ण सेवा समिति के तत्वाधान में शनिवार को दूसरे दिन शहर में खत्री धर्मशाला बड़ा बाजार में दोपहर 3 बजे से कथा का प्रारंभ हुआ। जो कि सायं 6: 30 तक चली। जिसमें श्रद्धेय आचार्य व्योम त्रिपाठी ने मुखारविंद से श्रद्धालुओं को कथा का रसपान कराया।आज का प्रसंग भक्तों को भाव विभोर करने वाला रहा। गुरु जी की कथा में विशेष बात यह रही कि जीवन की छोटी छोटी बातों पर अमल करते हुए अपने जीवन में उतारने का संकल्प कराया, व्योम त्रिपाठी जी ने बताया कि प्रभु का नाम लेने के लिए जरूरी नहीं कि हम उनके नाम की माला जपे, अपने हर काम को करते समय, सोते जागते खाते पीते आते जाते भी अगर हम प्रभु का नाम ले लिया करें तो वो भी प्रभु की भक्ति ही होती है, साथ ही आज के प्रसंग में भगवान के 24 अवतारों के बारे में बहुत ही मार्मिक रूप से भक्तों को अवगत कराया। इसमें विशेष रूप से प्रभु श्री राम और प्रभु श्री कृष्ण की महिमा का बहुत ही सुंदर वर्णन किया। आज के मुख्य यजमान अजय त्रेहान, अर्शी त्रेहान एवं प्रांजल अग्रवाल, रौनक अग्रवाल रहे। आज की कथा में सैकड़ों की संख्या में महिला और पुरुष श्रद्धालु मौजूद रहे। श्रीमद् भागवत कृष्ण सेवा समिति के सदस्यों में प.कपिल शर्मा, विजय चतुर्वेदी, कुंवर विनीत अग्रवाल, मनोज टंडन, सुबोध रस्तोगी, निखिल जैन,वेद बंसल, आलोक अग्रवाल, राजीव गुप्ता, नीरज अग्रवाल, दीपक बंसल,अनुराग सैनी, जय कुमार जिंदल , पंकज जिंदल, विवेक शर्मा ,गोपाल अग्रवाल, देवेंद्र मोहन गुप्ता, अर्पित अग्रवाल, कपिल वर्मा ,सौरभ अग्रवाल,सचिन अग्रवाल ,मुदित अग्रवाल मेरठ, पंकज गुप्ता , मुन्ना माहेश्वरी, आशीष त्रेहान व्यवस्था बनाने में लगे रहे।

चेयरपर्सन शशि जैन ने किया बाजार कोर्ट में सार्वजनिक शौचालय का उद्घाटन

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। चेयरपर्सन शशि जैन एवं अधिशासी अधिकारी डॉ बृजेश कुमार ने बाजार कोट मे स्थित एम. सी. एच. विंग (सरकारी अस्पताल) के गेट पर एक सर्व सुविधा युक्त अत्याधुनिक 5 सीट शौचालय का उद्घाटन किया। शनिवार को अध्यक्ष शशि जैन ने पालिका द्वारा बनाये गए सार्वजानिक शौचालय का फीता काटकर उद्घाटन किया गया। इस सम्बन्ध मे जानकारी देते हुए पालिका अधिशासी अधिकारी डॉ. बृजेश कुमार ने बताया की व्यापारी सुरक्षा फोरम सहित विभिन्न. व्यापारिक संगठनों द्वारा कोतवाली अमरोहा नगर से लेकर मुख्य बाजार मे बसावन गंज, बाजार गुजरी, बाजार शफात पोता, बाजार कोट, बाजार बटवाल होते हुए बिजनौर रोड तक कोई भी सार्वजानिक शौचालय न होने के कारण बाजार मे खरीदारी करने आने वाले ग्राहकों / महिलाओ हेतु कोई शौचालय न होने से काफी दिक्कत रहती थी, शौचालय हेतु उपयुक्त स्थान/ भूमि न मिलने के कारण शौचालय का निर्माण नहीं हो पा रहा था। इस समस्या समाधान करते हुए पालिका द्वारा स्वच्छ भारत मिशन शहरी अंतर्गत बाजार कोट मे स्थित एम. सी. एच. विंग (सरकारी अस्पताल) के गेट पर एक सर्व सुविधा युक्त अत्याधुनिक 5 सीट शौचालय का निर्माण कराया गया है, यह शौचालय आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है इसमें महिलाओ एवं पुरुषो के लिए पृथक पृथक कक्ष हैँ साथ ही दिव्यांगजनों हेतु रैंप एवं अलग सीट स्थापित की गयीं है। इस शौचालय के उद्घाटन कार्यक्रम मे पालिका सभासद गण, व्यापारी सुरक्षा फोरम के खत्री मनोज टंडन, मोनू यादव, कमर नकवी, समीर खान, समाजसेवी व लायन्स क्लब अमरोहा के सचिव राजेंद्र छाबड़ा पालिका के अधिकारी / कर्मचारी उपस्थित रहे।

दबंगों ने फैक्टरी में घुसकर मैनेजर को मारी गोली, गला भी दबाया, रिपोर्ट दर्ज

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। दबंगों ने फैक्टरी में घुसकर मैनेजर को गोली मार दी। जान से मारने की नीयत से गला भी दबाया। गनीमत रही गोली कंधे को छूकर निकल गई। पुलिस में शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी। फैक्टरी के गार्ड और कर्मचारियों ने मैनेजर को अस्पताल में भर्ती कराया। मामले में पुलिस ने तीन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। यह घटना डिडौली कोतवाली क्षेत्र में हटव्वा स्थित एमजीए डिजाइंस फैक्टरी में हुई। मुरादाबाद जनपद के पाकबड़ा में नए डाकघर के रहने वाले भरत कुमार गुप्ता फैक्टरी में मैनेजर के पद पर तैनात हैं। शुक्रवार की शाम करीब पांच बजे भरत कुमार गुप्ता फैक्टरी में मौजूद थे। तभी क्षेत्र के गांव करनपुर निवासी फहीम, मोहम्मद शाद और शारिक जबरदस्ती फैक्टरी में घुस आए और गाली गलौज करने लगे। विरोध करने पर जान से करने के नियत से हमला कर दिया। बचाव में आई महिला प्रोजेक्ट मैनेजर का हाथ पकड़ कर नीचे गिरा लिया। इसके बाद जान से मारने की नीयत से गला दबाया। शोर मचाने पर आरोपियों ने तमंचे से फायरिंग कर दी, जो भरत कुमार गुप्ता के कंधे को छूते हुए निकल गई। इतना ही नहीं आरोपियों ने पुलिस में शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी। आरोपियों के फैक्टरी से भागते ही लोगों की भीड़ जमा हो गई। फैक्टरी के सुरक्षाकर्मी व अन्य कर्मचारियों ने घायल मैनेजर भरत कुमार गुप्ता को अस्पताल में भर्ती कराया। सीओ सिटी अरुण कुमार ने बताया कि मामले में फहीम, मोहम्मद शाद और शारिक के खिलाफ हत्या की कोशिश व अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। मामले की जांच की जा रही है। जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

अब्दुल रहमान ,अब्दुल हमीद फाउंडेशन ने प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को किया सम्मानित

प्रात: किरण संवाददाता, नादिर त्यागी

स्योहारा।अब्दुल रहमान अब्दुल हमीद फाउंडेशन ने नगर के पांच इंटर कॉलेज के छात्र-छात्राओं को वर्ष 2024 में सर्वोच्च अंक लाने पर सम्मान पत्र और स्मृति चिन्ह देखकर सम्मानित किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉक्टर शुमायला चौधरी (आई.पी.एस.) अधिकारी रही । डॉक्टर जावेद शम्स के संचालन में संपन्न कार्यक्रम में सेवानिवृत्त अध्यापकों अब्दुल हफीज खां,शमीम अहमद जैदी,नसीम अहमद और खुर्शीद अहमद को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर आई.पी.एस. अधिकारी शुमायला चौधरी ने कहा कि वह स्योहारा क्षेत्र के सहसपुर कस्बा की रहने वाली हैं।सिविल सर्विस में आने से पहले वह मौलाना आजाद हॉस्पिटल दिल्ली में चिकित्सक थी। परंतु चिकित्सक रहते हुए उन्होंने सिविल सर्विस में परीक्षा दी। और आज वह हिमाचल केडर में एडिशनल एसपी हैं। उन्होंने कहा कि छात्र-छात्राओं की हाई स्कूल और इंटर की आयु इस तरह की आयु होती है कि वह अपने कैरियर का चुनाव ठीक से कर सके। उन्होंने छात्र,छात्राओं को लक्ष्य पर फोकस करने की सलाह उन्होंने छात्र-छात्राओं को दी। उनका कहना है कि घर पर अभिभावक बच्चों का ध्यान रखें और विद्यालय में अध्यापक अपने स्टूडेंट्स का ध्यान रखें। क्योंकि यही उम्र बच्चों के बिगड़ने की भी होती है। बच्चों की संगति पर विशेष ध्यान दें। उनके मित्र सर्कल कैसा है उस पर ध्यान दें। इस मौके पर अपने संबोधन में संस्था के अध्यक्ष तौसीफ -उर -रहमान ने कहा कि वह स्योहारा के ही निवासी हैं और उनकी शिक्षा नगर के इसी विद्यालय में हुई है। शिक्षा ग्रहण करने के बाद वह आज क्षेत्र के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं के उत्थान के लिए फाउंडेशन के माध्यम से कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह संस्था आगे भी कार्य करती रहेगी। इस मौके पर नगर के पांचो विद्यालय के हाई स्कूल और इंटर के टॉपर छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। इन कॉलेज में आरएसपी इंटर कॉलेज मुस्लिम कुदरत इंटर कॉलेज, मुस्लिम कुदरत इंटर कॉलेज गर्ल्स,श्री दिगंबर जैन इंटर कॉलेज ओर बिरला पब्लिक कन्या इंटर कालेज स्योहारा के छात्र-छात्राएं इस समारोह में शामिल हुए। समारोह को सफल बनाने में आफाक हुसैन दिल्ली, इशरत मंसूर सिद्दीकी ,मधु बाला शर्मा प्रिंसिपल,अख्तर जलील पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष, मौलाना वकील अहमद प्रबंधक मुस्लिम कुदरत इंटर कॉलेज ने सहयोग प्रदान किया।

प्रयागराज में आस्था और आधुनिकता का संगम, डोम सिटी में हर समय पर्यटक ले सकेंगे महाकुंभ का भव्य नजारा

महाकुंभनगर,। जनवरी 2025 से त्रिवेणी के तट पर आयोजित होने जा रहे महाकुंभ को दिव्य, भव्य और नव्य स्वरूप प्रदान करने का योगी सरकार का संकल्प है। इसे मूर्त रूप देने के लिए पर्यटन विभाग भी निजी संस्थाओं के साथ मिलकर नए प्रतिमान बना रहा है। महाकुंभ नगर के अरैल क्षेत्र में तैयार हो रही डोम सिटी इसी की एक झलक देती है। संगम में महाकुंभ की शुरूआत के पूर्व ही आस्था और अध्यात्म की दुनिया आकार लेने लगी है। इस आयोजन के साक्षी बनने जा रहे करोड़ों पर्यटकों और श्रद्धालुओं के लिए कुम्भ क्षेत्र आधुनिकता का एक ऐसा भव्य शहर तैयार हो रहा है जिसे देखकर हर किसी की आँखें चौंधिया जाएं। आधुनिकता, भव्यता और अध्यात्म का यह अद्भुत मेल है डोम सिटी, जिसे पर्यटन विभाग के सहयोग से एक निजी कंपनी ईवो लाइफ स्पेस प्रा. लि. तैयार कर रही है। कंपनी के निदेशक अमित जौहरी का कहना है कि उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने पर्यटन के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इसी श्रृंखला में उनकी यह कल्पना त्रिवेणी की रेत पर साकार हो रही है जिसके लिए पर्यटन विभाग की तरफ से सवा तीन हेक्टेयर जमीन उन्हें मिली है, जिसमें देश की पहली डोम सिटी तैयार हो रही है। यह पहला मौका होगा जब महाकुंभ में किसी स्थान पर स्टे करने के समय पर्यटक या श्रद्धालु किसी हिल स्टेशन की अनुभूति का अहसास कर सकेंगे। इस अनुभव का साक्षी बनने के लिए 51 करोड़ की लागत से तैयार हो रही है डोम सिटी। डोम सिटी बना रही ईवो लाइफ के डायरेक्टर अमित जौहरी के मुताबिक 15 से 18 फीट की ऊंचाई पर डोम सिटी बनाई जा रही है, जिसमें 3232 के कुल 44 डोम बन रहे हैं। इसमें 360 डिग्री पोली कार्बन शीट के डोम हैं। ये पूरी तरह बुलेट प्रूफ और फायर प्रूफ हैं। पर्यटक इसमें अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ 24 घंटे रहकर कुंभ का नजारा देख सकते हैं।

सहारनपुर : किसानों ने कलेक्ट्रेट के गेट को ट्रैक्टर से तोड़ा, एडीएम को कुचलने का प्रयास

प्रात: किरण संवाददाता

सहारनपुर,। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में प्रदर्शन के बाद कलेक्ट्रेट में ज्ञापन देने पहुंचे किसानों की पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों में तीखी नोकझोंक हो गई। ज्ञापन देने पहुंचे किसानों के ट्रैक्टर को जिला प्रशासन के अधिकारियों ने अंदर जाने से मना किया तो एक ट्रैक्टर चालक ने एडीएम को कुचलने का प्रयास किया। इसके बाद हंगामा खड़ा हो गया। इस दौरान किसानों ने प्रशासन पर लाठीचार्ज करने का आरोप लगाया। किसानों ने बंद गेट में टक्कर मारकर गेट तोड़ दिया। इसके बाद एडीएम भी किसानों पर भड़क गईं। दरअसल जब किसान कलेक्टर के गेट पर पहुंचे तो पुलिस प्रशासन ने किसानों को रोकने का प्रयास किया, इसके बाद किसानों ने बंद कलेक्ट्रेट के गेट को ट्रैक्टर से तोड़ दिया। सामने खड़ी एडीएम को आगे से हटना पड़ा, वरना बड़ा हादसा हो सकता था। किसानों ने ट्रैक्टर की स्पीड बढ़ा दी और कलेक्ट्रेट के अंदर घुस गए। किसान मजदूर संगठन (पूरण सिंह) के जिलाध्यक्ष ठाकुर अजब सिंह के नेतृत्व में अपनी मांगों को लेकर कलेक्ट्रेट में ज्ञापन देने पहुंचे थे। किसान नानौता से ट्रैक्टर से चलकर दिल्ली रोड पहुंचे थे। वहां से पैदल ही कलेक्ट्रेट पहुंचे। लेकिन उससे पहले ही जिला प्रशासन ने कलेक्ट्रेट का गेट बंद कर दिया। किसानों को ट्रैक्टर अंदर ले जाने से मना किया गया और पैदल जाने को कहा गया। लेकिन गेट बंद देखकर कसिान गुस्सा गए और ट्रैक्टर से गेट तोड़ दिया। किसान मजदूर संगठन के जिला उपाध्यक्ष प्रिंस राणा ने पुलिस पर लाठीचार्ज का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि ये प्रशासन की तानाशाही है। किसानों को दबाने का काम इस सरकार के द्वारा किया जा रहा है। जब तक किसानों की समस्याओं का समाधान नहीं होगा, किसान यहां से नहीं जाएंगे। हमने कोई गेट नहीं तोड़ा, इन्होंने ही गेट बंद किया। प्रशासन झूठा आरोप लगा रहा है। हमारे ट्रैक्टरों के आगे खड़े होकर लाठियां चलाई गईं। क्या लोकतंत्र में किसानों पर लाठीचार्ज जायज है। किसान इन्हें अनाज उगाकर देगा और ये लोग फ्री अनाज बाटेंगे। इस सरकार में किसान परेशान हैं और उनका दर्द सुनने वाला कोई नहीं है। एसपी सिटी अभिमन्यु मांगलिक का कहना है कि किसानों से पहले ही बात की गई थी कि पैदल आकर ज्ञापन सौंपेंगे। ट्रैक्टरों की एंट्री नहीं होगी। कुछ लोगों ने कलेक्ट्रेट में ट्रैक्टर घुसाने का प्रयास किया। एडीएम प्रशासन के ऊपर ट्रैक्टर चढ़ाने का प्रयास किया गया। वीडियो और फोटो के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

मंदिर-मस्जिद विवाद पर मोहन भागवत के बयान का संभल के मुस्लिम लोगों ने किया समर्थन

संभल,। राष्ट्रीलोय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत के मंदिर-मस्जिद विवाद को लेकर दिए बयान पर संभल के लोगों ने प्रतिक्रिया दी है। मुस्लिम लोगों ने उनके बयान का समर्थन करते हुए कहा कि उन्होंने बिल्कुल सही कहा है। संभल के निवासी शाहिद अख्तर ने कहा कि मैं मोहन भागवत के बयान का स्वागत करता हूं। उन्होंने सही कहा है कि हर मस्जिद के नीचे मंदिर मत ढूंढों। मस्जिद बहुत ईमानदारी के पैसे से और साफ जगह पर बनती है। हमारे इस्लाम में कहा गया है कि किसी की जमीन पर कब्जा करके मस्जिद मत बनाओ। देश भाईचारे से चलता है, नफरत से नहीं। हिंदू, मुस्लिम, सिख और ईसाई मिलेंगे तो देश खुशहाल होगा और तरक्की होगी। संभल के निवासी जफर हुसैन का कहना है कि मोहन भागवत ने जो बयान दिया है वो सही है। मोहन भागवत ने सही कहा है कि हर मस्जिद के नीचे मंदिर मत ढूंढो। यह सही नहीं है। संभल के रहने वाले नवाब का कहना है कि मोहन भागवत ने मंदिर-मस्जिद को लेकर जो बयान दिया है वो सही दिया है। ये देश नफरत से नहीं भाईचारे और मोहब्बत से चलेगा। हम मंदिर और मस्जिद में उलझे पड़े हैं, दुनिया कहां से कहां पहुंच गई। देश में बेरोजगारी और भुखमरी है। मोहन भागवत का बयान स्वागत के योग्य है। उन्होंने सही कहा है कि हिंदुस्तान के अंदर मस्जिदों के नीचे मंदिर मत ढूंढों। अगर हम भी कहें कि इस मंदिर के नीचे मस्जिद है, तो क्या होगा, ऐसे ही लड़ते रहेंगे।

संक्षिप्त खबरें

कन्नौज में नाबालिग से दुष्कर्म के आरोपी पूर्व सपा नेता का होटल जब्त

कन्नौज, । उत्तर प्रदेश के कन्नौज में नाबालिग से दुष्कर्म के आरोप में जेल में बंद समाजवादी पार्टी नेता नवाब सिंह का होटल पुलिस ने शनिवार को जब्त कर लिया। भारी पुलिस बल की मौजूदगी में डुगडुगी बजवाकर होटल को सील कर दिया गया। सीओ सिटी कमलेश कुमार ने बताया कि नाबालिग से दुष्कर्म के आरोपी नवाब सिंह यादव पर गैंगस्टर एक्ट की धाराओं में कार्रवाई की गई थी जिसके बाद उनकी संपत्तियों को खंगालने का काम किया जा रहा है। होटल चंदन को उन्होंने कमाई के अवैध स्रोतों से बनवाया था जिस कारण धारा 14 (1) के तहत इस संपत्ति को जब्त किया गया है। नवाब सिंह यादव का होटल कन्नौज के तिर्वा में राजकीय मेडिकल कॉलेज के पास है। भारी पुलिस बल के साथ पहुंचे अधिकारियों ने होटल कर्मचारियों को बाहर निकाल कर उसे सील करवा दिया और डुगडुगी बजवाते हुए होटल को जब्त किए जाने का ऐलान कराया। उल्लेखनीय है कि सपा सरकार के दौरान नवाब सिंह यादव को मिनी सीएम के नाम से जाना जाता था। वह अखिलेश यादव के बेहद करीबी भी रहे। नवाब सिंह यादव के खिलाफ 11 अगस्त 2024 की रात 15 वर्षीय एक किशोरी ने डायल 112 पर कॉल कर दुष्कर्म का आरोप लगाया था।

उत्तर प्रदेश : बहराइच में कड़ी सुरक्षा के बीच होगी पीसीएस परीक्षा

बहराइच,। उत्तर प्रदेश में रविवार को होने वाली पीसीएस की परीक्षा को लेकर शासन की तरफ से कड़े निर्देश जारी किए गए हैं। परीक्षा पूरी सुरक्षा एवं पारदर्शिता के साथ कराने के लिए फूलप्रूफ व्यवस्थाएं की गई हैं। जनपद बहराइच में कुल 15 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। अपर पुलिस अधीक्षक रामानंद कुशवाहा ने बताया कि पुलिसकर्मियों की व्यापक व्यवस्था की गई है। पुलिस का बाहर इंतजाम है। परीक्षा केंद्र पर महिला और पुलिस आरक्षी को लगाया गया है। उसके साथ एक इंस्पेक्टर लगाया गया है। इसके अलावा कानून-व्यवस्था और परीक्षा के लिए सीओ और एसएचओ भी लगाए गए हैं। अनुचित व्यवस्था के साधन और अफवाह को रोकने के लिए एसओजी प्रभारी को लगाया गया है। महाराज सिंह इंटर कॉलेज परीक्षा केंद्र के प्राचार्य शिवेंद्र सिंह ने बताया कि 16 कमरों में परीक्षा की व्यवस्था कराई गई है जिसमें 24-24 बच्चों को बैठाने की व्यवस्था की गई है। शासन की मंशा के अनुसार व्यवस्था की गई है। किसी प्रकार की कोई अव्यवस्था नहीं हो पाएगी। इसके अलावा निगरानी के लिए सीसीटीवी की व्यवस्था की गई है। परीक्षा की दृष्टि से सारी व्यवस्थाएं पूरी कर ली गई हैं।

बिजली चोरी मामले में सपा सांसद बर्क को नोटिस, 15 दिन में भरना होगा जुमार्ना

संभल, । संभल के समाजवादी पार्टी के सांसद जिया उर्रहमान बर्क को बिजली चोरी के मामले में नोटिस भेजा गया है। संभल के अधिशासी अभियंता नवीन गौतम ने कहा कि सपा सांसद जिया उर रहमान बर्क को कानून के प्रावधानों के तहत नोटिस भेजा गया है। हमने एफआईआर के आधार पर मामला दर्ज किया है। 1.9 करोड़ रुपये का नोटिस उन्हें भेजा गया है, उन्हें जवाब देने के लिए 15 दिन की समय सीमा दी गई है। अगर वो हमारे आंकलन से संतुष्ट नहीं हैं, तो उन्हें हमें पत्र देना पड़ेगा। उन्हें आगे अपील करने का भी अधिकार है। इस पूरी प्रकिया में एक महीने का समय लगेगा। अगर तय समय सीमा में बर्क जुमार्ना नहीं भरते हैं, तो बिजली विभाग सेक्शन 5 के तहत डीएम को पत्र लिख वसूली के लिए कह सकता है। इसके बाद डीएम कार्रवाई कर सकते हैं।

नोएडा में नवजात बच्ची का शव कूड़े में मिला, अब जांच में जुटी पुलिस

नोएडा, । थाना सेक्टर-58 क्षेत्र स्थित रजत विहार सोसाइटी के बाहर एक नवजात बच्ची का शव मिलने से इलाके में हड़कंप मच गया। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। बच्ची का शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। बताया जा रहा है कि यह घटना लोक-लज्जा के डर से की गई प्रतीत होती है। लोगों का कहना है कि बच्ची की मां ने सामाजिक बदनामी से बचने के लिए उसे जन्म के तुरंत बाद कूड़े में फेंक दिया होगा। ठंड की वजह से नवजात की मौत होने की आशंका जताई जा रही है। थाना सेक्टर-58 के प्रभारी निरीक्षक अमित कुमार ने बताया कि बच्ची के माता-पिता और दोषियों की पहचान के लिए इलाके के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि दोषियों को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

उत्तर प्रदेश : गरीब बच्चों को बड़े स्कूलों में प्रवेश दिला रही सरकार, पहले चरण में 1.32 लाख से अधिक आवेदन आए

प्रातः किरण, संवाददाता

लखनऊ, । उत्तर प्रदेश सरकार ने गरीब और वंचित वर्ग के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अवसर प्रदान करने के लिए शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम के तहत महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं। इसका परिणाम यह है कि आवेदन प्रक्रिया के प्रथम चरण (01 दिसंबर से 19 दिसंबर) के दौरान 1.32 लाख से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं। विभाग की तरफ से मिली जानकारी के अनुसार, प्रथम चरण में वंचित और अलाभित परिवारों के अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक आवेदन किया है। सर्वाधिक आवेदन वाराणसी (10,278), लखनऊ (8,714), और कानपुर नगर (8,276) से प्राप्त हुए हैं। योगी सरकार इस वर्ष यह प्रयास कर रही है कि किसी भी गरीब बच्चे की पढ़ाई में एक दिन भी देरी न हो और उसे समय से स्कूल में प्रवेश दिला कर अप्रैल के पहले दिन से ही उसकी नियमित पढ़ाई शुरू करा दी जाए। अब सरकार ने इन आवेदनों के सत्यापन कार्य में तेजी लाकर बच्चों को उनके अधिकार शीघ्र प्रदान करने की प्रक्रिया सुनिश्चित की है। सभी जिलों से कुल 1,32,446 आवेदन प्राप्त हुए है। शीर्ष तीन जिलों के बाद चौथे स्थान पर अलीगढ़ (4,880) और पांचवें स्थान पर आगरा (4,626) है। बीईओ और बीएसए स्तर पर लंबित आवेदनों को लेकर सरकार ने जिलों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि प्रक्रिया को शीघ्र पूरा कर बच्चों के अधिकार सुनिश्चित किए जाएं। सरकार ने अधिकारियों से कहा है कि 23 दिसंबर को पोर्टल स्वतः बंद हो जाएगा, इसलिए अधिकारी 22 दिसंबर तक सर्वोच्च प्राथमिकता पर आरटीई आवेदन सत्यापन को रखते हुए आवेदनों का सत्यापन कार्य पूर्ण करें। बच्चों का समय पर नामांकन सुनिश्चित करने के लिए सत्र 2025-26 के लिए चार चरणों में आवेदन प्रक्रिया का निर्धारण किया गया है, जो क्रमशः 1 दिसंबर, 1 जनवरी, 1 फरवरी और 1 मार्च से उस महीने की 19 तारीख तक चलाई जा रही है। पहले चरण में आवेदनों की अच्छी संख्या आने के बाद उनके सत्यापन का कार्य गतिशील है, जबकि शेष चरणों में आने वाले प्रार्थना पत्रों के बाद निर्धारित समय से सत्यापन कार्य शुरू कर दिए जाएंगे। शैक्षिक सत्र 2022-23 में 71,214 बच्चों के मुकाबले सत्र 2024-25 में इस योजना के अंतर्गत 1,14,196 बच्चों का प्रवेश गैर सहायता प्राप्त निजी विद्यालयों में कराया गया था, जो कि एक बड़ा उछाल था। इसके अतिरिक्त, सत्र 2024-25 तक राज्य भर के पांच लाख से अधिक बच्चे निजी विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बता दें कि इन दो वित्तीय वर्षों में सरकार ने 436 करोड़ रुपये की फीस प्रतिपूर्ति का भुगतान किया था और विद्यालयों को गरीब बच्चों को बिना किसी बाधा के प्रवेश देने में सहायता मिली थी। सरकार के बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री संदीप सिंह ने बताया कि आरटीई के तहत प्रत्येक चरण के लिए लॉटरी और नामांकन की तारीखें तय हैं। जिला प्रशासन भी सहयोग कर रहा है, जिससे आय प्रमाणपत्र, जाति प्रमाणपत्र, निवास प्रमाणपत्र जैसे आवश्यक दस्तावेजों की सुविधा प्रदान कर नामांकन प्रक्रिया को सरल बनाया जा रहा है। सरकार का प्रयास है कि किसी भी बच्चे के प्रवेश में देरी न हो और वह समय से अपनी नियमित पढ़ाई शुरू कर सके। उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि वे बच्चों के नामांकन के लिए आवश्यक दस्तावेजों को समय से तैयार करा लें और आवेदन प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लें। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे, सभी अभिभावक इस अवसर का पूरा लाभ उठाएं और बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलवाने में सरकार का सहयोग करें।

नोएडा में पुलिस और बदमाशों में मुठभेड़, 15 हजार रुपए का इनामी बदमाश गिरफ्तार

प्रातः किरण, संवाददाता

नोएडा, । कोतवाली 63 की पुलिस टीम और बाइक सवार बदमाशों के बीच हुई मुठभेड़ में एक बदमाश पुलिस की गोली लगने से घायल हो गया. जबकि मौके से फरार हुए दो बाल अपराधियों को पुलिस ने कांबिंग के दौरान पकड कर अपनी कस्टडी में लिया है. घायल बदमाश की पहचान 15 हजार के इनामी रितिक के रूप में हुई है. उसके पास से तमंचा और कारतूस और बिना नंबर प्लेट की बाइक बरामद हुई है. जबकि कांबिंग के दौरान पकड़े गए दोनों बाल अपराधियों से दो चाकू बरामद किए गए हैं. घायल रितिक को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है. अवैध तमंचे से पुलिस टीम पर फायरिंगः बताया गया है कि पुलिस की गोलियों से घायल हुए रितिक नामी बदमाश को घायल अवस्था में गिरफ्तार कर इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है. उसके साथ दो बाल अपराधी भी पकड़े गए हैं. एडीसीपी नोएडा सेंट्रल हृदेश कठेरिया ने बताया कि कोतवाली सैक्टर 63, नोएडा पुलिस की टीम कनावनी अंडरपास पर चेकिंग कर रही थी. इसी दौरान एक बिना नम्बर प्लेट लगी बाइक आती दिखाइ दी, जिस पर सवार तीन लोग बैठे थे. पुलिस ने जब उनको रुकने का इशारा किया तो बाइक सवार रुके नहीं और तेज गति से भागने लगे. पुलिस टीम ने शक होने पर बाइक सवार व्यक्तियों का पीछा किया तो बाइक सवार व्यक्ति अपने आप को घिरता देखकर मोटरसाइकिल को छोड़कर भागने लगे और एक बदमाश ने अवैध तमंचे से पुलिस टीम पर जान से मारने की नियत से फायर किया. पुलिस की जवाबी फायरिंग में एक बदमाश पैर में गोली लगने से घायल हो गया, जिसकी पहचान 15 हजार के इनामी रितिक के रूप में हुई है. एडीसीपी ने बताया कि घायल बदमाश रितिक के साथ दो बाल अपराधी भी थे, जो मौके से फरार हो गये. पुलिस ने कांबिंग के दौरान उन्हें पकड कर अपनी कस्टडी में लिया. रितिक और दोनों बाल अपराधियों ने 11 दिसंबर को चोटपुर कॉलोनी में एक व्यक्ति पर जान से मारने की नीयत से चाकू से हमला किया था. जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गया था. इस घटना में एक महिला समेत पांच लोगों को कोतवाली 63 पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है, जबकि रितिक फरार चल रहा था. जिस कारण रितिक पर पिछले साल गुंडा एक्ट के तहत कार्रवाई की गई थी और उस पर 15 हजार का इनाम घोषित किया गया था. बदमाशों पर इनाम था घोषित एक दूसरी घटना में विवरण के अनुसार संगठित गिरोह बनाकर शहर के अलग-अलग हिस्से में लगे मोबाइल टावरों से आरआरयू समेत अन्य कीमती उपकरण चोरी करने वाले गिरोह के दो बदमाशों को फेज तीन थाने की पुलिस ने शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया. दोनों पर सेंट्रल नोएडा पुलिस ने बीस-बीस हजार रुपये का इनाम घोषित किया हुआ था. गिरोह के दोनों सदस्य लंबे समय से फरार चल रहे थे.मोबाइल टावर से उपकरण चुराने वाले बदमाश थाना प्रभारी ध्रुव भूषण दुबे ने बताया कि इनामी बदमाशों की गिरफ्तारी के लिए जनपद में अभियान चल रहा है.

देवरिया में अमित शाह के खिलाफ सपा कार्यकताओं का प्रदर्शन

देवरिया,। उत्तर प्रदेश के देवरिया में समाजवादी पार्टी(सपा) के कार्यकताओं ने बाबा साहेब डा.भीम राव अंबेडकर के खिलाफ गृह मंत्री अमित शाह के बयान देने का आरोप लगाकर शनिवार को सड़क पर उतर कर विरोध-प्रदर्शन किये। सपा कार्यकताओं का आरोप है कि अमित शाह ने बाबा साहेब का अपमान किया है और इसके विरोध में सड़क पर उतर कर आज सपा कार्यकताओं ने अपना विरोध प्रदर्शन कर गृहमंत्री के इस्तीफा की मांग की है ।सपा कार्यकताओं का आरोप है कि गृहमंत्री का यह बयान समाज के एक महान नेता और संविधान निमार्ता का अपमान करने जैसा है। प्रदर्शनकारियों की मांग थी कि अमित शाह देश की जनता से माफी मांगें सपा जिलाध्यक्ष व्यास यादव ने कहा कि अमित शाह ने डा. अंबेडकर का अपमान किया, जो इस देश के संविधान के रचयिता थे। यह न केवल देश के दलितों और पिछड़ों का बल्कि पूरे राष्ट्र का अपमान है ।उन्होंने कहा कि बाबा साहेब हमारे आदर्श हैं, हमारे सम्मान और हमारी आत्मा हैं। जिन शब्दों का इस्तेमाल केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने किया है, वह निंदनीय है सपा कार्यकताओं ने प्रदर्शन के बाद राष्ट्रपति को सम्बोधित अपना एक ज्ञापन अपर जिलाधिकारी गौरव श्रीवास्तव को दिया।

पुलिस ने अवैध हथियार और चोरी की बाइक के साथ दो बदमाशों को किया गिरफ्तार

नोएडा, । नोएडा के सेक्टर 58 थाना पुलिस ने 20 दिसंबर की देर रात सेक्टर 57 के पास चेकिंग के दौरान दो बदमाशों को मुठभेड़ में गिरफ्तार किया है। इनके पास से अवैध हथियार और चोरी की एक बाइक बरामद हुई है। इन पर एनसीआर के अलग-अलग स्थानों पर कई मुकदमे दर्ज हैं। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक सेक्टर 58 थाना पुलिस 20 दिसंबर की देर रात चेकिंग कर रही थी। इसी चेकिंग के दौरान सार्वजनिक शौचालय सेक्टर-57 की तरफ से एक मोटरसाइकिल पर दो व्यक्ति सवार आते दिखाई दिए। जिसे पुलिस टीम ने रुकने का इशारा किया। लेकिन वह नहीं रुके और तेजी से चौकी सेक्टर-57 की तरफ सर्विस रोड से भागने लगे। पुलिस टीम ने उनका पीछा किया। जिसमें बदमाशों ने पुलिस टीम पर फायर कर दिया। पुलिस टीम की जवाबी कार्रवाई में एक बदमाश पैर में गोली लगने के कारण घायल हो गया। जिसकी पहचान दीपक निवासी, थाना कल्याणपुरी दिल्ली के रूप में हुई है और मौके से मोटरसाइकिल अपाचे, एक तमंचा, 1 खोखा और 1 जिन्दा कारतूस 315 बोर और चोरी और लूट के 6 मोबाइल फोन बरामद हुए हैं। मौके से फरार बदमाश के दूसरे साथी रामकिशन वर्मा निवासी थाना पहासू जिला बुलंदशहर को कॉबिंग के दौरान गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के मुताबिक इन दोनों बदमाशों ने मिलकर 6 दिसंबर को एक आईफोन 13 छीना था। जिसके सम्बंध में थाना सेक्टर 58 पर मामला दर्ज हुआ था। इसके अलावा बरामद बाइक अपाचे के बारे बताया गया है कि यह दिल्ली मण्डावली से चोरी की है। जिसके लिए एमवी थेफ्ट क्राइम ब्रांच दिल्ली में मामला दर्ज है। बदमाश दीपक पहले भी थाना सेक्टर-24, नोएडा व थाना कल्याणपुरी दिल्ली से जेल जा चुका है। इनके आपराधिक इतिहास की जानकारी की जा रही है। पुलिस ने बताया है कि ये बदमाश एनसीआर क्षेत्र में मोटरसाइकिल सवार होकर राह चलते व्यक्तियों से सुनसान स्थान पर मौका देखकर मोबाइल छीनते हैं और छीने गये मोबाइल फोन को नशे व मौज मस्ती करने के लिये सस्ते दामों पर राह चलते व्यक्तियों को ही बेच देते हैं।

यूपी: संभल में दूसरे दिन पहुंची एएसआई की टीम

संभल, । उत्तर प्रदेश के संभल में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की टीम लगातार दूसरे दिन भी सर्वे करने पहुंची। शनिवार को टीम सबसे पहले कल्कि विष्णु मंदिर पहुंची। इसके बाद टीम ने मंदिर के पास स्थित कृष्ण कूप का निरीक्षण किया। संभल की एसडीएम वंदना मिश्रा ने बताया कि आर्कियोलॉजी की टीम आई थी। यहां पर एक प्राचीन कृष्ण कूप है। जिसका काल निर्धारण होना है। वह कितना पुराना है। उसी का निरीक्षण किया है। टीम ने कल्की मंदिर के भी दर्शन किए हैं। यह टीम लगभग 15 मिनट यहां पर रुकी है। कल्कि मंदिर के पुजारी महेंद्र शर्मा ने बताया कि यहां पर एक टीम आई थी। उन्होंने एक कुआं देखा। वह कोने पर है। टीम परिसर में घूमी और मंदिर के अंदर की फोटो ली। मैंने उनसे कहा कि इस कार्य को मैं पुनर्जीवित करवाना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि यह बहुत पुराना मंदिर है। एक हजार वर्ष का नक्शा, उसमें यह मंदिर दिखाया गया है। जो हरि मंदिर है उसके अन्दर यह मंदिर बना है। ज्ञात हो कि जिलाधिकारी डॉ. राजेंद्र पैंसिया ने संभल के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व को देखते हुए एएसआई निदेशक को पत्र भेजकर सर्वे कराने की मांग की थी। इसके बाद एएसआई की टीम ने संभल में प्राचीन धार्मिक स्थलों और कुओं का सर्वे शुरू किया। डीएम ने कहा था कि संभल का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है। 19 कूप और पांच तीर्थों का एएसआई की टीम ने सर्वे किया है। यह सर्वे करीब 9 घंटे तक चला है। अगर आवश्यकता हुई तो टीम को फिर से बुलाया जा सकता है। अभी तक जो भी सर्वे टीम ने किया है, उसके आधार पर रिपोर्ट तैयार होगी।

फरीदाबाद : वाहन चोरी करने वाला युवक गिरफ्तार

फरीदाबाद, । हरियाणा के फरीदाबाद जिले में अपराध शाखा सेक्टर 85 की टीम ने वाहन चोरी करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर स्कूटी बरामद की है। पुलिस द्वारा पकड़े गए आरोपी से पूछताछ करने के बाद उसे शनिवार को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया है। पुलिस प्रवक्ता ने शनिवार को बताया कि थाना सराय ख़्वाजा में सुरेंद्र सिंह निवासी जैतपुर एक्सटेंशन बदरपुर दिल्ली ने अपनी शिकायत में बताया कि हुडा मार्किट सेक्टर 37 फरीदाबाद में पिगाड़ो के नाम से दुकान चलाता है। 31 अक्तूबर 2024 को वो एक ऑर्डर देने के लिए स्कूटी से पल्ला जा रहा था। तब समय करीब 10 बजे पुराना पल्ला पुल के पास स्कूटी का पैट्रोल खत्म हो गया। वह स्कूटी को खड़ी कर पैदल ऑर्डर देने के लिए पल्ला चला गया। जब वापस आया, तो स्कूटी वहां नही मिली, जिसका मामला थाना में सराय ख़्वाजा दर्ज किया गया। अपराध शाखा सेक्टर 85 की टीम ने आरोपी मुकेश वासी गांव अरोटी जिला हरदोई उत्तर प्रदेश हाल किराएदार पुनीत चपराना का मकान मेवाला महाराजपुर फरीदाबाद को सूत्रों से मिली जानकारी के अंतर्गत कार्रवाई करते हुए सेक्टर 21 सी मार्केट से स्कूटी सहित गिरफ्तार किया है। आरोपी पर पूर्व में भी वाहन चोरी के 2 मामले फरीदाबाद में दर्ज है। आरोपी को पूछताछ के बाद कोर्ट में पेश कर जेल भेजा गया।

फरीदाबाद-पलवल की 5 शटल ट्रेनें 10 दिन रहेंगी बंद

फरीदाबाद, 21 दिसंबर (वेब वार्ता)। फरीदाबाद में पलवल और फरीदाबाद से सफर करने वाले दैनिक रेल यात्रियों की परेशानी बढ वाली है। रेलवे विभाग ने 5 शटल ट्रेनें 10 दिन के लिए बंद कर दी हैं। दिल्ली डिवीजन के शकूरबस्ती रेलवे स्टेशन पर नॉन इंटरलॉकिंग(रेलवे लाइन मरम्मत) का काम शुरू होने के कारण यह फैसला लिया गया है। इसके अलावा तीन शटल ट्रेनें अपने गंतव्य तक नहीं जाएंगी। अर्थात उन्हें शॉर्ट टर्मिनेट कर चलाया जाएगा। रेलवे अधिकारियों की माने तो ट्रेनों का परिचालन अगले महीने 7 से 16 जनवरी 2025 तक प्रभावित रहेगा। वहीं दूसरी ओर झांसी मंडल के संदलपुर आंतरी रेलवे स्टेशन के बीच मरम्मत का काम चलने के कारण फरीदाबाद सेक्शन से होकर आने जाने वाली तीन एक्सप्रेस ट्रेनों का परिचालन 22 दिसंबर तक प्रभावित रहेगा। डीएस भंडारी रेल अधीक्षक ने बताया कि शकूरबस्ती रेलवे स्टेशन पर रेलवे लाइनों की मरम्मत का काम आगामी 26 दिसंबर से शुरू हो जाएगा और 16 जनवरी 2025 चल चलेगा। ऐसे में सभी ट्रेनों को चला पाना संभव नहीं होगा। अधिकारियों ने बताया कि शकूरबस्ती से चलकर पलवल जाने वाली 04408 शटल, 04410 शकूरबस्ती पलवल शटल, 04445 पलवल शकूरबस्ती शटल, 04915 बल्लभगढ़ शकूरबस्ती और 04421 पलवल शकूरबस्ती शटल 7 से 16 जनवरी तक नई दिल्ली के आगे कैंसिल रहेगी। जबकि 04437 पलवल शकूरबस्ती शटल 120 मिनट तक रोककर चलाया जाएगा।

देवरिया में अमित शाह के खिलाफ सपा कार्यकताओं का प्रदर्शन

देवरिया, । उत्तर प्रदेश के देवरिया में समाजवादी पार्टी(सपा) के कार्यकताओं ने बाबा साहेब डा.भीम राव अंबेडकर के खिलाफ गृह मंत्री अमित शाह के बयान देने का आरोप लगाकर शनिवार को सड़क पर उतर कर विरोध-प्रदर्शन किये। सपा कार्यकताओं का आरोप है कि अमित शाह ने बाबा साहेब का अपमान किया है और इसके विरोध में सड़क पर उतर कर आज सपा कार्यकताओं ने अपना विरोध प्रदर्शन कर गृहमंत्री के इस्तीफा की मांग की है ।सपा कार्यकताओं का आरोप है कि गृहमंत्री का यह बयान समाज के एक महान नेता और संविधान निमार्ता का अपमान करने जैसा है। प्रदर्शनकारियों की मांग थी कि अमित शाह देश की जनता से माफी मांगें। सपा जिलाध्यक्ष व्यास यादव ने कहा कि अमित शाह ने डा.अंबेडकर का अपमान किया, जो इस देश के संविधान के रचयिता थे। यह न केवल देश के दलितों और पिछड़ों का बल्कि पूरे राष्ट्र का अपमान है ।उन्होंने कहा कि बाबा साहेब हमारे आदर्श हैं, हमारे सम्मान और हमारी आत्मा हैं। जिन शब्दों का इस्तेमाल केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने किया है, वह निंदनीय है। सपा कार्यकताओं ने प्रदर्शन के बाद राष्ट्रपति को सम्बोधित अपना एक ज्ञापन अपर जिलाधिकारी गौरव श्रीवास्तव को दिया। इस प्रदर्शन में सपा के सैकड़ों कार्यकताओं ने शिरकत की।

यूपी के भदोही में मां और तीन बच्चों के शव फांसी के फंदे पर झूलते मिले, जांच में जुटी पुलिस

प्रातः किरण, संवाददाता

प्रतापगढ़, । यूपी के प्रतापगढ़ जिले के कोतवाली देहात में भदोही गांव में एक ही परिवार के चार लोगों के शव फांसी के फंदे पर झूलते मिले। इसमें एक मां का शव है और उसकेबाकी तीन बच्चे जुड़वा बताए जा रहे हैं। कमरे से जो तस्वीर सामने आई है उसमें मां समेत तीन बच्चों के शव कमरे में फंदे से झूलते हुआ मिले। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। स्थानीय लोगों की मानें तो घरेलू कलह के कारण महिला ने अपने तीन जुड़वा बच्चों के साथ फांसी लगाई। परिवार में चार लोगों की एक साथ मौत के बाद जिले में हड़कंप मच गया। पूरे गांव में मातम पसरा हुआ है। घटना के बाद से महिला के पति का कोई अता-पता नहीं है। जानकारी के अनुसार, मृतक महिला का पति संदीप कुमार गौतम मजदूरी करता है। गांव वालों की मानें तो संदीप नशे का आदी था। शुक्रवार रात भी नशे की हालत में उसने अपनी पत्नी से झगड़ा किया था। इसके बाद रात में परिवार में लोग सो गए। शनिवार सुबह साढ़े आठ बजे तक जब महिला के कमरे का दरवाजा नहीं खुला तो आसपास के लोगों को शक हुआ। कमरा नहीं खुलने की सूचना के बाद गांववालों ने जब दरवाजा तोड़ा तो हैरान रह गए। कमरे के अंदर वह अपने चारों बच्चे के साथ फंदे से लटकी मिली। घटना की जांच करने पहुंची पुलिस का कहना है कि प्रथम दृष्टया से यह गृह कलह में खुदकुशी का मामला लग रहा है।

गृहमंत्री अमित शाह की टिप्पणी को लेकर बसपा ने किया 24 दिसंबर को देशव्यापी आंदोलन का ऐलान

प्रातः किरण, संवाददाता

लखनऊ, । संसद में बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर को लेकर गृहमंत्री अमित शाह के बयान के बाद शुरू हुई विपक्षी दलों की सियासत ने अब तेजी पकड़ ली है। इसे लेकर बसपा मुखिया मायावती ने अब आंदोलन का ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि 24 दिसंबर को देशव्यापी आंदोलन किया जाएगा। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने शनिवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि देश के दलित, वंचित व अन्य उपेक्षितों के आत्मसम्मान व मानवीय हकूक के लिए अति- मानवतावादी व कल्याणकारी संविधान के रूप में असली ग्रंथ के रचयिता बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर भगवान की तरह परमपूजनीय हैं। उनका अमित शाह द्वारा किया गया अनादर लोगों के दिलों को आहत पहुंचाता है। उन्होंने आगे लिखा कि ऐसे महापुरुष को लेकर संसद में इनके द्वारा कहे गए शब्दों से पूरे देश में सर्व समाज के लोग काफी उद्वेलित, आक्रोशित व आंदोलित हैं। अम्बेडकरवादी बीएसपी ने इस क्रम में उनसे बयान वापस लेने व पश्चाताप करने की मांग की है, जिसपर अभी तक भी अमल नहीं किया जा रहा है। मायावती ने कहा कि ऐसे में मांग न पूरी होने पर फिर पूरे देश में आवाज उठाने की बात बीएसपी द्वारा की गई। इसलिए अब पार्टी ने अपनी इस मांग के समर्थन में 24 दिसंबर 2024 को देशव्यापी आन्दोलन करने का फैसला लिया है। उस दिन देश के सभी जिला मुख्यालयों पर पूर्णतः शांतिपूर्ण धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। उन्होंने आगे लिखा कि दलित/बहुजनों को अपने पैरों पर खड़े होकर आत्म-सम्मान के साथ जीने के लिए आजीवन कड़ा संघर्ष व आरक्षण सहित उनको अनेकों कानूनी हक दिलाने वाले उनके सच्चे मसीहा बाबा साहेब के नहीं रहने पर उनके अनुयायियों का हित व कल्याण ही उनका सबसे बड़ा सम्मान है, जिसके लिए बीएसपी समर्पित है। मायावती ने कहा कि अतः कांग्रेस, भाजपा आदि पार्टियां अगर बाबासाहेब का दिल से आदर-सम्मान नहीं कर सकती हैं तो उनका अनादर भी न करें। बाबासाहेब के कारण एससी, एसटी एवं ओबीसी वर्गों को जिस दिन संविधान में कानूनी अधिकार मिले उसी दिन उन्हें सात जन्मों का स्वर्ग भी मिल गया है।

वाराणसी में सपा का जोरदार प्रदर्शन, गृह मंत्री अमित शाह के बयान पर मचा बवाल

प्रातः किरण, संवाददाता

वाराणसी, । समाजवादी पार्टी (सपा) के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने शनिवार को शास्त्री घाट पर गृह मंत्री अमित शाह के बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर पर दिए गए बयान के खिलाफ जमकर विरोध प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने अमित शाह के बयान को संविधान और बाबा साहब का अपमान बताते हुए कड़ी निंदा की। सैकड़ों की संख्या में जुटे सपा कार्यकर्ताओं ने शास्त्री घाट पर अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए जुलूस निकाला, जो अंबेडकर पार्क पर जाकर समाप्त हुआ। प्रदर्शनकारियों ने बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए विरोध प्रदर्शन को अपना समर्थन दिया। प्रदर्शन के दौरान सपा कार्यकर्ताओं ने अमित शाह के पोस्टर पर स्याही पोतकर अपना आक्रोश जाहिर किया। साथ ही, नारेबाजी करते हुए गृह मंत्री के इस्तीफे की मांग की। कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि अमित शाह के बयान से देश के संविधान और बाबा साहब के योगदान का अपमान हुआ है। सपा के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में गृह मंत्री अमित शाह के बयान को संविधान विरोधी बताते हुए तत्काल उनके इस्तीफे की मांग की गई। अंबेडकर पार्क पर आयोजित सभा में सपा नेताओं ने बाबा साहब के योगदान को याद करते हुए गृह मंत्री पर तीखा हमला किया। उन्होंने कहा कि इस तरह के बयान समाज में विभाजन पैदा करने वाले हैं और इसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सपा कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी कि अगर गृह मंत्री अमित शाह अपने बयान पर माफी नहीं मांगते, तो यह आंदोलन और तेज होगा। उन्होंने कहा कि पार्टी संविधान की रक्षा और बाबा साहब के सम्मान के लिए हर स्तर पर संघर्ष करने को तैयार है। इस प्रदर्शन ने वाराणसी में बड़ी संख्या में लोगों का ध्यान खींचा। सपा के इस आंदोलन ने राजनीतिक माहौल को गरमा दिया है और आने वाले दिनों में इस मुद्दे पर और अधिक विवाद होने की संभावना है।

दिन में ब्लिंकिट डिलीवरी बॉय का काम और रात में करता था लूट, मुठभेड़ में हुआ गिरफ्तार

प्रातः किरण, संवाददाता

नोएडा, । नोएडा के थाना फेस-2 में पुलिस और एक बदमाश के बीच 21 दिसंबर की सुबह-सुबह मुठभेड़ हो गई। पकड़े गए बदमाश की पहचान ब्लिंकिट ऐप का सामान डिलीवरी करने वाले डिलीवरी बॉय के रूप में हुई है। यह बदमाश दिन में डिलीवरी बॉय बन कर सामान की डिलीवरी करता था और रात में लूट और चोरी जैसी घटनाओं को अंजाम देता था। पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि 21 दिसंबर को थाना फेस-2 नोएडा पुलिस याकूबपुर रेड लाइट पर संदिग्ध व्यक्ति व वाहन की चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान एक बिना नंबर की बाइक पर सवार व्यक्ति को रुकने का इशारा किया गया तो वह नहीं रुका और तेज गति से भागने लगा। पुलिस ने जब बाइक सवार व्यक्ति का पीछा किया तो बाइक सवार सेक्टर-83 मेट्रो स्टेशन की तरफ वाली रोड की तरफ भागने लगा। उसके बाद आगे चलकर गंदे नाले की सर्विस रोड पर दोनो तरफ से अपने आप को घिरता देख वह बाइक छोड़कर भागा और उसने पुलिस टीम पर फायर भी कर दिया। जवाबी कार्रवाई में पुलिस टीम ने भी फायर किया तो पैर में गोली लगने के कारण बदमाश घायल हो गया। पुलिस के मुताबिक बदमाश की पहचान सुमित गुप्ता (23) जिला बदायूं के रूप में हुई है। उसके कब्जे से 1 तमंचा .32 बोर, नाल में फंसा 1 खोखा कारतूस .32 बोर, 1 जिंदा कारतूस .32 बोर और 1 काले रंग की बाइक बिना नंबर प्लेट की और चोरी के 3 स्मार्टफोन बरामद हुए हैं। बदमाश के आपराधिक इतिहास व अन्य जानकारी की जा रही है। बदमाश द्वारा एनसीआर क्षेत्र में मोटरसाइकिल से लोगों के मोबाइल फोनों को मौका पाकर चोरी की घटनाओं का अंजाम दिया जाता था। पुलिस ने बताया दिन में यह ब्लिंकिट ऐप के डिलीवरी बॉय के रूप में काम करता था और रात में यह चोरी और लूट की घटनाओं को अंजाम देता था।

पलवल : हथियार के बल पर मारपीट कर लूट,गाड़ी से खींचकर निकाला बाहर

पलवल, । पलवल में हथियार के बल पर ड्यूटी जाते समय युवक को सवारी गाड़ी से खींच कर जानलेवा हमला कर मोबाइल लूटने का मामला सामने आया है। चांदहट थाना पुलिस ने युवक के चाचा की शिकायत पर अज्ञात युवकों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। मिली जानकारी के अनुसार शनिवार कोशा गुलावद गांव निवासी सतीश कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में कहा कि उसका भतीजा गौरव फरीदाबाद अपनी ड्यूटी पर जाने के लिए गुलावद गांव के बस स्टैंड पर खड़ा हुआ था। उसी दौरान मोहम्मदपुर गांव निवासी महेश अपनी ईको गाड़ी को लेकर वहां पहुंचा, जिसमें तीन सवारी बैठी हुई थी। गौरव भी फरीदाबाद जाने के लिए गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी जब हसनपुर-पलवल मार्ग पर कमरावली मोड के पास पहुंची, तभी तीन-चार युवकों ने गाड़ी को रुकवाया। आरोप है कि आरोपी युवकों ने अवैध पिस्टल निकाल कर गाड़ी के चालक की कनपटी पर लगा दी। जिसके बाद दो युवकों ने गौरव को गाड़ी से खींच लिया और लाठी-डंडों से पिटना शुरू कर दिया। गाड़ी के चालक व सवारियों के हाथ जोड़ने पर भी आरोपियों ने गौरव को नहीं छोड़ा।

बॉक्स ऑफिस पर हिट होने के बावजूद? अल्लू की पुष्पा 2 को उत्तर भारतीय सिनेमाघरों से दिया गया हटा

अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना अभिनीत फिल्म पुष्पा 2 द रूल अब तक की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्मों में से एक है। यह फिल्म हिंदी समेत कई सभी भाषाओं के बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा रही है। हालांकि, हाल ही में खबर आई थी कि सुकुमार निर्देशित इस फिल्म के निर्माताओं का हाल ही में पीवीआर आईनॉक्स के साथ विवाद हो गया था, जिसके बाद थिएटर चेन ने उत्तर भारत से पुष्पा 2 के सभी शो हटाने का फैसला किया। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, गुरुवार रात को ट्रेड एनालिस्ट ने साझा किया कि ब्रेकिंग पुष्पा 2 को कल से उत्तर भारत में सभी पीवीआर आईनॉक्स श्रृंखलाओं से हटा दिया गया। इस खबर से अल्लू के प्रशंसकों के बीच हलचल मच गई।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, कुछ घंटों बाद ट्रेड एनालिस्ट ने अपडेट शेयर किया और बताया कि दोनों पक्षों के बीच मामला सुलझ गया है। उन्होंने लिखा ब्रेकिंग- पुष्पा 2 पीवीआर आईनॉक्स एग्रीमेंट का मामला अब सुलझ गया है। पुष्पा 2 के शो धीरे-धीरे एक-एक करके खुल रहे हैं पुष्पा 2 द रूल हिंदी भाषा में सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई है। इसने अपनी रिलीज के दो हफ्तों के अंदर ही 600 करोड़ रुपये कमाए। इस बीच, फिल्म प्रोडक्शन हाउस, माइथ्री मूवी मेकर्स के अनुसार, अल्लू अर्जुन अभिनीत पुष्पा 2 ने दुनिया भर में 1,500 रुपये का आंकड़ा पार कर लिया है। कथित तौर पर, फिल्म ने अब तक 1,508 करोड़ रुपये कमा लिए हैं। वहीं हाल ही में अल्लू अर्जुन को हैदराबाद के संध्या थिएटर में पुष्पा 2 द रूल की स्क्रीनिंग के दौरान एक महिला की मौत से संबंधित मामले में गिरफ्तार किया गया था। अल्लू अर्जुन की एक झलक पाने के लिए भारी भीड़ के इकट्ठा होने के बाद महिला की मौत हो गई, जो संगीत निर्देशक देवी श्री प्रसाद के साथ कार्यक्रम में शामिल हुए थे। अल्लू अर्जुन को उनके आवास से उठाया गया, लेकिन फिर दूसरे दिन ही उन्हें छोड़ दिया गया।

'बागबान' से तय किया 'हीरामंडी' तक का सफर, छोटे पर्दे पर भी किया कमाल, कैसी रही पर्सनल लाइफ?

अभिनेत्री संजीदा शेख आज अपना 40वां जन्मदिन मना रही हैं। अभिनेत्री का जन्म 20 दिसंबर, 1984 को कुवैत में हुआ था। संजीदा ने अपना सफर छोटे पर्दे से शुरू किया और अपने अभिनय के दम पर बड़े पर्दे तक पहुंचीं। उन्होंने कई जानी-मानी फिल्मों में काम किया। संजीदा ने फिल्मी करियर की शुरुआत टीवी सीरियल क्या होगा निम्मो का से किया। इस धारावाहिक में उन्होंने मुख्य भूमिका निभाई थी। आइए जानते हैं अभिनेत्री के फिल्मी करियर और निजी जिंदगी के बारे में

कई धारावाहिकों में किया काम

संजीदा शेख ने टेलीविजन पर काफी सराहनीय काम किया है। वह कयामत, इश्क का रंग सफेद, क्या दिल में है, एक हसीना थी जैसे कई टीवी सीरियल्स में काम कर चुकी हैं। साथ ही वह कई रियलिटी शो में भी भाग ले चुकी हैं। अभिनेत्री ने नच बलिए, झलक दिखला जा, जरा नचके दिखा जैसे रियलिटी शो में भी भाग लिया है। टीवी जगत ने संजीदा को काफी शोहरत दिलाई। उनकी गिनती टीवी की टॉप एक्ट्रेस में होने लगी।

अमिताभ बच्चन के साथ की पहली फिल्म

अभिनेत्री संजीदा शेख ने 19 साल की उम्र में अमिताभ बच्चन की फिल्म 'बागबान' से फिल्मी दुनिया में कदम रखा था। इस फिल्म में भले ही उनका रोल छोटा रहा हो, लेकिन उनके किरदार के लिए उन्हें काफी पसंद किया गया। साल 2003 में आई इस फिल्म में उन्होंने नीली का किरदार निभाया था।

साउथ और पंजाबी फिल्मों में भी किया काम

अभिनेत्री ने हिंदी के अलावा तमिल, कन्नड़ और पंजाबी फिल्मों में भी काम किया है। साल 2005 की तमिल फिल्म 'पोन्नियिन सेल्वन' में संजीदा ने अभिनय किया। 2006 की कन्नड़ फिल्म 'शुभम' में भी वह नजर आईं। अभिनेत्री ने 'अश्के', 'मैं ते बापू' जैसी फिल्मों में भी काम किया है। संजीदा शेख को आखिरी बार संजय लीला भंसाली की वेब सीरीज 'हीरामंडी' में देखा गया था।

प्यार, शादी और तलाक

संजीदा की मुलाकात क्या दिल में है के सेट पर अभिनेता आमिर अली से हुई, जिसके बाद दोनों के बीच दोस्ती हुई और फिर प्यार हो गया। अंत में दोनों ने साल 2012 में शादी भी कर ली। हालांकि, 9 साल के रिश्ते के बाद दोनों के बीच दूरियां बढ़ने लगीं। इस बीच संजीदा सरोगेसी के जरिए एक बच्ची की मां भी बन गईं। फिर भी दोनों के बीच सबकुछ ठीक नहीं हुआ, जिसके बाद संजीदा ने आमिर अली से साल 2021 में तलाक ले लिया। अभिनेत्री अपने पति से अलग होने के बाद अपनी बच्ची के साथ रहने लगीं।

तलाक हुआ तो क्या हुआ, वह मेरे करीबी हैं, पूर्व पति को लेकर बोलीं रिद्धी डोगरा

रिद्धी डोगरा टीवी की जानी मानी अभिनेत्री हैं, हालांकि, अब अभिनेत्री ने फिल्मों में भी एंट्री कर ली है। रिद्धी डोगरा ने शाहरुख खान की फिल्म जवान में अम्मा का किरदार निभाकर खूब सुर्खियां बटोरी थी। रिद्धी अपनी प्रोफेशनल लाइफ के अलावा अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी चर्चा में रहती हैं। अब हाल ही साक्षात्कार में, रिद्धी ने अपनी निजी जिंदगी को लेकर खुलासा किया है कि भले ही शादी के सात साल बाद उनका तलाक हो गया है, लेकिन जब वह स्ट्रेस में होतीं है तो पूर्व पति राकेश के पास जाती हैं। रिद्धी ने कहा कि भले ही हमारा तलाक हो गया है, लेकिन राकेश मुझे काफी सपोर्ट करते हैं, वह मेरे काफी अच्छे दोस्त हैं। रिद्धी ने बताया कि पुराने दोस्त और भाई भी मुश्किल समय में उनका साथ देते हैं।

गदर 2 में इस भूमिका को निभाने से परहेज करना चाहती थीं अमीषा

गदर 2 के निर्देशक अनिल शर्मा अपनी फिल्मों के अलावा अपनी निजी जिंदगी को लेकर जाने जाते हैं। हालांकि, इस फिल्म के बाद से दोनों के बीच गर्मागर्मी देखने को मिली थी। दरअसल, फिल्म की रिलीज के बाद से दोनों के बीच विवादों ने जन्म लिया। अब हाल ही में, निर्देशक ने बताया कि फिल्म में अमीषा पटेल ने सास की भूमिका निभाने को लेकर चिंतित थीं। हालांकि, बाद में वह सास का रोल निभाने के लिए तैयार हो गई थीं।

इस रोल को लेकर चिंतित थीं अमीषा

हाल ही में, सिद्धार्थ कन्नन के साथ एक साक्षात्कार में गदर 2 के निर्देशक अनिल शर्मा ने कहा कि फिल्म में सकीना का किरदार निभाने के लिए उनकी यही एक मांग थी कि वह फिल्म में सास की भूमिका नहीं निभाना चाहती थीं क्योंकि इस फिल्म में वह अपने रोल को लेकर चिंतित थीं।

अनिल शर्मा ने कही यह बात

अनिल शर्मा ने कहा, मुझे लगता है कि गदर 2 में सकीना के रोल को उतनी जगह नहीं मिल पाई, जितनी उन्हें गदर 1 में मिली थी। शायद वह उम्र और समाज को समझ नहीं पाईं। उम्र एक ऐसी चीज है कि वह सबको समझ आ जाएगा। अगर एक फिल्म में आप जीते की मां की भूमिका निभाती हैं तो यह स्वाभाविक है कि अगली फिल्म में आपको जीते की पत्नी की सास का रोल भी निभाना पड़ेगा। यह दर्शकों को आसानी से समझ आ जाएगा।

नरगिस दत्ता का दिया उदाहरण

अपनी बात को और स्पष्ट करने के लिए अनिल शर्मा ने नरगिस दत्ता का उदाहरण दिया और कहा कि उन्होंने कम उम्र में ही मदर इंडिया की भूमिका निभाई थी। उन्होंने कहा, ये मानते हैं कि आप बहुत मेहनत कर रही हैं, आपने आप पर लेकिन कलाकार है।

अभिनेत्री ने सुलझाया मामला

निर्देशक ने यह भी कहा कि मुझे पता है कि वह सुंदर हैं और कम उम्र की हैं, लेकिन एक कलाकार के तौर पर आपको हर भूमिका के लिए तैयार होना चाहिए। यही एक असली कलाकार की पहचान हैं। अनिल शर्मा ने यह भी कहा कि आज के कलाकारों की यह धारणा बन गई है कि लोगों को अपनी छवि बनाए रखने के लिए खास रोल निभाने से बचना चाहिए। अमीषा पटेल भी इसी ब्रांडिंग के प्रभाव में थे, लेकिन समय के साथ वह इस चीज को समझ गईं और मामला सुलझ गया।

महाराष्ट्र सरकार की एडवाइजरी पर दिलजीत दोसांझ का तंज

दिलजीत दोसांझ इन दिनों अपने दिल लुमिनाती टूर को लेकर चर्चा में चल रहे हैं। देश के अलग-अलग राज्यों में जाकर दिलजीत अपनी परफॉर्मेंस से फैंस का दिल जीत रहे हैं। हालांकि, इन सब के बाद भी सिंगर विवादों के घेरे में आ जाते हैं। हाल ही में, महाराष्ट्र सरकार ने दिलजीत को एक नोटिस जारी किया था, जिसमें सरकार ने उन्हें ड्रग्स, शराब आदि गानों को गाने पर प्रतिबंध लगा दिया था। अब दिलजीत ने इस नोटिस पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। आइए जानते हैं कि सिंगर ने क्या कहा है।

दिलजीत का एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें वह कहते नजर आ रहे हैं, मैंने हाल ही में, अपनी टीम से पूछा था कि क्या मेरे लिए कोई एडवाइजरी जारी की गई है। मेरी टीम ने कहा कि सब कुछ ठीक है, लेकिन जब मैं सुबह उठा तो पता लगा कि एडवाइजरी जारी हो गई है। इसके बाद सिंगर से आश्वासन देते हुए कहा कि चिंता मत करो ये सारी एडवाइजरी मेके लिए है। मैं आपको प्रॉमिस करता हूं कि आपको दोगुना मजा आएगा।

इसके बाद दिलजीत ने सागर का मंथन का भी उदाहरण दिया और कहा कि देवताओं को भी अमृत ग्रहण करना पड़ा था। दिलजीत ने कहा कि यह भगवान शिव थे, जिन्होंने अमृत छोड़कर विष का ग्रहण किया था। सिंगर ने कहा, इससे मुझे यह सीखने को मिला है कि दुनिया आप पर जहर ही फेंकेगी। यह आप पर निर्भर करता है कि आप इसे अपने अंदर आने देते हैं या नहीं।

फैंस को पसंद आया यह अंदाज

दिलजीत ने आगे कहा, जो भी आप पर जहर फेंके इसे अपने काम में कभी भी नहीं आने। लोगों का काम आपको टोकने का है। ट्रोलर्स का काम आपकी आलोचना करने का है, लेकिन आपको अंदर से डिस्टर्ब नहीं होना है। मेरा बस यही कहना है कि मजा करो और इसे कभी भी अपने काम पर असर न पड़ने दो।

काम में नहीं डालना बाधा

सिंगर ने यह भी कहा कि लोग आपके काम में बाधा डालने की पूरी कोशिश करेंगे। बस आपको कभी भी परेशान नहीं होना है। दिलजीत के इस वीडियो को फैंस का खूब प्यार मिल रहा है।

2025 नवम्बर में प्रदर्शित होगी फरहान अख्तर की 120 बहादुर

रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर की एक्सेल एंटरटेनमेंट ने अमित चंद्रा के ट्रिगर हैप्पी स्टूडियो के साथ मिलकर 120 बहादुर की रिलीज की तारीख की घोषणा की है, जो 21 नवंबर, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। यह फिल्म मेजर शैतान सिंह भाटी पीवीसी और चार्ली कंपनी, 13 कुमाऊं रेजिमेंट के सैनिकों को श्रद्धांजलि है। 1962 के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित, 120 बहादुर रेजांग ला की पौराणिक लड़ाई से प्रेरित है, जहां अद्वितीय बहादुरी और बलिदान ने इतिहास रच दिया था फिल्म की पहली घोषणा के बाद से ही, उत्सुकता लगातार बढ़ रही है, जिसमें दमदार फर्स्ट लुक और मोशन पोस्टर शामिल हैं, जो फिल्म की रिलीज से पहले उत्साह को और बढ़ा रहे हैं। फरहान अख्तर, जो कई तरह के मजबूत और प्रेरक किरदार निभाने की अपनी क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं, मेजर शैतान सिंह भाटी पीवीसी की भूमिका निभा रहे हैं। इसकी घोषणा करते हुए, अभिनेता ने इस साल नवंबर में एक शक्तिशाली पोस्टर साझा किया, साथ ही कैप्शन में लिखा था, 1962 को 62 साल हो चुके हैं। आज, हम रेजांग ला के नायकों के अद्वितीय साहस और बलिदान का सम्मान करते हैं। 120 बहादुर मेजर शैतान सिंह और उनके बहादुर लोगों की वीरता और अदम्य भावना को हमारी श्रद्धांजलि है, जिन्होंने दुर्गम बाधाओं के बावजूद अपनी जमीन पर डटे रहे। उनकी कहानी समय के साथ गूंजती है, हमें स्वतंत्रता की कीमत और एकता की ताकत की याद दिलाती है, अहीर समुदाय को विशेष सलाम, जिनके बेटों ने हमारे देश की रक्षा में बेजोड़ बहादुरी दिखाई। रजनीश 'राज़ी' घई द्वारा निर्देशित और एक्सेल एंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित, 120 बहादुर एक असाधारण सिनेमाई यात्रा का वादा करती है। लुभावने दृश्यों और एक शक्तिशाली कथा के साथ, फिल्म का उद्देश्य भारत के सैन्य नायकों की अटूट बहादुरी को श्रद्धांजलि देना है।

बेबी जॉन में एक्शन सीन्स करते हुए वामिका को था इस बात का डर

वामिका गब्बी, वरुण धवन के साथ अपनी अगली फिल्म बेबी जॉन को लेकर बेहद उत्साहित हैं। वह अभिनेत्री कीर्ति सुरेश के साथ भी स्क्रीन स्पेस साझा करेंगी, अब वामिका ने अपने शूटिंग अनुभव साझा किए। वामिका गब्बी ने फिल्म के एक्शन दृश्यों की शूटिंग को याद किया और बताया कि वह नर्वस महसूस कर रही थीं। उन्होंने कहा कि यह मेरा बेबी जॉन जैसी एक्शन फिल्म पर काम करने का पहला अनुभव था, प्रोडक्शन और मैं दोनों ही नर्वस थे। पहले एक्शन सीक्वेंस की शूटिंग के लिए उन्होंने 8-9 घंटे बांटे किए थे, यह देखते हुए कि मैंने पहले कभी ऐसा नहीं किया था। सभी को आश्चर्य हुआ क हमने दो-ढाई घंटे के भीतर ही सीन शूट कर लिया, तभी मुझे एहसास हुआ कि मुझमें वंडर वुमन की झलक है। वामिका ने कहा कि कलीस सर और एटली सर के साथ काम करना एक शानदार अनुभव रहा, वे वास्तव में आपका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दिलाने में मदद करते हैं।

संक्षिप्त समाचार

मैटर का एराथॉन निकल पड़ा नर्मदा परिक्रमा पर : संस्कृति, संरक्षण और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी की यात्रा

भोपाल। भारत की अग्रणी इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता कंपनी मैटर ने नर्मदा परिक्रमा अध्याय के साथ अपनी एराथॉन भारत यात्रा जारी रखी है। मैटर ने एरा के माध्यम से गुजरात में 1,868 किलोमीटर की यात्रा की है। उस दौरान उसने सुंदरबन में अर्थडे.ऑर्ग की साझेदारी में 1,868 मैंग्रोव लगाए है। उस अध्याय की सफलता के बाद, एरा का अभियान अब नर्मदा नदी के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और पारिस्थितिक महत्व का जश्न मना रहा है। यह नर्मदा परिक्रमा 14 दिसंबर को अमरकंटक में शुरू हुई। इस तरह नदी के उद्गम का सम्मान किया गया। इसके बाद यह यात्रा लोगोंसे बातचीत करते हुए डिंडोरी पहुंची। शहडोल में ऐतिहासिक विराट मंदिर में दर्शन कर के वह बांधवगढ़ में पर्यावरण रक्षा की बात करने के लिए आगे बढ़ी। बाद में एरा की टीम ने जबलपुर में पवित्र नर्मदा आरती में भाग लिया। फिर पचमढ़ी, होशंगाबाद से होते हुए, नदी की स्थायी विरासत का जश्न मनाने के लिए यात्रा भोपाल पहुँची। मैटर का यह 'एराथॉन भारत' अपनी तकनीकी उत्कृष्टता के प्रदर्शन से कहीं अधिक है; यह स्वच्छ, स्मार्ट गतिशीलता की ओर एक आंदोलन के रूप में उभरा है। नर्मदा परिक्रमा अध्याय के जरिए मैटर के एरा का असाधारण प्रदर्शन और बहुमुखी प्रतिभा पर प्रकाश डाला गया है। शांत नदी के किनारों से लेकर घने जंगल के रास्तों और हलचल भरे शहरों तक - विभिन्न इलाकों पर एरा आसानी से विजय प्राप्त करता है। यह परिक्रमा एरा की इस विश्वसनीयता, अनुकूलनशीलता और अभिनव डिजाइन का प्रदर्शन करता है। एरा की नर्मदा परिक्रमा भारत की समृद्ध प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के लिए एक सम्मान दर्शाता है। यह जहां भी रुकी, उस पड़ाव पर, हमने नर्मदा नदी की स्थायी विरासत का जश्न मनाया और बातचीत के माध्यम से समुदायों को स्थायी गतिशीलता को अपनाने के लिए प्रेरित किया। यही हमारा उद्देश्य है। यह यात्रा पर्यावरण संरक्षण, सामुदायिक जुड़ाव और तकनीकी नवाचार के लिए मैटर की प्रतिबद्धता को दर्शाती है, मैटर टीम ने बताया।

बड़े एमओयू साइनिंग के साथ बिहार बिजनेस कनेक्ट 2024 का हुआ सफल समापन

पटना , एजेंसी। पहले दिन के शानदार आयोजन के बाद बिहार बिजनेस कनेक्ट 2024 के दूसरे दिन की शुरुआत भी काफी उत्साहजनक रूप से हुआ। माननीय उप मुख्यमंत्री श्री विजय कुमार सिन्हा ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उनके साथ, माननीय उद्योग-सह-पर्यटन मंत्री श्री नीतीश मिश्रा, माननीय ऊर्जा मंत्री श्री बिजेंद्र प्रसाद यादव, श्री अमृत लाल मीणा, मुख्य सचिव, बिहार, श्री दीपक कुमार, सचिव, मुख्यमंत्री, श्री प्रत्यय अमृत, विकास आयुक्त, श्रीमती बन्दना प्रेयषी, सचिव, उद्योग विभाग, सम्बंधित विभागों के वरीय अधिकारी, एवं उद्योग जगत के गणमान्य व्यक्ति भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ मंच पर गणमान्य अतिथियों का स्वागत और दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। गणमान्य अतिथियों द्वारा कॉफी टेबल बुक- बिहार- ए जर्नी ऑफ इंडस्ट्रियल ट्रांसफॉर्मेशन का विमोचन भी किया गया, जिसमें सरकार की विभिन्न पहलों, नीतियों और नीतिगत सुधारों की विस्तृत जानकारी दी गई है। इसमें क्षेत्र-विशिष्ट पहलों और नीतियों का भी उल्लेख है, जो उद्योगों को बिहार में निवेश संबंधी निर्णय लेने में सहायक सिद्ध होंगे।

दुबई से सोना खरीदने के दिन लद गए! अब भारत में ही सस्ती हुई गोल्ड ज्वैलरी

नई दिल्ली, एजेंसी। एक समय था जब दुबई में सोना खरीदना भारत के मुकाबले काफी सस्ता होता था। लेकिन अब सीन बदल गया है। दुबई के मुकाबले भारत में सोने के आभूषण खरीदना सस्ता हो गया है। शायद यही कारण है कि दुबई में रहने वाले एनआरआई अब भारत में ही गोल्ड ज्वैलरी के ऑर्डर दे रहे हैं। इससे स्थानीय ज्वैलर्स की बिक्री काफी बढ़ गई है। इकनॉमिक टाइम्स के मुताबिक सोने पर कस्टम ड्यूटी में कटौती और यहां गोल्ड ज्वैलरी पर लगने वाले कम मेकिंग चार्ज के चलते भारत में सोने की कीमत काफी कम हुई है। प्रमुख आभूषण विक्रेताओं ने कहा कि नवंबर-दिसंबर के दौरान एनआरआई खरीद में एक साल पहले की तुलना में 10-15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। दो महीनों में बिक्री 80 टन तक पहुंचने की संभावना है।

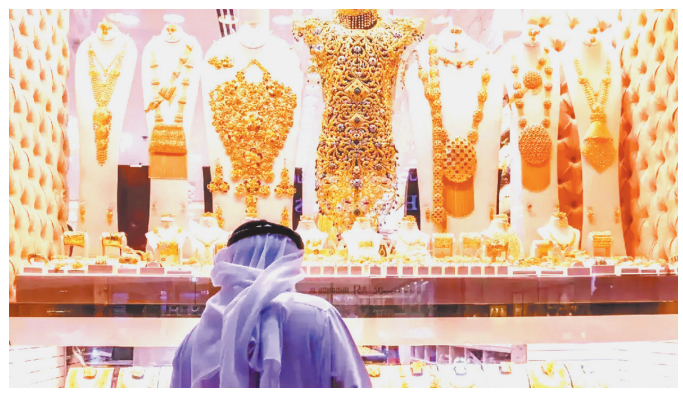

भारत में कम हुई सोने की कीमत

एनआरआई और भारतीय पर्यटक दुबई से सोना खरीदकर लाना पसंद करते रहे हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि वहां पहले सोना खरीदना भारत के मुकाबले काफी सस्ता था। लेकिन अब मामला पलट गया है। एनआरआई अब भारत में ही स्थानीय ज्वैलर्स को ज्वैलरी के ऑर्डर दे रहे हैं।

ऐसा इसलिए है क्योंकि जुलाई में बजट के दौरान सोने पर कस्टम ड्यूटी 15 प्रतिशत से घटाकर 6 प्रतिशत कर दी गई थी। इस कटौती के बाद कीमतों में गिरावट आई है। वहीं दूसरी ओर भारत में ज्वैलरी बनाने का शुल्क भी बहुत कम है। यह दुबई के मुकाबले करीब आधा है।

दुबई में कारोबार पर पड़ा असर

सोने की ज्वैलरी बनाने वाली एक नामचीन चेन के चेयरमैन जॉय अलुकास ने कहा कि इस शादी के मौसम (15 नवंबर से 15 दिसंबर) में सोने की बिक्री बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि एनआरआई की ओर से भारत में इनके स्टोर पर सोने की ज्वैलरी की खरीद में पिछले साल की तुलना में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वहीं सितंबर तिमाही में सोने की मांग में पिछले साल की तुलना में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा, इसके विपरीत, हमारे दुबई आउटलेट पर बिक्री कम हो गई है क्योंकि अधिकांश एनआरआई अब भारत से सोने के आभूषण खरीदना पसंद कर रहे हैं। कोच्चि स्थित इस चेन के 160 स्टोर हैं, जिनमें से 35 आउटलेट दुबई में हैं।

कितना टैक्स और कितना मेकिंग चार्ज?

दुबई सोने के आभूषणों पर 5 प्रतिशत मूल्य वर्धित कर (वैट) लगाता है। वहीं भारत ने ड्यूटी को घटाकर 6 प्रतिशत कर दिया है। इसका मतलब है कि दुबई में लगने वाला वैट अभी भी ज्यादा है। अखिल भारतीय रत्न एवं आभूषण घरेलू परिषद के उपाध्यक्ष राजेश रोकड़े ने कहा, भारत में सोने से ज्वैलरी बनाना काफी सस्ता है। दुबई में मेकिंग चार्ज जहां 25 से 35 प्रतिशत है तो वहीं भारत में यह 10 से 20 प्रतिशत है।

970 तक जा सकता है टाटा मोटर्स का शेयर, 30 प्रतिशत डिस्काउंट पर कर रहा कारोबार

नई दिल्ली, एजेंसी। शेयर बाजार में मचे हाहाकार के बीच शुक्रवार को टाटा ग्रुप की कंपनी टाटा मोटर्स के शेयर भी दबाव में नजर आए। सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन टाटा मोटर्स के शेयर 2.73 प्रतिशत की गिरावट के साथ 724 रुपये पर बंद हुए। शेयर का यह भाव अपने 52 वीक के हाई यानी 1,179.05 रुपये से लगभग 38 प्रतिशत डिस्काउंट पर ट्रेड कर रहा है। बता दें कि शेयर 30 जुलाई 2024 को भी 52 हफ्ते के हाई पर पहुंच गया था। वहीं, इस शेयर पर एक्सपर्ट बुलिश नजर आ रहे हैं। ब्रोकरेज एलकेपी सिक्योरिटीज ने टाटा मोटर्स के शेयर को बाय रेटिंग दी है। ब्रोकरेज का मानना है कि घरेलू कॉमर्शियल व्हीकल्स (सीवी) की मांग दूसरी छमाही में बढ़ सकती है और हालिया लॉन्चिंग से सपोर्ट मिलने की उम्मीद है। घरेलू ब्रोकरेज ने शेयर पर 970 रुपये का नया टारगेट प्राइस सुझाया है, जो वर्तमान कीमत से 30 प्रतिशत अधिक है। हाल ही में टाटा मोटर्स को उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम (यूपीएसआरटीसी) से 1,297 बस चेसिस का ऑर्डर मिला है।

संभलकर करें क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल, डिफॉल्ट हुए तो 50 प्रतिशत तक देना होगा ब्याज

नई दिल्ली, एजेंसी। क्रेडिट कार्ड एक ऐसा शेर है जिसे काबू में रखा जाए तो ठीक है। अगर यह बेकाबू हुआ तो बड़ी मुसीबत बन जाता है। क्रेडिट कार्ड का बिल समय पर न चुकाने पर बैंक बहुत ज्यादा ब्याज लगाते हैं। यह मामला राष्ट्रीय उपभोक्ता अदालत पहुंचा था जहां ब्याज दर को 30 फीसदी तक सीमित कर दिया था। लेकिन अब नेशनल कंज्यूमर फोरम के इस फैसले पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है। एनसीडीआरसी ने अपने एक फैसले में कहा था कि क्रेडिट कार्ड पर उपभोक्ताओं से 36 से 50 फीसदी सालाना ब्याज लेना बहुत ज्यादा है। एनसीडीआरसी ने इसे गलत कारोबारी प्रथा बताया था। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने एनसीडीआरसी के इस फैसले पर रोक लगा दी है। इससे बैंकों को राहत मिली है। बैंक अब क्रेडिट कार्ड पर 30 फीसदी से ज्यादा यानी 50 फीसदी तक ब्याज ले सकेंगे।

क्या कहा था एनसीडीआरसी ने

उपभोक्ता अदालत ने क्रेडिट कार्ड पर ब्याज दर को अधिकतम 30 प्रतिशत पर सीमित कर दिया था। उपभोक्ता आयोग ने माना था कि बैंकों और उपभोक्ताओं के बीच समझौता असमान स्थिति में होता है। क्रेडिट कार्ड के लिए उपभोक्ताओं के पास कोई मोलभाव की शक्ति नहीं होती, सिवाय इसके कि वे क्रेडिट कार्ड की सुविधा को अस्वीकार कर दें। आयोग ने यह भी कहा था कि अगर उपभोक्ता को अपनी जिम्मेदारी निभाने में असफल होने पर अत्यधिक जुर्माना देना पड़े तो यह अनुचित व्यापार प्रथा मानी जाएगी। इसके लिए उपभोक्ता अदालत ने क्रेडिट कार्ड की ब्याज दरों की तुलना विभिन्न देशों से की थी।

विदेशों का दिया था हवाला

अपने फैसले में एनसीडीआरसी ने कहा था कि अमेरिका और ब्रिटेन में ब्याज दर 9.99 प्रतिशत से 17.99 प्रतिशत फीसदी के बीच है। ऑस्ट्रेलिया में ब्याज दर 18 प्रतिशत से 24 प्रतिशत फीसदी है। फिलीपींस, इंडोनेशिया और मेक्सिको (उभरती अर्थव्यवस्थाएं) में ब्याज दर 36 प्रतिशत से 50 प्रतिशत फीसदी है। भारत जैसे बड़े और विकासशील देशों में उच्चतम दर अपनाने का कोई औचित्य नहीं है। आयोग ने क्रेडिट कार्ड ब्याज दरों पर 30 प्रतिशत की ऊपरी सीमा तय करते हुए कहा था कि 30 प्रतिशत से अधिक ब्याज दर को अत्यधिक माना जाएगा। यह अनुचित व्यापार प्रथा के तहत आएगा।

यूबीएस: भारत को लेकर सतर्क, चीन को ज्यादा तरजीह...

नई दिल्ली, एजेंसी। यूबीएस ने भारतीय बाजार को लेकर फिलहाल सतर्क रुख अपनाया हुआ है। कमजोर कमाई और सुस्त अर्थव्यवस्था के चलते उसे बाजार महंगा लग रहा है। इसके उलट यूबीएस चीन के बाजार को ज्यादा तरजीह दे रहा है। वहां प्रोत्साहन पैकेज और नीतिगत घोषणाओं से बाजार को बल मिलने की उम्मीद है। दुनिया की प्रमुख फाइनेंशियल कंपनी का मानना है कि भारत में नौकरियों और आय में बढ़ोतरी होना जरूरी है। इस तरह की कुछ दिक्कतें दूर हो जाएं तो भारत में बंपर संभावनाएं हैं।

यूबीएस के एक्जीक्यूटिव डायरेक्ट सुनील तिरुमलाई ने वैश्विक बाजारों और भारत की आर्थिक स्थिति पर अपनी राय दी है। उन्होंने बताया कि कमजोर कमाई और सुस्त अर्थव्यवस्था के चलते भारत महंगा लग रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनिश्चितता का माहौल है। यह बात खासतौर से उभरते बाजारों के लिए है। ट्रंप प्रशासन की पॉलिसी, ऊंचे वैल्यूएशन और बढ़ती ब्याज दरें बाजारों में निवेश के लिए चुनौतियां पेश कर रही हैं। यूबीएस इमर्जिंग मार्केट इंडेक्स के लिए 2025 में गिरावट की आशंका जता रहा है। भारत में उनका निवेश कम है। जबकि चीन में ज्यादा। कारण है कि वहां के प्रोत्साहन पैकेज और आकर्षक मूल्यांकन उसे लुभा रहे हैं। हालांकि, अगर चीन में उम्मीद के मुताबिक हालात नहीं रहे तो रणनीति बदल सकती है।

तिरुमलाई ने बताया कि भारत में कुछ क्षेत्र जैसे उपभोक्ता वस्तुएं और आईटी सेवाएं अभी भी आकर्षक हैं। चीन के अलावा अन्य देशों में उत्पादन बढ़ाने की संभावनाओं पर भी उन्होंने चर्चा की। लेकिन, भारत को इसमें सफल होने के लिए और प्रोत्साहन देने की जरूरत है। नए जमाने की तकनीकी कंपनियों में निवेश की संभावनाएं हैं, लेकिन जोखिम भी हैं। बाजार में बड़े बदलाव के लिए भारत की अपनी बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियों का लिस्ट होना जरूरी है। तिरुमलाई का मानना है कि रोजगार और आय में बढ़ोतरी होने पर ही भारत की अर्थव्यवस्था में सुधार आएगा।

सुनील तिरुमलाई ने वैश्विक बाजारों की अनिश्चितता पर चिंता जताई है। उन्होंने कहा, 2025 बहुत अनिश्चित होगा और यह आम तौर पर बाजारों के लिए अच्छी बात नहीं है। उन्होंने उभरते बाजारों, खासकर एशिया के लिए कई चुनौतियों का जिक्र किया। ट्रंप प्रशासन की नीतियां, जैसे अमेरिका के बाहर कई देशों पर टैरिफ लगाना और अमेरिकी कंपनियों के लिए टैक्स में कटौती, इन चुनौतियों में शामिल हैं। इससे अमेरिकी बाजार में निवेश आकर्षक हो सकता है। इससे बाकी दुनिया से पैसा निकलकर वहां जाने के आसार हैं।

इसके अलावा, तिरुमलाई ने ऊंचे वैल्यूएशन पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा, मूल्यांकन न केवल भारत के लिए बल्कि श्वरू स्तर पर भी 10-12 साल की अवधि में काफी ऊंचे स्तर पर हैं। उन्होंने कहा कि लंबी अवधि की ब्याज दरें ऊंची रह सकती हैं। इस वैश्विक परिदृश्य में कमजोर कमाई और सुस्त अर्थव्यवस्था के कारण भारत महंगा लग रहा है। चीन प्लस वन रणनीति पर तिरुमलाई ने कहा कि इस बारे में सोच बदल रही है। उन्होंने कहा, हाल ही में ट्रंप ने भी कहा है कि वह न केवल चीन पर, बल्कि अन्य बाजारों पर भी टैरिफ के बारे में बात करते हैं। इसलिए, अगर टैरिफ लेनदेन पर आधारित बातचीत का साधन बन जाता है तो यह तय नहीं है कि चीन के बाहर फैक्ट्रियों का ट्रांसफर स्थायी होगा। कंपनियां अन्य जगहों पर जाने के बजाय अमेरिका में ही अधिक फैक्ट्रियां स्थापित करना चाह सकती हैं।

भारत पर अंडरवेट रुख के बारे में तिरुमलाई ने कहा कि वे जिन कारकों पर नजर रखेंगे उनमें मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर प्रमुख है। उन्होंने कहा, हमें नौकरियों और आय में बढ़ोतरी के मजबूत संकेत देखने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि एक बार ऐसा हो जाने पर बाकी सब कुछ ठीक हो जाएगा। तब व्यवसायों को अच्छी मांग दिखाई देगी। वे निवेश करना शुरू कर देंगे और खपत बढ़ने लगेगी। उन्होंने कहा कि इस समय यूबीएस चीन पर ओवरवेट हैं। यानी उसे अधिक तरजीह दी हुई है। वहां प्रोत्साहन पैकेज और नीतिगत घोषणाओं के साथ आकर्षक वैल्यूएशन निवेश को खींच रहे हैं। तिरुमलाई ने कहा कि ट्रंप का एक और सकारात्मक फैक्टर तेल की कीमतें हो सकती हैं। उन्होंने कहा, अतीत में उन्होंने अमेरिका से अधिक तेल पंप करने का जिक्र किया है। इससे तेल की कीमतें कम हो सकती हैं।

बिजली वितरण कंपनियां राज्यों पर वित्तीय रूप से बोझ बनीं, आरबीआई ने अपनी रिपोर्ट में कही यह बात

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि बिजली वितरण कंपनियां (डिस्कॉम) राज्यों के लिए वित्तीय रूप से भारी बोझ बनी हुई हैं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि राज्य डिस्कॉम का कुल संचित घाटा 2022-23 तक 6.5 लाख करोड़ रुपये तक पहुँच गया है, जो देश के सकल घरेलू उत्पाद का 2.4 प्रतिशत है। रिपोर्ट के अनुसार, 卐बिजली वितरण कंपनियाँ (डिस्कॉम) राज्यों पर वित्तीय रूप से बोझ बनी हुई हैं।卐 रिपोर्ट में कहा गया है कि विभिन्न सुधार प्रयासों के बावजूद डिस्कॉम राज्यों के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई हैं। हालात बदलने के लिए, आरबीआई ने उत्पादकता में सुधार, ट्रांसमिशन और वितरण घाटे को कम करने और बिजली आपूर्ति की वास्तविक लागत के साथ टैरिफ को एडजस्ट करने जैसे उपायों के महत्व पर जोर दिया।

नवरत्न कंपनी को मिला 300 करोड़ रुपये का काम, शेयर का भाव 100 रुपये से कम

नई दिल्ली, एजेंसी। नवरत्न कंपनी एनबीसीसी ने शुक्रवार को नए वर्क ऑर्डर की जानकारी दी। कंपनी ने 20 दिसंबर को बताया कि उन्हें कई ऑर्डर मिले हैं। जिसकी कीमत करीब 300 करोड़ रुपये का है। बता दें, शुक्रवार को कंपनी के शेयर बाजार के बंद होने के समय पर 2.75 प्रतिशत की गिरावट के साथ 94.44 रुपये पर बंद हुआ था। कंपनी ने बताया है कि उन्हें 200.60 करोड़ रुपये का काम ऑयल इंडिया लिमिटेड से मिला है। कंपनी को ऑयल हॉस्पिटल बनाना है। इसके अलावा एचएससीसी (इंडिया) को 98.17 करोड़ रुपये का काम मिला है। यह एनबीसी की सब्सिडियरी कंपनी है। बता दें, इसी महीने के शुरुआत में 600 करोड़ रुपये का काम एनबीसीसी को मिला था। कंपनी की आर्थिक स्थिति की बात करें सितंबर तिमाही में कुल नेट प्रॉफिट 125.10 करोड़ रुपये रहा है।

सच्चे एआईसाथी की ओर से पहला कदम या गैलेक्सी एआई की मदद से मोबाइल का अनूठा अनुभव पाएं

गुरुग्राम, एजेंसी। कल्पना कीजिए कि, आपका तनाव कम हो और आपके पास अपने काम के लिए ज़्यादा समय हो। और उससे भी बेहतर, अगर आपको अपनी ज़रूरत की मदद मांगने से पहले ही मिल जाए। यह सब अब सिर्फ कल्पना नहीं है। मोबाइल एआई की दुनिया में, यह सच हो सकता है, और सैमसंग गैलेक्सी इसे संभव बना रहा है।

कुछ हफ्ते पहले, सैमसंग नेवन द्ध 7 बीटा प्रोग्रामलॉन्च किया था, जो एआई-इंटीग्रेटेड ऑपरेटिंग सिस्टम के साथ एक नए युग की शुरुआत करता है। यह प्लेटफ़ॉर्म यूजर्स को पहले से कहीं ज़्यादा पर्सनलाइज्ड अनुभव देता है, जिससे उनका मोबाइल इस्तेमाल और भी आसान और सुविधाजनक हो जाता है।

गैलेक्सी का एआई के प्रति दृष्टिकोण हमेशा से एक बात पर केंद्रित रहा है– आपकीप्राइवेसी। चाहे यह पहले एआई फ़ोन का लॉन्च हो या ऑन-डिवाइस एआई के लिए किया गया नया इनोवेशन, सैमसंग ने यह सुनिश्चित किया है कि आपकी जानकारी पूरी तरह सुरक्षित रहे।अब आपका फोन आपकी ज़िंदगी के हर पहलू को बेहतर बनाने के लिए तैयार है। यह आपकी आदतों और ज़रूरतों को समझता है, आपकी दिनचर्या के हिसाब से ढलता है, और आपका हर काम आसान बनाता है। सबसे अच्छी बात यह है कि यह सब आपकी प्राइवेसी के साथ किसी भी तरह का समझौता किए बिना किया जाता है।

सैमसंग गैलेक्सी एस सीरीज़ के आने वाले स्मार्टफोन्स का इंतजार अब और खास हो गया है। हम न सिर्फ गैलेक्सी यूजर्स को और ज्यादा पर्सनलाइजेशन दे रहे हैं, बल्कि उनकीप्राइवेसीऔर मानसिक सुकून का भी पूरा ध्यान रख रहे हैं। इसी सोच के साथ हमनेपर्सनल डेटा इंजनतैयार किया है, जो आपके डेटा को सुरक्षित रखने का एक पावरफुल और एडवांस तरीका है।

यह इंजन आपके पर्सनल डेटा को ऑन-डिवाइस सुरक्षित रखता है और विभिन्न ऐप्स के बीच डेटा को सुरक्षित शेयर करता है। इसका सारा डेटानॉक्स वॉल्टकी मदद से एन्क्रिप्टेड और सुरक्षित रखा जाता है। नॉक्स वॉल्ट वही प्लेटफॉर्म है जो आपके फोन में बायोमेट्रिक जैसी सबसे संवेदनशील जानकारी की सुरक्षा करता है।सुरक्षा को और मजबूत बनाने के लिए, हमनेपोस्ट-क्वांटम क्रिप्टोग्राफीको भी शामिल किया है।

कैलिफोर्निया आमंड्स के साथ क्रिसमस को बनाएं और भी ज्यादा

मुंबई, एजेंसी। क्रसमस अपने करीबियों और दोस्तों के साथ एक सुखद वक्त बिताने और बेहतरीन यादों को संजोने का मौका होता है। आइए, इस बार स्वाद से समझौता किए बिना ही सेहतमंद विकल्पों को चुनकर त्योहार का लुत्फ उठाएं। जब आप क्रिसमस के मीठे और पारंपरिक पकवान पकाएं तो कैलिफोर्निया आमंड्स की अच्छाइयों के साथ अपनी खुशियों को और बढ़ाएं। तरह-तरह से उपयोग की जाने वाली ये सामग्री आपके पंसदीदा पकवानों में क्रंच, लज्जत और पोषण लेकर आएगी। मशहूर कैलिफोर्निया आमंड्स, पोषण का भंडार है। इसमें प्रोटीन, हेल्दी फैट्स, फाइबर, मैग्नीशियम, जिंक और फॉस्फोरस जैसे 15 जरूरी पोषक तत्व हैं। केक से लेकर कुकीज़ तक, बादाम ड्राय फ्रूट्स का राजा है जो ना केवल स्वाद बढ़ाता है

बैडमिंटन में 2024 में ओलंपिक में मिली निराशा

कुछ सफलताएं भी मिली

नई दिल्ली (एजेंसी)। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की शानदार जोड़ी ने जहां भारतीय बैडमिंटन में एक अमिट छाप छोड़ी तो वहीं लक्ष्य सेन की पेरिस ओलंपिक के कांस्य पदक मैच में मिली हार इस साल कड़वे अनुभवों में शामिल रही। पूरे साल मीठे अनुभवों पर अकसर निराशा का साया रहा। सात्विक और चिराग के लिए अच्छा और बुरा दोनों समय रहे क्योंकि यह जोड़ी चार फाइनल में पहुंची और दो खिताब जीते जिससे ऐतिहासिक ओलंपिक पदक की उम्मीद जगी। लेकिन पेरिस ओलंपिक में क्वार्टरफाइनल से बाहर होने के साथ उनका अभियान निराशा में समाप्त हो गया।

एशियाई खेलों के चैम्पियन ने फ्रेंच ओपन सुपर 750 और थाईलैंड सुपर 500 में खिताब जीतकर दुनिया की शीर्ष जोड़ियों में अपना दर्जा मजबूत किया। यह जोड़ी मलेशिया सुपर 1000 और इंडिया सुपर 750 में उप विजेता रही लेकिन 8 साल में दूसरी दफा ओलंपिक जीतने का सपना पूरा नहीं हो पाया। इस हार के बाद उनके दानिश कोच माथियास बो ने इस्तीफा दे दिया, लेकिन मलेशिया के टैन किम हर की वापसी ने आत्मविश्वास बढ़ाया।

टैन किम हर को सात्विक और चिराग को एक साथ लाने का श्रेय दिया जाता है। वहीं सेन के लिए यह बहुत करीब और फिर भी दूर का मामला रहा। वह पेरिस ओलंपिक में भारत के लिए उम्मीद की किरण थे। साल की शुरुआत में फ्रेंच ओपन और ऑल इंग्लैंड चैंपियंस के सेमीफाइनल तक के सफर ने उनकी खराब फॉर्म से वापसी कराई और पहले ओलंपिक पदक के सपने को जगा दिया। हालांकि अल्मोड़ा का यह 23 वर्षीय खिलाड़ी ओलंपिक में कांस्य पदक के मैच में बुरी तरह हार गया। हालांकि उनके सैयद मोदी इंटरनेशनल में खिताबी जीत ने आगामी सत्र के लिए उम्मीद की किरण जगाई।

भारत की दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधू के लिए साल निराशाजनक रहा। उन्होंने अपने कोचिंग स्टाफ में कई बदलाव किये और महान बैडमिंटन खिलाड़ी प्रकाश पादुकोण के मार्गदर्शन में ट्रेनिंग के लिए बेंगलुरु चली गईं। लेकिन उनका टूर्नामेंट के शुरूआत में बाहर होना जारी रहा जिससे उनकी फॉर्म और फिटनेस से संघर्ष उजागर हुआ। वह मलेशिया मास्टर्स के फाइनल में पहुंची लेकिन तीसरा ओलंपिक पदक जीतने का सपना प्री क्वार्टरफाइनल में मिली हार से खत्म हो गया। हालांकि इस 29 साल की खिलाड़ी ने अपना सत्र सैयद मोदी इंटरनेशनल खिताब जीतकर समाप्त किया और वह इस महीने के अंत में परिणय सूत्र में बंधने के लिए तैयार हैं।

एचएस प्रणय के लिए यह सत्र दृढ़ता और प्रतिकूलता भरा रहा। उनके हमवतन खिलाड़ी जहां बेहतर प्रतिद्वंद्वियों से हार गए तो वहीं प्रणय फिर अपने स्वास्थ्य से जूझते रहे। ओलंपिक से ठीक पहले पेट से जुड़ी समस्या और चिकनगुनिया से जूझता हुआ यह खिलाड़ी दृढ़ता से पेरिस के नॉकआउट चरण में पहुंचने में सफल रहा, हालांकि वह अपनी सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में नहीं दिखा। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों के ओलंपिक में पदक नहीं जीतने से निराश पूर्व आल इंग्लैंड चैम्पियन पादुकोण ने खिलाड़ियों से जवाबदेही की बात तक कह डाली।

वहीं अश्विनी पोनप्पा और तनीषा क्रास्टो तथा गायत्री गोपीचंद और त्रीसा जॉली की दो महिला युगल जोड़ियों ने कुछ अच्छा प्रदर्शन दिखाया और भारतीय बैडमिंटन की लय को जारी रखा। अश्विनी और तनीषा का पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करना किसी चमत्कार से कम नहीं था क्योंकि दोनों की रैंकिंग साल के शुरू में काफी सामान्य थी। हालांकि यह जोड़ी पेरिस में जल्दी बाहर हो गई लेकिन गुवाहाटी मास्टर्स में खिताबी जीत ने उनकी जोड़ी पर भरोसा मजबूत किया।

गायत्री और त्रीसा ने ओलंपिक क्वालीफाई नहीं कर पाने की निराशा को दूर करते हुए सैयद मोदी इंटरनेशनल में अपना पहला सुपर 300 खिताब जीता। विश्व टूर फाइनल्स के लिए उनका क्वालीफाई करना उनके लिए साल का शानदार अंत रहा।

कई युवा बैडमिंटन खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन कर भारतीय बैडमिंटन के उज्जवल भविष्य का संकेत दिया जिसमें उभरती हुई प्रतिभा अनमोल खरब, तन्वी शर्मा, अरूंधती रेड्डी, देविका सिहाग, ईशारानी बरूआ, अस्मिता चालिहा, मालविका बंसोड और तन्वी पत्री शामिल हैं।

पेरिस पैरालंपिक में पैरा शटलरों का प्रदर्शन शानदार रहा। कुमार नीतिश की अगुआई वाले भारतीय पैरा बैडमिंटन दल ने पांच पदक जीते जिसमें एक स्वर्ण, दो रजत और दो कांस्य शामिल हैं। यह देश का पैरालंपिक में इस खेल में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। हालांकि पांच बार के विश्व चैम्पियन और गत स्वर्ण पदक विजेता प्रमोद भगत का खेल पंचाट का ठिकाने की जानकारी देने के नियम में विफलता के कारण निलंबन लगना झटका रहा। लेकिन नीतिश ने एसएल3 वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर भारत का खिताब बरकरार रखा। अन्य पदक विजेताओं में सुहास यथिराज (एसएल4, रजत पदक), तुलसीमति मुरूगेसन (एसयू5 रजत), मनीषा रामदास (एसयू5, रजत) और नित्या स्रे सिवान (एसएच6, कांस्य) शामिल हैं।

जडेजा ने ऑस्ट्रेलियाई मीडिया को अंग्रेजी में जवाब नहीं दिया

हिंदी में बोलते रहे, प्रेस कॉन्फ्रेंस भी जल्दी खत्म की जर्नलिस्ट बोले- यह अजीब था

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गई भारतीय टीम के ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस को लेकर सुर्खियों में हैं। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में जडेजा ने ऑस्ट्रेलिया मीडिया के बीच हिंदी में जवाब दिए, अंग्रेजी में नहीं। इसके बाद उन्होंने बस पकड़ने की बात कहकर प्रेस कॉन्फ्रेंस जल्दी खत्म कर दी। जडेजा की इस प्रेस कॉन्फ्रेंस को ऑस्ट्रेलियाई मीडिया अब अजीब बता रहा है। 2 दिन पहले ही विराट कोहली ने फैमिली की फोटो लिए जाने पर ऑस्ट्रेलियाई जर्नलिस्ट को फटकार लगाई थी। जडेजा की प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद ऑस्ट्रेलियन मीडिया उनकी आलोचना कर रहा है। चैनल-7 ने इसे अजीब प्रेस कॉन्फ्रेंस बताया।

- **प्रेस कॉन्फ्रेंस भारतीय मीडिया के लिए थी** – मेलबर्न में शनिवार को ट्रेनिंग सेशन के बाद रवींद्र जडेजा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। यहां जडेजा ने हिंदी में जवाब दिए। ऑस्ट्रेलिया की 7-न्यूज के मुताबिक, जडेजा ने अंग्रेजी में सवालों के जवाब देने से इनकार कर दिया।

पूर्व क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा के खिलाफ अरेस्ट वारंट

आरोप- कर्मचारियों का पीएफ जमा नहीं किया, 23 लाख रुपए बकाया

बेंगलुरु (एजेंसी)। रॉबिन उथप्पा 2007 में टी-20 वर्ल्ड कप जीतने वाली भारतीय टीम का हिस्सा रहे हैं। उन्होंने 2 साल पहले इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले लिया था।

पूर्व क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा के खिलाफ शनिवार को अरेस्ट वारंट जारी किया गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक- रॉबिन कपड़े बनाने वाली कंपनी सेंचुरीज लाइफ स्टाइल ब्रांड प्राइवेट लिमिटेड के पार्टनर और मैनेजर हैं। उन पर आरोप है कि कंपनी के कर्मचारियों के वेतन से पीएफ काटा गया, लेकिन अकाउंट में जमा नहीं किया गया।

बेंगलुरु के रीजनल ईपीएफओ कमिश्नर शदाक्षरी गोपाल रेड्डी ने 4 दिसंबर को रॉबिन उथप्पा को करीब 23 लाख रुपए जमा करने का वारंट जारी किया था। पुलकेशीनगर थाना पुलिस जब वारंट रिसीव कराने गई तो रॉबिन अपने घर पर नहीं मिले थे।

बताया जा रहा है कि वे अपनी फैमली के साथ दुबई में हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक- 27 दिसंबर तक पैसा जमा नहीं कराया गया तो रॉबिन अरेस्ट हो सकते है।भारतीय टीम ने 2007 में पाकिस्तान को 5 रन से हराते हुए टी-20 वर्ल्ड कप का खिताब जीता था।

तेंदुलकर ने बॉलिंग करती लड़की का वीडियो शेयर किया

जहीर से पूछा- सुशीला के एक्शन में आपकी झलक, आपने देखा, जहीर बोले- वे प्रतिभाशाली हैं

मुंबई (एजेंसी)। सचिन तेंदुलकर ने तेज गेंदबाजी कर रही 12 साल की एक लड़की का वीडियो शेयर किया है। उन्होंने इस वीडियो को शुक्रवार, 20 दिसंबर को शाम 5:40 बजे पूर्व तेज गेंदबाज जहीर खान को टैग किया। 51 साल के तेंदुलकर ने जहीर खान से पूछा, %सरल, सहज और देखने में बहुत प्यारा! सुशीला की गेंदबाजी एक्शन में आपकी झलक दिखती है जहीर खान। क्या आपने भी इसे देखा है।

इस पर जहीर खान ने शुक्रवार, 20 दिसंबर को शाम 7:04 बजे जवाब दिया, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं। उसका एक्शन बहुत सहज और प्रभावशाली है। वे पहले से ही बहुत आशाजनक दिख रही हैं। वीडियों में एक स्कूल की लड़की तेज गेंदबाजी करती दिख रही है। उनका बॉलिंग एक्शन जहीर खान से मिलता जुलता है। यह वीडियो सुशीला मीणा का है।

कौन है सुशीला मीणा – सुशीला राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले के धरियावद तहसील के गांव रामेर तलाब की रहने वाली हैं। बताया जा रहा है कि सुशीला गरीब परिवार से आती हैं। उनके पैरेंट्स मजदूरी और खेती से अपनी जीविका चलाते हैं। पिता का नाम रतनलाल मीणा है, जबकि मां शांति बाई मीणा हैं। सुशीला स्कूल लेवल पर क्रिकेट प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेती रहती हैं।

फैंस ने लेडी जहीर खान बताया – सुशीला के इस वीडियो को सोशल मीडिया में खूब पसंद किया जा रहा है। फैंस इस वीडियो पर अलग-अलग कमेंट कर रहे हैं। कोई उन्हें लेडी जहीर खान कह रहा है तो कोई उन्हें भविष्य की स्टार गेंदबाज बता रहा है।

तेंदुलकर के वीडियो शेयर करने के बाद ट्रेंड में सुशीला – सचिन तेंदुलकर द्वारा वीडियो शेयर किए जाने के बाद सुशीला मीणा गूगल में खूब सर्च की जा रही हैं। वे गूगल की टॉप ट्रेंड में हैं। नीचे देखिए गूगल ट्रेंड...

अनमोलप्रीत ने 35 बॉल में सेंचुरी लगाई

● लिस्ट-ए क्रिकेट में सबसे तेज शतक लगाने वाले भारतीय बने, विजय हजारे ट्रॉफी में किया कारनामा

पंजाब (एजेंसी)। पंजाब के बल्लेबाज अनमोलप्रीत सिंह ने शनिवार को विजय हजारे ट्रॉफी 2024-25 में अरुणाचल प्रदेश के खिलाफ 35 गेंदों में शतक लगा दिया। अनमोलप्रीत लिस्ट-ए क्रिकेट में सबसे तेज शतक लगाने वाले भारतीय बल्लेबाज बन गए हैं। अनमोलप्रीत ने पूर्व भारतीय बल्लेबाज यूसुफ पठान का रिकॉर्ड तोड़ा, जिन्होंने 2010 में महाराष्ट्र के खिलाफ बड़ौदा के लिए 40 गेंदों में शतक बनाया था। अनमोलप्रीत ने सिर्फ 45 गेंदों पर 12 चौकों और 9 छक्कों की मदद से 115 रनों की तेज पारी खेली।

लिस्ट-ए इतिहास की तीसरी सबसे तेज सेंचुरी – अनमोलप्रीत का 35 गेंदों में शतक अब लिस्ट-ए इतिहास का तीसरा सबसे तेज शतक है। वे केवल ऑस्ट्रेलिया के जैक फ्रेजर मैकगर्क (29 बॉल में) और साउथ अफ्रीका के दिग्गज एबी डिविलियर्स (31 बॉल में) से पीछे हैं।

पंजाब 9 विकेट से जीता –पंजाब ने टूर्नामेंट के अपने पहले मैच में 165 रन के टारगेट को केवल 12.5 ओवर में हासिल कर लिया। पंजाब ने अरुणाचल के खिलाफ टॉस जीतकर पहले बॉलिंग का फैसला लिया। अरुणाचल ने पंजाब को 165 रन का टारगेट दिया। पंजाब ने इसे एक विकेट खोकर हासिल कर लिया।

- **श्रेयस अय्यर ने कर्नाटक के खिलाफ नाबाद 114 रन बनाए** – विजय हजारे ट्रॉफी के पहले दिन एक अन्य मैच में मुंबई के कप्तान श्रेयस अय्यर ने कर्नाटक के खिलाफ नाबाद शतक लगाया। उन्होंने सिर्फ 50 गेंद में अपना शतक पूरा किया। अय्यर ने मुंबई के लिए 55 बॉल पर नाबाद 114 रन की पारी खेली। इस पारी में उन्होंने 10 चौके और 5 छक्के भी लगाए। श्रेयस की पारी के कारण मुंबई ने कर्नाटक के खिलाफ 50 ओवर में 4 विकेट के नुकसान पर 382 रन बनाए।

विजय हजारे ट्रॉफी में बरसा श्रेयस अय्यर का कहर, वनडे को टी20 बना ठोका तेजतर्रार शतक

मुंबई (एजेंसी)। विजय हजारे ट्रॉफी में मुंबई की कप्तानी करते हुए श्रेयस अय्यर ने एक बार फिर से पहले ही मुकाबले में धमाकेदार शुरूआत की है। मुंबई की टीम जब पहले 30 ओवर में 148 रन बना चुकी थी, तब क्रीज पर उतरे श्रेयस ने 51 गेंदों पर शतक जड़ा और टीम स्कोर 382 पर ला खड़ा किया। श्रेयस इस साल अपनी कप्तानी में ईरानी कप, रणजी ट्रॉफी, सैय्यद मुश्ताक अली ट्रॉफी जीत चुके हैं। उन्होंने आईपीएल में केकेआर को भी चैंपियन बनाया था। अब विजय हजारे ट्रॉफी में उन्होंने अपनी टीम को शानदार शुरूआत दी है। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में श्रेयस ने 55 गेंदों पर 5 चौके और 10 छक्कों की मदद से 114 रन बनाए। उन्हें अयुष म्हात्रे के 78, हार्दिक के 84 और शिवम दुबे के 63 रनों का सहयोग मिला।

ऐसी रही मुंबई की पारी – मुंबई की शुरूआत अच्छी नहीं रही थी। चौथे ओवर में ही ओपनर रघुवंशी 17 गेंदों पर मात्र 6 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। इसके बाद आयुष म्हात्रे ने हार्दिक तोमोर के साथ मिलकर स्कोर आगे बढ़ाया और 30 ओवर में 148 तक ले गए। आयुष ने 82 गेंदों पर

6 चौके और 2 छक्कों की मदद से 78 रन बनाए। इसके बाद क्रीज पर उतरे श्रेयस अय्यर ने पहली गेंद से ही अटैक रखा। हार्दिक जब 94 गेंदों पर 7 चौके और 3 छक्कों की मदद से 84 रन बनाकर आऊट हो गए तो श्रेयस ने 55 गेंदों पर 5 चौके और 10 छक्कों की मदद से 114 रन बनाए। सूर्यकुमार यादव ने 20 तो शिवम दुबे ने 36 गेंदों पर 5 चौके और पांच छक्के लगाकर 63 रन बनाकर अय्यर का साथ दिया और 50 ओवर में स्कोर 4 विकेट पर 382 तक पहुंचा दिया।

विद्याधर पाटिल के नाम सबसे खराब गेंदबाजी स्पैल – मैच के दौरान कर्नाटक के गेंदबाज विद्याधर पाटिल ने लिस्ट ए (विजय हजारे ट्राफी) का सबसे खराब स्पैल भी अपने नाम कर लिया। उन्होंने 10 ओवर में 103 रन लुटा दिए जबकि उन्हें एक ही विकेट मिल पाया। अगर ओवरऑल की बात की जाए तो डी लीडे जोकि नीदरलैंड के गेंदबाज है, के नाम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मुकाबले में 10 ओवर में 115 रन लुटाने का रिकॉर्ड है। उक्त मुकाबला दिल्ली में हुआ था। इसके बाद एम लेविस और एडम जंपा के नाम हैं जिन्होंने 113-113 रन दिए थे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अब तक 20 गेंदबाज ऐसे हैं जोकि 100 या इससे ज्यादा रन लुटा चुके हैं।

दोनों टीमों की प्लेइंग इलेवन

कर्नाटक – मयंक अग्रवाल (कप्तान), अनीश केवी, निकिन जोस, स्मरण रविचंद्रन, अभिनव मनोहर, कृष्णन श्रीजीत (डब्ल्यू), श्रेयस गोपाल, विजयकुमार विशक, प्रवीण दुबे, वासुकी कौशिक, विद्याधर पाटिल

मुंबई – अंगकृष रघुवंशी, आयुष म्हात्रे, श्रेयस अय्यर (कप्तान), सूर्यकुमार यादव, हार्दिक तमोरे (विकेटकीपर), शिवम दुबे, सूर्यांश शेडगे, अथर्व अंकोलेकर, शार्दुल ठाकुर, एम जुनेद खान, तनुष कोटियन

वेस्टइंडीज-बांग्लादेश

जेकर अली के रन आउट पर मचा बवाल, पवेलियन से वापस बुलाया

ढाका(एजेंसी)। वेस्टइंडीज के खिलाफ तीसरे टी20 मैच के दौरान रन आउट हुए बांग्लादेश के बल्लेबाज जेकर अली को अंपायर ने ड्रेसिंग रूम से वापस बुला लिया। उक्त घटनाक्रम बांग्लादेश की पारी के 15वें ओवर में हुआ जब जेकर और शमीम हुसैन एक रन लेने का प्रयास कर रहे थे। ओवर की तीसरी गेंद को अली ने स्क्वायर लेग की ओर मारा था और सिंगल पूरा करने के बाद वह दूसरे रन के लिए दौड़ पड़े। वहीं, हुसैन ने उन्हें वापस जाने का बोल दिया। अली जोकि आधी पिच तक आ चुके थे ने दौड़ जारी रखी और क्रीज लांघ गए। अंपायरों द्वारा रन आऊट देने पर अली ड्रेसिंग रूम की ओर बढ़ गए। इसी बीच रिप्ले से पता चला कि अली क्रीज पार कर चुके थे जबकि हुसैन का बल्ला हवा में ही था।

महान रेसलर रे मिस्टीरियो सीनियर का निधन, 30 साल की थी रैसलिंग

मेक्सिको (एजेंसी)। प्रसिद्ध मैक्सिकन पहलवान रे मिस्टीरियो सीनियर का 66 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। बताया जा रहा है कि पहलवान का बीते 20 दिसंबर को ही निधन हो गया था लेकिन इसकी पुष्टि परिवार ने अब की है। मिस्टरियो सीनियर ने मेक्सिको में लुचा लिब्रे स्टाइल में प्रसिद्धि हासिल की थी। वर्ल्ड रेसलिंग एसोसिएशन और लुचा लिब्रे एएए वर्ल्डवाइड जैसे प्रमुख संगठनों के साथ उन्होंने कई चैंपियनशिप खिताब जीते थे। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया, जिसमें 1990 में विश्व चैम्पियनशिप कुश्ती के स्टारकेड जैसे आयोजन भी शामिल थे। अपनी ऊंची उड़ान शैली और कुश्ती में योगदान के लिए जाने जाने वाले मिस्टीरियो ने दुनिया भर में अनगिनत प्रशंसकों और एथलीटों को प्रेरित किया।

मिस्टरियो जिसका असली नाम मिगुएल एंजेल लोपेज डायस था, की मौत का खुलासा लुचा लिब्रे एएए ने एक्स अकाऊंट पर डाली एक पोस्ट से हुआ। उन्होंने उनके परिवार के लिए प्रार्थनाएं और अपनी गहरी संवेदनाएं भेजीं। पोस्ट में लिखा है- हमें मिगुएल एंजेल लोपेज डायस की संवेदनशील मौत पर अफसोस है, जिन्हें रे मिस्टीरियो सीनियर के नाम से जाना जाता है। हम उनके प्रियजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं और उनकी शाश्वत शांति के लिए स्वर्ग से प्रार्थना करते हैं।

बॉक्सिंग डे टेस्ट : नेट सेशन में भारतीय गेंदबाजों ने फेंकी आग उगलती गेंदें

मेलबर्न (एजेंसी)। बॉक्सिंग डे टेस्ट नजदीक आते ही भारतीय गेंदबाज नेट सेशन में सक्रिय हो गए हैं। टेस्ट सीरीज फिलहाल 1-1 की बराबरी पर चल रही है। ऐसे में चौथे टेस्ट में जीतने वाली टीम विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल मे आगे बढ़ सकती है। ऐसे में टीम इंडिया के गेंदबाज मौका भुनाने के लिए कोई कसर छोड़ना नहीं चाहते। शनिवार को टीम इंडिया की एमसीजी में प्रैक्टिस करते की वीडियो सामने आई जिसमें जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज और आकाशदीप आग

उगलती गेंदें फेंकते नजर आए। बीसीसीआई ने वीडियो शेयर करते हुए लिखा- कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं है। पर्दे के पीछे का अथक प्रयास मैदान पर सफलता में तब्दील होता है। जैसे ही हम बॉक्सिंग डे टेस्ट के लिए तैयार हो रहे हैं, भारतीय गेंदबाज हर बॉक्स पर टिक कर रहे हैं। मुकाबले में कोहली की भूमिका भी प्रमुख होने जा रही है। इस पर पूर्व कोच संजय बांगड़ ने कहा कि कोहली को अपने फ्रंट पैड के करीब गेंदों को खेलने पर ध्यान देने की जरूरत है, एक ऐसा तरीका जो उन्हें लय और प्रवाह हासिल करने में मदद कर सकता है। उन्होंने कहा कि जितनी संभव हो उतनी गेंदें अपने फ्रंट पैड के करीब खेलें। ऐसे में रन बनेंगे। उन्होंने कहा कि इस हाई-स्टेक मुकाबले में विराट की भूमिका अंतर पैदा करने वाली हो सकती है। उन्होंने एमसीजी में पहले भी ऐसा किया है और ऐसा कोई कारण नहीं है कि वह दोबारा ऐसा नहीं कर सकें।

वहीं, ऑलराऊंडर जडेजा ने भी भारतीय टॉप क्रम से ज्यादा से ज्यादा रन बनाने की अपील की है। उन्होंने एक वीडियो में कहा कि भारत के बाहर खेलने पर शीर्षक्रम के रन काफी महत्वपूर्ण है खासकर आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका में। जब शीर्षक्रम रन नहीं बनाता है तो निचले क्रम पर दबाव बन जाता है। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि इस टेस्ट में शीर्षक्रम और मध्यक्रम अच्छे रन बनाएगा। हमें शीर्षक्रम से अच्छे प्रदर्शन की जरूरत है। अगर बल्लेबाजों में सभी योगदान देंगे तो टीम का प्रदर्शन बेहतर होगा। ब्रिसबेन में केएल राहुल (84) को छोड़कर भारत के शीर्षक्रम के बल्लेबाज कुछ खास नहीं कर सके थे।

चौथा टेस्ट – 26-30 दिसंबर, मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड, मेलबर्न (भारत में सुबह 5:00)

पांचवां टेस्ट – 3-7 जनवरी (2025), सिडनी क्रिकेट ग्राउंड, सिडनी (भारत में सुबह 5:00)

संक्षिप्त समाचार

मणिपुरः सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर कांग्रेस नेता के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

इंफाल, एजेंसी। मणिपुर में कांग्रेस के नेता लमतिनथांग हाओकिप और एक अन्य व्यक्ति के खिलाफ समुदायों के बीच नफरत फैलाने के इरादे से सोशल मीडिया पर पोस्ट करने के आरोप में दो अलग-अलग मामले दर्ज किए गए हैं। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भाजपा के प्रदेश महासचिव के. सरतकुमार सिंह द्वारा इंफाल थाने में दो लिखित शिकायतों के बाद प्राथमिकी दर्ज की गई। सोशल मीडिया पर पोस्ट कुकी समुदाय के वार्षिक फसल उत्सव 'चवांग कुट' से संबंधित थे। अपनी शिकायत में सिंह ने कहा, ''लमतिनथांग हाओकिप का बयान सीधे तौर पर राज्य में रहने वाले विभिन्न समुदायों, खासकर मेइती और कुकी जो समूहों को भड़काने वाला है। यह बयान दुश्मनी, घृणा या दुर्भावना की भावनाएं पैदा करता है। पुलिस ने दोनों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। हाओकिप ने प्राथमिकी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए दावा किया कि यह कदम राज्य में जातीय हिंसा को रोकने में भाजपा की ''विफलता'' से ध्यान हटाने की एक चाल है। हाओकिप ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''अगर आपमें हिम्मत है, तो दूसरों पर उंगली उठाने से पहले हालात ठीक करें।

चंडीगढ़ में विवाह समारोह में शामिल हुए राहुल गांधी

चंडीगढ़, एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी शुक्रवार को यहां एक वरिष्ठ अधिवक्ता की बेटी की शादी में शामिल हुए। गांधी शुक्रवार की दोपहर चंडीगढ़ पहुंचे और पार्टी की चंडीगढ़ इकाई के अध्यक्ष हरमोहिंदर सिंह लक्की ने उनकी अगवानी की। लक्की के साथ, लोकसभा में विपक्ष के नेता बाद में शहर के बाहरी इलाके में स्थित विवाह स्थल पर पहुंचे। लक्की ने बाद में 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि गांधी चंडीगढ़ के बाहरी इलाके में पंजाब के मोहाली जिले के एक रिसॉर्ट में वरिष्ठ अधिवक्ता आर एस चीमा की बेटी की शादी में शामिल होने आए थे। उन्होंने कहा कि पंजाब के पूर्व महाधिवक्ता आर एस चीमा ने राहुल गांधी का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि चीमा की बेटी की शादी थी और गांधी उसमें शामिल होने यहां आए थे। उन्होंने कहा कि शादी में शामिल होने के बाद कांग्रेस नेता दिल्ली लौट गए। लक्की ने बताया कि हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा और पंजाब कांग्रेस के वरिष्ठ नेता प्रताप सिंह बाजवा भी इस समारोह में मौजूद थे।

3 दिनों तक आंबेडकर से माफी मांगें; गुजरात के वकील ने किया अमित शाह का विरोध

अहमदाबाद, एजेंसी। केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह के डॉ. भीमराव आंबेडकर को लेकर दिए गए बयान का असर उनके गृह राज्य गुजरात में भी देखने को मिल रहा है। गुजरात बार काउंसिल (बीसीजी) के अहमदाबाद से एक सदस्य परेश वाघेला ने 30 दिसंबर को बीसीजी द्वारा आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम का बहिष्कार करने का ऐलान किया है। इस कार्यक्रम में अमित शाह को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। वाघेला ने कहा कि यदि अमित शाह अपनी कथित अपमानजनक टिप्पणियों के लिए आंबेडकर से माफी नहीं मांगते तो वह कार्यक्रम का हिस्सा नहीं बनेंगे। उन्होंने कहा, आपने उस व्यक्ति का अपमान किया है जिनके नेतृत्व में संविधान तैयार हुआ था। आपको तीन दिनों तक माफी मांगनी होगी। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो मैं उस कार्यक्रम में क्यों रहूं जिसमें आप मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हो रहे हैं आपको बता दें कि गुजरात बार काउंसिल ने 30 दिसंबर को विज्ञान भवन, साइंस सिटी अहमदाबाद में नए वकीलों के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया है। इस कार्यक्रम में 6,000 नए वकील शपथ लेंगे। वाघेला ने कहा, मैंने यह निर्णय एक दलित और आंबेडकरवादी के रूप में लिया है। इसका कांग्रेस से कोई संबंध नहीं है। मेरे जज्बातों को ठेस पहुंची है, इसलिए मैंने यह फैसला लिया है। इस बीच बीसीजी के अध्यक्ष जेजे पटेल ने वाघेला पर आरोप लगाया कि वह राजनीति कर रहे हैं। उन्होंने कहा, वाघेला कांग्रेस के समर्थक हैं। वह कांग्रेस के कानूनी प्रकोष्ठ के एक पदाधिकारी हैं। अगर वह राजनीतिक विरोध करना चाहते हैं, तो यह उनका अधिकार है, लेकिन इसे बीसीजी के मंच से नहीं किया जाना चाहिए। पटेल ने यह भी कहा कि वाघेला बीसीजी की सभी बोर्ड बैठकों में उपस्थित थे, जहां यह निर्णय लिया गया था।

आंबेडकर पर अमित शाह के बयान के खिलाफ देश भर में आंदोलन करेगी बसपा: मायावती

लखनउ, एजेंसी। गृह मंत्री अमित शाह द्वारा डॉ. भीमराव आंबेडकर पर संसद में दिए गए बयान को लेकर अब बसपा की देश भर में आंदोलन की तैयारी है। पार्टी सुप्रीमो और यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने गृह मंत्री से अपना बयान वापस लेने और पश्चाताप करने की मांग करते हुए कहा किकयह मांग पूरी न होने पर अब पार्टी ने 24 दिसम्बर को देशव्यापी आंदोलन करने का फैसला लिया है। इस दिन देश के सभी जिला मुख्यालयों पर पूर्णतः शांतिपूर्ण धरना-प्रदर्शन किया जाएगा।

सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर बसपा सुप्रीमो मायावती ने लिखा देश के दलित, वंचित व अन्य उपेक्षितों के आत्म-सम्मान व मानवीय हकूक के लिए अति-मानवतावादी व कल्याणकारी संविधान के रूप में असली ग्रंथ के रचयिता बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर भगवान की तरह परमपूजनीय हैं। उनका श्री अमित शाह द्वारा किया गया अनादर लोगों के दिलों को आहत पहुँचाता है। उन्होंने आगे

लिखा- ऐसे महापुरुष को लेकर संसद में इनके द्वारा कहे गए शब्दों से पूरे देश में सर्वसमाज के लोग काफी उद्वेलित, आक्रोशित व आन्दोलित हैं। अम्बेडकरवादी बीएसपी ने इस क्रम में उनसे बयान वापस लेने व पश्चाताप करने की माँग की है, जिसपर अभी तक भी अमल नहीं किया जा रहा है।बसपा प्रमुख मायावती ने आगे लिखा, ऐसे में माँग न पूरी होने पर फिर पूरे देश में आवाज उठाने की बात बीएसपी द्वारा की गई। इसीलिए अब पार्टी ने अपनी इस माँग के समर्थन में 24 दिसम्बर 2024 को देशव्यापी आन्दोलन करने का फैसला लिया है। उस दिन देश के सभी जिला मुख्यालयों पर पूर्णतः शान्तिपूर्ण धरना-प्रदर्शन किया जाएगा।

बसपा को बताया दलितों के लिए समर्पितः बसपा सुप्रीमो ने लिखा कि दलित/बहुजनों को अपने पैरों पर खड़े होकर आत्म-सम्मान के साथ जीने के लिए आजीवन कड़ा संघर्ष और आरक्षण सहित उनको अनेकों कानूनी हक दिलाने वाले उनके सच्चे मसीहा बाबा साहब के नहीं रहने पर उनके अनुयाइयों का हित व कल्याण ही उनका सबसे बड़ा सम्मान है, जिसके लिए बीएसपी समर्पित है।

कांग्रेस पर भी साधा निशानाः मायावती ने आगे लिखा, अतः कांग्रेस, भाजपा आदि पार्टियाँ अगर बाबा साहेब का दिल से आदर-सम्मान नहीं कर सकती हैं तो उनका अनादर भी न करें। बाबा साहेब के कारण एससी, एसटी एवं ओबीसी वर्गों को जिस दिन संविधान में कानूनी अधिकार मिले उसी दिन उन्हें सात जन्मों का स्वर्ग भी मिल गया है।

प्राइवेट पार्टी के नाम पर चल रहा था वाइफ स्वैपिंग का खेल, पुलिस ने 2 को किया गिरफ्तार

बेंगलुरु, एजेंसी। कर्नाटक में वाइफ स्वैपिंग और गर्लफ्रेंड स्वैपिंग जैसे गंदे खेल का पर्दाफाश हुआ है। सेंट्रल क्राइम ब्रांच ने हरीश और हेमंत नाम के दो लोगों को गिरफ्तार किया है। दोनों प्राइवेट पार्टी के नाम पर इस घिनौने खेल का रैकेट चला रहे था। आपको बता दें कि स्विंगर्स नाम के इस ऑपरेशन में कथित तौर पर कपल को सेक्स के लिए पार्टनर बदलने को लुभाया जाता था। महिलाओं को जबरदस्ती और ब्लैकमेल करके उनका शोषण किया जाता था।

यह रैकेट तब सामने आया जब एक महिला ने सीसीबी में शिकायत दर्ज कराई। उसने आरोप लगाया गया कि उसे इसमें भाग लेने के लिए मजबूर किया गया था। पीड़िता ने खुलासा किया कि उसे आरोपियों और उनके परिचितों के साथ अंतरंग संबंध बनाने के लिए मजबूर किया गया था। जब उसने इसका विरोध किया तो उसकी प्राइवेट तस्वीरें जारी करने की धमकी दी गई। पुलिस सूत्रों के अनुसार, महिला एक आरोपी के

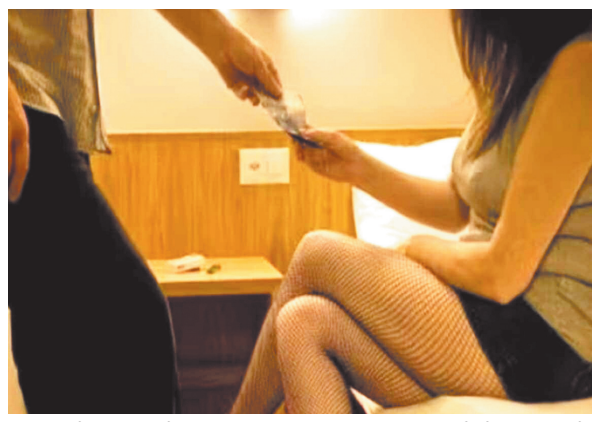

साथ रिलेशनशिप में थी। उसका महिलाओं का शोषण करने का इतिहास रहा है।

रिपोर्ट के मुताबिक, सूत्रों ने एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के हवाले से बताया, आरोपी ने पीड़िता के भरोसे का दुरुपयोग किया और उसे दूसरों के साथ अंतरंग संबंध बनाने के लिए मजबूर किया। जब उसने इनकार कर दिया तो उन्होंने तस्वीरों का इस्तेमाल करके ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। वे आदतन अपराधी हैं और अतीत में भी इसी तरह की गतिविधियों में शामिल रहे हैं।

पुलिस ने खुलासा किया कि आरोपियों ने बेंगलुरु के बाहरी इलाकों में निजी पार्टियों का आयोजन करने के लिए व्हाट्सएप ग्रुप का इस्तेमाल किया। इसका प्रचार सामाजिक कार्यक्रम के तौर पर किया। जांच के दौरान महिलाओं की कई तस्वीरें और वीडियो पाए गए, जिनका कथित तौर पर आरोपियों ने पीड़ितों को ब्लैकमेल करने के लिए इस्तेमाल किया।

डेढ़ मिनट में बाइक छूमंतर, ऑन डिमांड करते चोरी; नोएडा पुलिस ने 4 शातिर चोरों को यूं दबोचा

नोएडा एजेंसी। नोएडा सेक्टर-126 थाने की पुलिस ने रेकी करने के बाद महज 90 सेकेंड यानि डेढ़ मिनट के भीतर बाइक चुराने वाले गिरोह का पर्दाफाश कर सरगना समेत चार आरोपियों को शुक्रवार को गिरफ्तार किया। आरोपियों की निशानदेही पर अलग-अलग स्थानों से नौ बाइक, तमंचा और कारतूस बरामद हुआ है।

डीसीपी रामबदन सिंह ने बताया कि शहर के अलग-अलग हिस्सों से दोपहिया वाहन चोरी होने की शिकायतें लगातार मिल रही थीं। इसके चलते सेक्टर-126 थाने की पुलिस ने शुक्रवार को जांच अभियान चलाया और एक ऐसे गिरोह का पकड़ लिया, जो वाहन चोरी की वारदात करने की फिराक में घूम रहा था। गिरफ्त में आए आरोपियों की पहचान रायपुर निवासी संजय कुमार, कार्तिक और सुमित व छलेरा निवासी आदित्य के रूप

में हुई है। संजय गिरोह का सरगना है। संजय की आयु 28 वर्ष है, जबकि अन्य तीनों बदमाशों की आयु 19 साल है। संजय ने पहली वाहन चोरी साल 2016 में की थी। आरोपी महज पांचवीं से आठवीं पास हैं। पूछताछ में आरोपियों ने पुलिस को अपने कई अन्य साथियों के नाम भी बताए। अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए गठित टीम संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही है। पूछताछ में पता चला कि गिरफ्त में आए चारों बदमाश अंतरराज्यीय वाहन चोर गिरोह के सक्रिय सदस्य हैं। गिरोह का सरगना बीते आठ सालों से वाहन चोरी की वारदात कर रहा है। बरामद नौ बाइक में से तीन बाइक का पता चल गया है कि वे कहां से चुराई गई थीं। पूछताछ में आरोपियों ने स्वीकार किया वे बीते कुछ महीने में 20 से अधिक वाहनों की चोरी कर चुके हैं। चोरी की वारदात के लिए गिरोह के सदस्यों का काम बंटा हुआ था। गिरोह का सरगना संजय पहले किसी अन्य गिरोह से जुड़ा था और वाहनों की चोरी करता था। कुछ समय पहले वह गिरोह से अलग हुआ और अपना खुद का गिरोह बना लिया। उसने गिरोह में ऐसे युवकों को जोड़ा, जो बेरोजगार हों और नौकरी की तलाश कर रहे हों। युवकों से दोस्ती करने के बाद संजय उनसे वाहनों की चोरी कराने लगता था। आदित्य, कार्तिक और सुमित को संजय ने कुछ महीने पहले ही गिरोह से जोड़ा था। एसीपी प्रवीण कुमार सिंह ने बताया कि आरोपी ऑन डिमांड वाहनों की चोरी करते थे। अगर कोई व्यक्ति कह देता था कि इस कंपनी और कलर की बाइक उन्हें इतने दाम में चाहिए तो आरोपी 15 दिन में उसे उसी प्रकार की बाइक चोरी कर उपलब्ध करा देते थे।

प्रियंका गांधी ने छिपाई अपनी संपत्ति, हाई कोर्ट पहुंचा वायनाड उप चुनाव का मामला, निर्वाचन को चुनौती

कोच्चि, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की नेता नव्या हरिदास ने केरल उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा के वायनाड लोकसभा सीट से निर्वाचन को चुनौती दी है। हरिदास ने शुक्रवार को दायर की गयी अपनी याचिका में दावा किया है कि प्रियंका ने अपने चुनावी हलफनामे में अपनी और अपने परिवार की संपत्ति का सही खुलासा नहीं किया है और गलत जानकारी दी है। भाजपा नेता ने कहा कि यह आदर्श आचार संहिता के खिलाफ और भ्रष्ट आचरण के समान है। पिछले

महीने केरल की वायनाड लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में नव्या हरिदास को कांग्रेस उम्मीदवार प्रियंका गांधी वाद्रा ने 5 लाख से अधिक मतों के अंतर से हराया था। हरिदास ने याचिका दायर होने की पुष्टि करते हुए कहा कि मामले की सुनवाई जनवरी 2025 में होने की संभावना है, क्योंकि हाई कोर्ट में 23 दिसंबर से 5 जनवरी तक अवकाश रहेगा। अपने चुनावी हलफनामे में प्रियंका गांधी ने बताया था कि उनके पास 4.24 करोड़ रुपये की चल संपत्ति है और 13.89 करोड़ रुपये की अचल संपत्ति है, जबकि उनके पति राबर्ट वाड्रा के पास 37.91 करोड़ रुपये की चल संपत्ति है। हलफनामे के मुताबिक, प्रियंका गांधी पर 15 लाख 75 हजार रुपये का कर्ज भी है, जबकि राबर्ट वाड्रा पर देनदारी 10,03,30,374 रुपये की है। प्रियंका गांधी ने अपने चुनावी हलफनामे में यह भी बताया है कि उनके पास 59.83 किलो के चांदी से बने सामान हैं, जिसकी कुल कीमत 29.55 लाख रुपये है इसके अलावा उनके पास 4.41 किलो की ज्वैलरी भी है, जिसमें 2.5 किलो सोना है। इसकी कीमत 1 करोड़ 15 लाख 79 हजार रुपये है। उनके पास 8 लाख रुपये की एक होंडा सीआरवी कार भी है। जमीन की बात की जाय तो उन्होंने हलफनामे में कहा है कि उनके पास 2 करोड़ 10 लाख रुपये से ज्यादा कीमत की कृषि भूमि है। इसके अलावा 48,997 वर्ग फीट क्षेत्र में बना एक घर है, जो शिमला में है।

यूट्यूब से एडिटिंग, फर्जी वीजा और टिकट प्रिंट करके ठगी; गाजियाबाद में चौथी पास ने विदेशी सपनों से की मोटी कमाई

गाजियाबाद, एजेंसी। खाड़ी देशों में नौकरी दिलाने के नाम पर 50 से अधिक लोगों से ठगी करने वाले दो जालसाजों को कौशांबी पुलिस ने शुक्रवार को गिरफ्तार किया है। मुख्य आरोपी महज चौथी पास है। दोनों आरोपी अजरबैजान, कुबैत, दुबई और मालदीव भेजने का झांसा देकर लाखों रुपये ठग लेते थे। लोगों से पासपोर्ट और उनके दस्तावेज भी ले लेते थे। दोनों से 22 पासपोर्ट के अलावा दो फर्जी प्रमाण पत्र, लैपटॉप, चार मोबाइल फोन और स्कूटी बरामद हुई है। एसीपी इंदिरापुरम स्वतंत्र कुमार सिंह ने बताया कि हाल ही में वैशाली सेक्ट-छह की एक सोसाइटी निवासी किशन कुमार ने शिकायत की थी कि अजरबैजान में नौकरी लगवाने के नाम पर दो लोगों ने उससे लगभग तीन लाख रुपये ठग लिए। शिकायत मिलने के बाद मुकदमा दर्ज कर छानबीन की गई। मामला सही पाए जाने पर पुलिस ने मनीष कुमार गोंड उर्फ गणेश पुत्र अलगू गोंड निवासी बदरपुर दिल्ली मूल निवासी कुशीनगर उत्तर प्रदेश और शाहरुख खान पुत्र मोहम्मद इस्तियाक निवासी इनायतनगर अयोध्या हाल निवासी क्लाउड नाइन सेक्टर एक वैशाली को गिरफ्तार किया है।

पूजा स्थलों पर आतंकवादी खतरों से निपटने के लिए इंडोनेशिया तैयार

जकार्ता, एजेंसी। इंडोनेशियाई पुलिस क्रिसमस और नए साल की छुट्टियों के दौरान संभावित आतंकवादी खतरों से पूजा स्थलों की सुरक्षा के लिए अभियान शुरू करेगी। एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। जकार्ता मेट्रोपोलिटन पुलिस के प्रमुख महानिरीक्षक कार्योतो ने राष्ट्रीय स्मारक पार्क परिसर में ऑपरेशन की तैयारी के लिए आयोजित समारोह के दौरान बताया कि कैंडल ऑपरेशन का आदेश इंडोनेशिया के राष्ट्रीय पुलिस प्रमुख जनरल लिस्टियो सिगित प्रभावो ने दिया था। उन्होंने कहा कि कैंडल ऑपरेशन का उद्देश्य ईसाई धर्म के अनुयायियों द्वारा पूजा सेवा के प्रदर्शन के दौरान आतंकवादी गतिविधियों को रोकना है। कार्योतो के अनुसार, यह ऑपरेशन 22 दिसंबर को शुरू होगा और 2 जनवरी को समाप्त होगा। समाचार एजेंसी शि?ह्आ की रिपोर्ट के अनुसार, इन कदमों में से एक पूजा स्थल पर आने वाले प्रत्येक धार्मिक अनुयायी की एक्स-रे से जांच करना था, ताकि पूजा के लिए कमरे में खतरनाक वस्तुओं के प्रवेश को रोका जा सके। हाल के वर्षों में, इंडोनेशिया ने वर्ष के अंत में कई आतंकवादी हमलों का सामना किया, जिसमें चर्चों में आत्मघाती बम विस्फोट भी शामिल है, जिसमें दर्जनों लोग हताहत हुए। देश क्रिसमस और नए साल की छुट्टियों के दौरान यात्रियों की अधिक संख्या में आने का सामना करने की तैयारी कर रहा है। लाखों लोगों के दक्षिण-पूर्व एशियाई द्वीपसमूह में सड़कों और शहरों में जाम लगाने की उम्मीद है। देश के परिवहन मंत्रालय द्वारा हाल ही में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, लगभग 11 करोड़ लोग, या देश की आबादी का लगभग 43 प्रतिशत, क्रिसमस और नए साल की छुट्टियों के दौरान यात्रा करने की योजना बना रहे हैं।

यूक्रेन के अमेरिकी मिसाइल इस्तेमाल से भड़का रूस ! पुतिन ने कीव पर बैलिस्टिक मिसाइल हमले से हिला दिए 6 देश

मास्को एजेंसी। रूस और यूक्रेन के बीच तनाव एक बार फिर बढ़ गया है। शुक्रवार सुबह करीब 7 बजे रूस ने यूक्रेन की राजधानी कीव पर बैलिस्टिक मिसाइलों से हमला किया। इस हमले में एक व्यक्ति की मौत हो गई और 12 लोग घायल हो गए। हमले से कई दूतावास और इमारतें बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गईं। यूक्रेन द्वारा अमेरिकी मिसाइल का इस्तेमाल करने के बाद रूस ने इस हमले को अंजाम दिया। रूस ने दावा किया कि यह हमला यूक्रेन के सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने के लिए किया गया, ताकि यूक्रेन के हालिया हमलों का जवाब दिया जा सके।

रूस ने कीव पर 5 बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं और यूक्रेनी वायु रक्षा प्रणाली ने इन सभी मिसाइलों को नष्ट कर दिया। यूक्रेनी वायु सेना के मुताबिक, 40 ड्रोन भी मार गिराए गए, जबकि 20 ड्रोन अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सके। हालांकि, मिसाइल और ड्रोन के मलबे से कई लोग घायल हुए। रूस ने हमले में इस्कंदर मिसाइलों का भी इस्तेमाल किया। इस हमले से कीव में 630 आवासीय भवन, 16 चिकित्सा केंद्र और 30 स्कूल व किंडरगार्टन में हीटिंग सिस्टम ठप्प हो गए। मलबे से कई क्षेत्रों में इंफ्रास्ट्रक्चर को नुकसान पहुंचा, जिसमें एक कार्यालय, गैस पाइप और सड़कें शामिल हैं। 5 कारें जलकर खाक हो गईं, और एक निर्माणाधीन इमारत में आग लग गई।

यूक्रेनी विदेश मंत्रालय ने बताया कि इस हमले में अल्बानिया, अर्जेंटीना, फिलीस्तीन, उत्तर मकेडोनिया, पुर्तगाल और मोंटेनेग्रो जैसे कई देशों के दूतावासों को नुकसान पहुंचा। दूतावासों की खिड़कियां और दरवाजे टूट गए। पुर्तगाल ने रूस के चार्जड को विरोध दर्ज कराने के लिए बुलाया। रूसी रक्षा मंत्रालय ने इस हमले की जिम्मेदारी लेते हुए कहा कि यह यूक्रेन के रोस्तोव क्षेत्र में किए गए मिसाइल हमले का जवाब था। रूस ने कहा कि यह हमला पश्चिमी समर्थकों द्वारा यूक्रेन को दी जा रही मदद का भी प्रतिकार है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने इस हमले की कड़ी निंदा की। उन्होंने रूस पर सख्त प्रतिबंध लगाने की मांग की औअंतरराष्ट्रीय समुदाय को धन्यवाद दिया।

अमेरिकी संसद के निचले सदन में फंडिंग बिल पास, 23 लाख कर्मचारियों की सैलरी इस पर निर्भर

अब वोटिंग के लिए सीनेट में जाएगा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी संसद के निचले सदन हाउस ऑफ रेप्रेसेंटेटिव से शुक्रवार को एक अस्थायी फंडिंग बिल पारित हो गया है। इससे आखिरी वक्त में गवर्नमेंट शटडाउन टल गया है। अगर यह शटडाउन लागू हो जाता तो सरकार के पास कर्मचारियों को सैलरी देने के पैसे नहीं बचते। हाउस ऑफ रेप्रेसेंटेटिव में रिपब्लिकन पार्टी का कंट्रोल है, लेकिन आंतरिक मतभेद की वजह से उन्हें शटडाउन से बचने के लिए डेमोक्रेट्स पर निर्भर रहना पड़ा। रिपब्लिकन पार्टी के 170 सांसदों और डेमोक्रेटिक पार्टी के 196 सांसदों ने बिल के पक्ष में वोट दिया। जबकि 34 रिपब्लिकन सांसदों ने इस बिल के खिलाफ वोट दिया। इस तरह 34 के मुकाबले यह बिल 366 वोट से पारित हो गया। अब यह बिल वोटिंग के लिए अमेरिकी संसद के ऊपरी सदन सीनेट में जाएगा। जहां सांसदों के पास बिल पारित करने और संघीय एजेंसियों को चालू रखने के लिए आधी रात तक का वक्त है। अगर यह बिल सीनेट में पास नहीं हो पाता है तो शटडाउन शुरू हो जाएगा। अगर अमेरिका में सरकारी शटडाउन लगता है तो 8.75 लाख कर्मचारियों को छुट्टी दी जा सकती है, जबकि इमरजेंसी सेवा में लगे 14 लाख कर्मचारियों को बिना वेतन के काम करना पड़ सकता है। पिछली बार 2018 में जब 35 दिनों तक शटडाउन रहा था तब 20 लाख से ज्यादा लोग इससे प्रभावित हुए थे।

ट्रम्प की पार्टी में भी बिल को लेकर विरोध

इससे पहले अमेरिका के निचले सदन में गुरुवार रात को शटडाउन रोकने के मकदस से एक बिल लाया गया था। इस बिल को अमेरिका के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और उनके सहयोगी इलॉन मस्क के समर्थन से रिपब्लिकन पार्टी ने पेश किया था। हालांकि, विपक्षी डेमोक्रेट्स ने विरोध कर इसे गिरा दिया। बिल को पास होने के लिए 435 सांसदों वाले हाउस से दो तिहाई यानी 290 वोटों की जरूरत थी। लेकिन समर्थन में 174 सांसदों ने ही वोट किया। जबकि इसके विरोध में 235 वोट पड़े। बिल का विरोध करने वालों में ट्रम्प की पार्टी के 38 सांसद भी शामिल रहे। इससे पहले हाउस के स्पीकर माइक जॉनसन ने डेमोक्रेटिक पार्टी को साथ लेकर एक बिल तैयार किया था। हालांकि डोनाल्ड ट्रम्प और मस्क ने इस बिल पर कड़ी आपत्ति जताई थी और इसे पेश ही नहीं होने दिया था।

अमेरिका में सरकार के कर्ज की एक सीमा तय होती है। वह देश चलाने के लिए उससे ज्यादा उधार नहीं ले सकती है। बीते सालों में सरकार को कैशलेस होने से बचाने के लिए ये सीमा कई बार बढ़ी है। इसके लिए एक बिल अमेरिकी संसद हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव में लाया जाता है। मौजूदा बिल को ट्रम्प की ओर से लाया गया था, ताकि राष्ट्रपति बनने पर वे आसानी से देश चला सकें। इसे ही विपक्ष ने खारिज किया है। इसका सीधा मतलब है कि अमेरिका को खर्च के लिए पैसा नहीं मिलेगा।

एक बार बिल खारिज होने के बाद इसे दोबारा पास कराने के लिए आज यानी शुक्रवार तक का आखिरी समय है। इसके बाद भी बिल पास नहीं हुआ तो अमेरिकी सरकार के पास सरकारी खर्च के लिए पैसे नहीं बचेंगे। ऐसी स्थिति में अमेरिका में शटडाउन लग सकता है। अगर ऐसा होता है तो इससे अमेरिका की अर्थव्यवस्था पर खराब असर पड़ेगा और आने वाली ट्रम्प सरकार पर दबाव बढ़ेगा। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका का बजट घाटा बहुत ज्यादा है। इसका मतलब ये हुआ कि सरकार का खर्च उसकी कमाई से कहीं ज्यादा है। इसके चलते उसे अपने कामकाज के लिए कर्ज लेना पड़ता है। हालांकि अमेरिकी सरकार जितना चाहे उतना कर्ज नहीं ले सकती है। इसके लिए एक कर्ज सीमा तय होती है। अमेरिकी सरकार अपने खर्चे का भुगतान इसी सीमा के भीतर कर पाती है। अमेरिका में कर्ज लेने की प्रक्रिया 1939 में शुरू हुई थी। लेकिन तब से अब तक कर्ज लेने की सीमा को 103 बार बढ़ाया जा चुका है। आखिरी बार मई 2023 में अमेरिकी सरकार की कर्ज लेने की सीमा 31.4 ट्रिलियन डॉलर यानी कि 26 लाख हजार करोड़ रुपए तय की गई थी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129